दादी जी ने सभी को धैर्य, आशा और उमंग का पाठ पढ़ाया

– ब्रह्माकुमारी जानकी
मुख्य प्रशासिका, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय

दादी प्रकाशमणि को मैं बचपन से जानती हूँ। सन् 1936 में, सिंध-हैदराबाद में जब ओम् मण्डली की शुरूआत हुई तो एक स्नेहमयी, लगनशील, आज्ञाकारी कुमारी के रूप में उनका पदार्पण हुआ। आते ही उनके हृदय में ईश्वर तथा ईश्वरीय परिवार के प्रति भरपूर प्यार देखा। उनका मन-वचन-कर्म हमेशा विशेषता संपन्न रहा, कभी साधारण चाल-चलन की तो झलक भी नहीं आई। प्यारे बाबा ने भी उनको आते ही टीचर का पदभार संभलवा दिया। छोटे बच्चों की तो वे दिव्य शिक्षिका थीं ही, कुँज भवन में बड़ों के बीच भी टीचर की भूमिका बहुत अच्छी निभाते देखा। बारी-बारी से सबकी भोजन बनाने की सेवा आती थी तो अपनी बारी में वे भोजन भी बहुत अच्छा बनाती थी। जीवन के हर कर्म में चाहे स्थूल हो या सूक्ष्म, उनको सदा कुशल ही देखा। बाबा द्वारा बताए गए नियमों के पालन में तो हमारे सामने सैम्पल बनकर रही। वे सरलता और स्नेह की मूर्त बन मम्मा-बाबा तथा सर्व भाई-बहनों पर अपनापन उड़ेलती रही।

जब हम कराची में थे तो प्यारे बाबा उनको ईश्वरीय सेवा के विभिन्न निर्देश देते थे जैसे कि कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी में ईश्वरीय संदेश भेजो, महात्मा गांधी जी को ईश्वरीय संदेश भेजो आदि-आदि। दादी जी बड़ी तत्परता से इन सभी को अमल में लाती थीं। वे बाबा के निर्देश, श्रीमत तथा इशारे को तुरंत पकड़ती थीं और पूरा करके दिखाने में हमारे लिए मार्गदर्शिका की भूमिका निभाती थी।

जब हम आबू में आए तो स्थान, वातावरण, परिस्थितियाँ बदलने के कारण भिन्न-भिन्न बातें परीक्षा के रूप में सामने आईं पर दादी जी को हर परिस्थिति में अचल-अडोल देखा। कभी उनको व्यर्थ संकल्प-बोल में नहीं देखा। सेवा के क्षेत्र में भी, उनका जहाँ-जहाँ कदम पड़ा, वहाँ-वहाँ स्थापना का नया इतिहास रचा गया। दादी जी ने कानपुर, लखनऊ, पटना, मुम्बई आदि अनेक स्थानों पर अनेकानेक आत्माओं को प्यारे बाबा के वर्से का अधिकारी बनाया।

प्यारे बाबा के अव्यक्त होने के बाद, संगठन के किले को मजबूत बनाया। सभी को धैर्य, आशा और उमंग का पाठ पढ़ाया। यज्ञ-परिवार में दिल से दिल मिलाने में और दिलाराम भगवान से दिल का प्यार पाने में प्रेरणाएँ भरीं। बाबा के अव्यक्त होने पर मेरे मन में प्रश्न था कि अब मुरली कौन सुनायेगा? प्यारे बाबा ने कहा, दादी (प्रकाशमणि) मुरली सुनायेंगी और पुरानी मुरलियाँ दोहराई जायेंगी। सचमुच, दादी जी ने ऐसी मुरली सुनाई जो साकार बाबा की भासना हमें मिलती रही। सन् 1974 में दादी और दीदी, दोनों ने मुझे विदेश सेवा के लिए भेजा। प्यारे बाबा की श्रीमत और बड़ों की दुआओं से जर्मनी, अफ्रीका, कनाडा, करेबियन आदि स्थानों पर सेवा का बीज पड़ा। लंदन तो सेवा का प्रमुख केन्द्र था ही। उन दिनों पूरे चार साल मैं मधुबन नहीं आई। हाँ, दादियाँ हमारे पास आती रहीं। सन् 1977 में दादी हमारे पास आई। वहाँ ठण्ड बहुत होती है, मैं अमृतवेला कमरे में ही योग में बैठ गई। दादी ने इशारा दिया, बाबा के कमरे में चलो ना, तब से लेकर मैंने निरंतर ऐसी ही आदत बना ली है। दादी ने ही लंदन में ट्रैफिक कंट्रोल प्रारंभ करने का इशारा दिया। जब दादी विदेश के दौरे पर आती थीं, मुझे यही भासना आती थी कि दादी नहीं, स्वयं बाबा ही आए हैं।

डबल विदेशी भाई-बहनों को देखकर दादी हमेशा ही कहती थीं कि आप पूर्वजन्म में तो भारत में ही थे, इस अंतिम जन्म में, ईश्वरीय सेवार्थ आप इन भिन्न-भिन्न स्थानों पर, भिन्न-भिन्न संस्कृतियों में आ गये हो। दादी की नेचुरल रूहानियत, उनका ईश्वरीय प्रेम और कल्प पहले की स्मृति पक्की कराने की विधि बड़ी प्रभावशाली थी। वे पहली झलक

में ही किसी भी आत्मा में इतना अपनापन भर देती थीं कि दूरी या अनजानेपन का भान मिट जाता था।

यह मेरा महान भाग्य है कि ऐसी महान् दादी ने सदा ही मुझ पर हक रखा। मैंने भी दादी की समीपता का बहुत सुख पाया है। दीदी मनमोहिनी जी ने सन् 1983 में जब देह त्याग किया तो सभी का विचार था कि शायद अब मुझे मधुबन में ही रखेंगे परंतु मीठी दादी ने ही उमंग दिलाकर मुझे विश्व सेवा पर भेजा। मधुबन मुख्यालय की ज़िम्मेवारियाँ निभाते हुए दादी स्वयं भी विश्व सेवा पर जाती रहीं और जहाँ-जहाँ उनके कदम पड़े, वहाँ-वहाँ ईश्वरीय सेवा के नये बीज अंकुरित हुए, सेवा वृद्धि को पाती गई।

जब दादी का स्वास्थ्य ठीक नहीं था तब भी उनका मुस्कराता हुआ चेहरा देख, कर्मातीत स्थिति की प्रेरणा मिलती रही। चेहरे पर जरा भी दु:ख-चिन्ता की लहर नहीं दिखाई। जैसा बाबा हमें बनाना चाहता है, वो सबूत देखा। वे याद में भी लवलीन रहती थीं, बेहद सेवा को भी सामने रखती थीं और सर्व का सहयोग लेने की भी बड़ी सुन्दर युक्ति उनके कर्मों से देखने को मिलती थी। संक्षेप में यही कहूँगी कि बाबा की हर आज्ञा का पालन करते-करते दादी, बाप समान सबकी प्रेरणास्रोत बन गई।

दादी जी साकार बाबा का प्रतिरूप थीं

–दादी हृदयमोहिनी जी, अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका

साकार बाबा इस बात पर बहुत ध्यान देते थे कि हर बच्चा, मुरली (ईश्वरीय महावाक्य) बहुत ध्यान से सुने। यदि मुरली सुनते समय किसी बच्चे को उबासी आ जाती थी तो बाबा तुरन्त कहते थे कि इसको उठाओ, नहीं तो वायुमण्डल पर बुरा प्रभाव पड़ेगा। बाबा मिसाल देते थे कि जैसे सीप पर जल की बूँद गिरती है तो मोती बन जाती है, इसी प्रकार आपकी बुद्धि पर भी ये ज्ञानामृत की बूँदें पड़ रही हैं, एक-एक बूँद ज्ञान-मोती का रूप धारण करती जा रही है। अत: हमारे में इतने मोती बाबा डालते हैं, भरपूर करते हैं मोतियों से, तो हमारा इतना ध्यान होना चाहिए। बाबा के सामने मुरली सुनने बैठे बच्चों में से, यदि किसी ने बाबा की मधुर शिक्षाएँ सुनकर चेहरे द्वारा प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की तो बाबा कहते थे, यह कौन बुद्धू सामने बैठा है? इतना ध्यान बाबा बच्चों पर देते थे। बाबा का प्यार भी भरपूर था तो शिक्षायें भी भरपूर देते थे। मान लो, किसी बच्चे ने कोई ग़लती कर दी तो बाबा उसे व्यक्तिगत रूप से बुलाकर ग़लती नहीं सुनाते थे। मुरली में ही सब सुना देते थे कि महारथी बच्चे भी ऐसे-ऐसे करते हैं, बाबा के पास रिपोर्ट आती है। ग़लती करने वाला तो समझ जाता था कि यह बात मुरली में मेरे लिए आई है। मुरली के बाद, बाबा के कमरे में हम बहनें और भाई जाते थे जिसे चैम्बर नाम से जाना जाता था। बाबा अपनी गद्दी पर विष्णु मुआफिक लेट-से जाते थे और हम सभी बच्चे पास-पास बैठ जाते थे। मान लो, बाबा ने मुरली जिस बच्चे के लिए चलाई, वह भी बाबा के सामने चैम्बर में आ गया तो उसका मन तो अन्दर से खा रहा होता था कि बाबा अभी भी कुछ कह ना दें, पर बाबा कभी नहीं कहते थे। जो कहना होता था, मुरली में ही कह देते थे। यदि, वह हिम्मत करके बाबा के बहुत करीब भी चला जाये तो भी बाबा और ही प्यार करते थे। मुरली के बाद उस बात को कभी नहीं दोहराते थे कि बच्चे, तुमने अमुक ग़लती की है। फिर वह बच्चा भी भूल जाता था। इस प्रकार बाबा बहुत प्यार करते थे, ग़लती करने वाला बेधड़क होकर बाबा के सामने जा सकता था, पर उसको स्वयं ही इतना अहसास हो जाता था कि भविष्य में उस भूल को कभी नहीं दोहराता था। बाबा हँसा-बहला कर उस बात को समाप्त कर देते थे, पर वह बच्चा पूरा बदल जाता था।

दादी जी दिल में किसी की, कोई बात नहीं रखती थीं

ऐसा ही दादी जी का स्वभाव था। यदि किसी छोटी बहन ने दादी जी को सुनाया कि आज मुझे बहुत रोना आया, फीलिंग आई आदि-आदि तो दादी कभी भी उसकी बात बड़ी बहन को सुनाकर उलाहना नहीं देती थीं कि तुमने छोटी बहन के साथ ऐसा-वैसा क्यों किया। हाँ, दादी जी उस छोटी बहन को ऐसा प्यार देती थीं जो उसके मन को पूरा ठीक कर देती थीं। पर बड़ी बहन को बुलाए, फिर कहे, तुमसे छोटी बहन नाराज़ है, क्या करती हो, कभी नहीं। दादी क्लास कराती थीं, सब कायदे-कानून समझाती थीं, पर व्यक्तिगत मिलन में सीधा नहीं कहती थीं कि तुमने ऐसा किया है। इस प्रकार, दादी भी दिल में कुछ नहीं रखती थीं। क्योंकि दिल में कोई भी बात घर कर जाए तो खुशी गुम हो जाती है। बाबा ने कहा है, जीवन भले जाए पर ख़ुशी न जाए।

✪

दादी जी ने बाबा के सर्व गुण और कलाओं को अपने में समा लिया

–दादी रतनमोहिनी जी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका

हम तो दादी जी को शुरू से देखती आई हैं। जब से यज्ञ शुरू हुआ है तब से हम भी हैं और दादी जी भी हैं। थोड़ा-सा ही फरक रहा। यह हैदराबाद की बात है। दादी ओम् निवास में शुरू से ही आई हुई थीं।

शुरू से ही दादी जी का लीडर का पार्ट रहा

ओम् निवास में जो भी छोटी-छोटी कुमारियाँ थीं, जैसे लच्छू बहन, ईशू बहन तथा गुलज़ार दादी भी थीं उनकी संभाल करने की ज़िम्मेदारी बाबा ने दादी जी को ही दी थी। गुलज़ार दादी उस समय 9 साल की थी, बाकी सब बहुत छोटी-छोटी थीं। दादी जी का पार्ट शुरू से ही बाबा के साथ-साथ यज्ञसेवा में सहयोगी बनने का रहा है। बाबा अपनी ज़िम्मेवारियाँ दादी जी को दिया करता था, साथ-साथ उनको सिखाता जाता था। आप समझ सकते हैं कि जब बाबा के साथ-साथ पार्ट बजाया है तो स्वाभाविक ही उनके अन्दर बाप जैसा ही कार्य करने की शक्ति आ गई। कारोबार कैसे चलाना है, किस प्रकार बातचीत करनी है, किस प्रकार संभालना है वो सब कला दादी में आ गईं। जैसे बाबा के अन्दर फीलिंग थी कि यह मेरा ही परिवार है, ये मेरे ही बच्चे हैं, ऐसे दादी के अन्दर भी, देखा जाये तो वही भावना रही। जब भी किसी से मिलती तो उनकी यही भावना होती थी कि यह मेरा ही परिवार है। बाबा का परिवार अर्थात् मेरा परिवार। दादी जी में सबके प्रति अपनापन होने के कारण सभी को भी दादी के प्रति अपनापन आता था, सब समझते थे कि दादी हमारी है।

दादी जी ने बाप समान सबकी पालना की

शुरू से ही कोई भी सेवा हो, बाबा दादी को ही भेजते थे। कहीं से भी निमंत्रण आये, दादी को ही भेजा जाता था। आप सबको पता है कि पहले-पहले जापान से निमंत्रण आया। उसमें भी पहला पार्ट दादी जी का रहा। बाबा समान सबको पालना देना, सबकी बातें समाना, सबके ऊपर ध्यान देना, ये सब दादी जी करती थीं। मधुबन आने वालों के लिए ठीक प्रबन्ध करना, प्रबन्ध को देखना, यह सब दादी ख़ुद करती थीं जैसेकि साकार बाबा स्वयं करते थे। रात को जब सब पार्टी वाले विश्राम करते थे तब बाबा दादी जी को और हमको भेजते थे कि जाओ बच्चे, जाकर देखो, सब ठीक-ठाक आराम से सोये हैं, उनके लिए सब सुविधाएँ हैं? फिर बाबा हमसे पूछता था, क्या समाचार है? उसी प्रकार, दादी जी ने भी बाबा जैसी पालना सबको दी और बाप के गुणों को भी अपने में धारण किया।

दादी जी बाबा समान बड़ी दिल वाली थीं

जैसे बाबा की दिल बड़ी थी, सबको खुलकर देना, खिलाना, पिलाना, ख़ुश करना आदि करते थे ऐसे ही दादी जी की भी सबके प्रति बड़ी दिल थी। किसी को कुछ चाहिए होता तो वो माँगने से पहले ही दे देती थीं। समझती थीं कि यह बाबा का बच्चा है, बाबा के घर सो अपने घर में आया है, उसको हर सुविधा मिलनी चाहिए। समझो, आज

की दुनिया के हिसाब से कोई साहूकार बाबा के घर में आया, वो अपने घर में कैसे रहता होगा, वो सोचकर ज़्यादा से ज़्यादा सुविधा देने का प्रयत्न करती थीं। बाबा कहा करते थे कि अगर आये हुए बच्चों को हम ठीक प्रबन्ध नहीं देंगे तो उनको यहाँ आकर अपना लौकिक घर याद आएगा। इसलिए बच्चों को ऐसा प्रबन्ध देना चाहिए कि उनको लौकिक घर, माँ-बाप, मित्र-संबंधी आदि याद न आयें। जो जैसा होता था, उसके अनुसार प्रबन्ध ख़ुद बाबा जाकर करवाता था। उसी प्रकार, दादी जी भी ऐसे किसी मेहमान के आने से पहले ही सारे प्रबन्ध देखती थीं और कराती थीं।

शुरू से ही बाबा के साथ रहने का, बाबा के साथ यज्ञसेवा करने का पार्ट दादी का रहा है। दादी को देखने का, उनके साथ रहने का, उनके साथ सेवा में सहयोगी बनने का पार्ट हमारा भी रहा। बाबा के साथ मम्मा भी रहती थीं लेकिन बाबा के साथ सेवा में कम जाती थीं। मम्मा का यज्ञ में अपना रोल था, वे यज्ञमाता थीं, पूरे यज्ञ को संभालने की ज़िम्मेदारी मम्मा की थी लेकिन बाबा के साथ सेवा में बाहर जाना ज़्यादा दादी जी का ही होता था।

दादी जी की प्युरिटी महान् थी

शुरू से ही हम देखते आये हैं कि दादी जी की प्युरिटी महान् थीं। हर प्रकार की प्युरिटी दादी जी में देखने में आती थी। किसी वस्तु, व्यक्ति, वैभव में दादी जी की आँख कभी डूबी नहीं। जहाँ प्युरिटी होती है, वहाँ हर प्रकार की सिद्धि आटोमेटिक होती है। प्युरिटी हर गुण का बीज है। जहाँ प्युरिटी होती है वहाँ सर्व गुण अपने आप आते हैं। उस हिसाब से दादी जी में हर गुण और शक्तियाँ अपने आप समाये हुए थे। साथ-साथ बाबा में जो कार्य करने की विधि और कलायें थीं वो भी आ गई थीं। हम उन क्वालिटीज को देखते भी रहते थे और सीखते भी रहते थे।

✪

प्रकाश का पुँज दादी प्रकाशमणि जी

–दादी कुँज जी, पटना

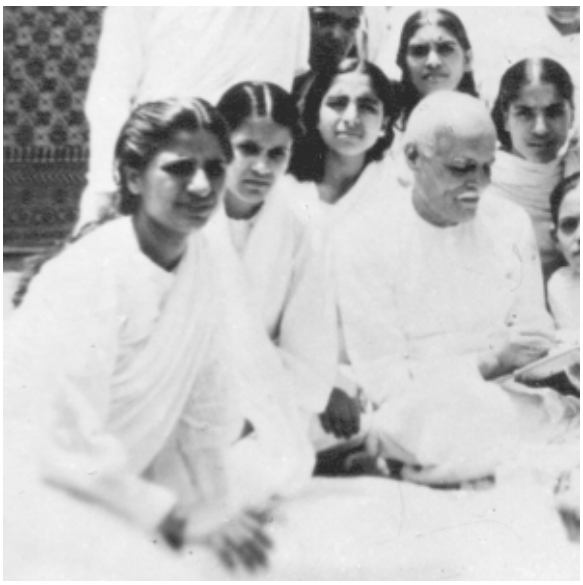

दादी प्रकाशमणि जी का इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय में सन् 1936 में, ओम् मण्डली के सत्संग में आना शुरू हुआ। वे आते ही शिव पिता की ज्ञान-मुरली की दीवानी-मस्तानी बन गईं। वे बड़ी मननशील थीं और सदा ॐ की ध्वनि में मगन रहती थीं।

शुरू से ही दादी जी ज़िम्मेदार व्यक्ति थीं

सन् 1937 में शिव बाबा ने, बच्चों के कल्याण के लिए दीवाली के शुभ अवसर पर ओम् निवास बोर्डिंग की स्थापना की जिसकी ज़िम्मेवारी दादी प्रकाशमणि जी को दी गई। बाबा ने सत्संग में आने वाली माताओं-बहनों से कहा, अपने लौकिक पिता या किसी भी अभिभावक से स्वीकृति का पत्र ले आओ कि हम अपनी बच्ची को ओम् मण्डली में पढ़ने-पढ़ाने की ख़ुशी से छुट्टी दे रहे हैं। दादी जी ने ऐसा पत्र लाकर दिया और इस प्रकार ईश्वरीय-यज्ञ में समर्पण होने का प्रथम पार्ट बजाया। तब से लेकर वे निरन्तर इस ईश्वरीय यज्ञ की सेवा में ज़िम्मेवारी का ताज पहन कर मनसा-वाचा-कर्मणा सेवा पर तत्पर रहीं और हम सभी बहनों को अमृतवेले से लेकर रात्रि तक कैसे रहना है, उसका पाठ अपने आदर्श जीवन द्वारा पढ़ाती रहीं।

विदेश सेवा के लिए भी सबसे पहले दादी जी ही निमित्त बनीं

भारत में यज्ञ के स्थानान्तरण के बाद दादी जी ने दिल्ली, कानपुर, पटना, कोलकाता, मुम्बई में विशेष सेवा का पार्ट बजाया। विदेश में भी ईश्वरीय सेवार्थ पहले-पहले जापान में शान्ति का संदेश देने के लिए प्यारे बाबा ने इनको ही निमित्त बनाया। इसके बाद ड्रामानुसार, हम सबके अति प्यारे पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा बाबा 18 जनवरी, 1969 को व्यक्त देह त्याग, अव्यक्त वतनवासी बने तो प्यारे शिव बाबा ने इन्हें ही चुनकर मुख्य प्रशासिका की ज़िम्मेवारी का ताज पहनाया। तब से लेकर 38 वर्ष तक देश-विदेश में ईश्वरीय सेवा में मुख्य भूमिका निभाती रहीं। समय, संकल्प, श्वास तथा अपनी हड्डी-हड्डी इस रुद्र ज्ञान-यज्ञ में स्वाहा की।

मुख्यालय में प्रथम अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन दादी जी ने ही किया

पिताश्री के अव्यक्त होने के बाद प्रथम विशाल कार्य, ओम् शान्ति भवन का निर्माण करके, उसमें युनिवर्सल पीस कान्फ्रेंस का आयोजन किया, जिसमें देश-विदेश के हज़ारों गणमान्य जन के साथ यू.एन. के डॉ. रॉबर्ट मूलर भी पधारे। लगभग 250 मीडिया के व्यक्ति और मालिक भी पहुँचे। एक मुख्य सम्पादक ने दादी प्रकाशमणि जी को कहा, आपने क्या जादू की छड़ी चलाई है जो इस कार्य में सम्पादक, मुख्य सम्पादक, अख़बार के मालिक पहुँच गए। सम्मेलन में तो सदा पत्रकार ही जाते हैं। दादी ने कहा, हमने कुछ नहीं किया, आप सबको आपके पिता परमात्मा ने अपने घर बुलाया है। यह बाप का द्वार सो आपका द्वार है। रॉबर्ट मूलर भी इस वार्तालाप में उपस्थित थे।

दादी जी की मधुर मुस्कान गॉडली गिफ्ट थी

दूसरे महासम्मेलन में यू.एन. से सिस्टर शैली आई थीं, जो सोचती थीं कि दादी प्रकाशमणि जी तो अन्तर्राष्ट्रीय मुखिया हैं, उनसे मुलाक़ात तो बड़ी मुश्किल से होगी। दादी जी निर्मानता की मूर्ति थीं। सम्मेलन के सत्र के बाद रोज़ सबको हाथ हिलाकर मिलती थीं। बहन शैली ने दादी को कहा, दादी, आपके पास तीन हज़ार भाई-बहनें मेहमान के रूप में हैं, उनमें भी एक हज़ार तो विशेष (वी.आई.पी.) हैं, आपको कोई तनाव नहीं होता? दादी बोलीं, ये सब मेहमान अपने पिता के घर आए हैं, करनकरावनहार पिता परमात्मा है, इसलिए हमें कोई तनाव नहीं। दादी ने पूछा, सिस्टर शैली, आपको क्या सौगात दूँ? शैली बोली, दादी जी, एक सौगात माँगूँ, आप देंगी? अपनी शाश्वत हँसी सौगात में दे दो। दादी ने कहा, यह गॉडली गिफ्ट है, ले लो।

दादी जी के पास सब गुणों का बैलेंस था

दादी जी के चेहरे पर सदा रूहानियत और मधुर मुस्कान की झलक बनी रहती थी। दादी जी सर्व के प्रति सदा शुभचिन्तक होने के कारण छोटे-बड़े सबको सम्मान देती थीं। दादी जी के पास सब गुणों का बैलेंस था। जितना नॉलेजफुल थीं, उतना पॉवरफुल थीं। जितना लवफुल, उतना लॉफुल थीं। उन्होंने ही हम सबको सदा मर्यादा की लकीर के अन्दर रहना सिखा दिया। दादी, अटूट निश्चयबुद्धि थीं जिस कारण श्रीमत को ज्यों-का-त्यों पालन कर बाबा के कदम-पर-कदम रखा। दादी जी जितनी महान् थीं उतनी ही निर्मान थीं। जितनी गम्भीर, उतनी रमणीक थीं। जितनी व्यस्त थीं, उतनी मस्त थीं। सर्वगुणों का बैलेंस होने के कारण सदा ब्लिसफुल रहती थीं। ये सब गुण उन्होंने अपनी नेचुरल नेचर में ढाल लिये थे जिस कारण हरेक हल्का हो दादी को अपना दिल दे देता था। उन्होंने हरेक के दिल को जीत लिया जो आज भी बापदादा के साथ दादी सबके दिल में समाई हुई हैं।

दादी जी ने आबू को विश्व–विख्यात बनाया

दादी के अन्दर समाने की शक्ति सागर के समान थी। सहनशीलता की तो मूर्ति थीं। सच पूछो तो हम सबके लिए संतोषी माँ थीं। उनकी दृष्टि बहुत पॉवरफुल थी। सदा विशेषता देखकर सम्मान देती थीं। वे सत्यता की मूर्ति थीं, अन्दर-बाहर साफ़ होने के कारण सबके दिलों को जीत लेती थीं। सबकी प्रिय थीं। हरेक ने उस दिव्य विभूति को दिल में समा लिया। श्रेष्ठ सैम्पल और सिम्पल थीं। देह-अभिमान ने तो कभी उनको स्पर्श तक नहीं किया। किसी भी परिस्थिति में कभी झूठ नहीं बोला। उन्होंने ज्ञान सरोवर तथा शान्तिवन के निर्माण जैसे अनेक बेहद के कार्य करके ईश्वरीय सेवा में चौदह चाँद लगा दिये। आबू को विश्व का तीर्थ बनाकर सर्व आत्माओं की सेवा का द्वार खोल दिया। कुछ वर्षों से दादी बहुत उपराम हो गई थीं। गहन तपस्या कर विकर्माजीत, प्रकृतिजीत, कर्मातीत और बाप समान अव्यक्त फ़रिश्ता बन, वे अव्यक्त वतनवासी हो गईं।

दादी जी एक ऐसा उदाहरण हैं जिनको हम कभी भूल नहीं सकते

–ब्रह्माकुमारी मोहिनी बहन, आबू पर्वत

यह मेरा परम सौभाग्य और पुण्य कर्मों का फल था जो प्यारे बाबा ने मुझे दिव्य दृष्टि का वरदान देकर अपने अव्यक्त स्वरूप का साक्षात्कार कराया और सूक्ष्म रूप में इशारा दिया कि बच्ची, मैं तुझे लेने के लिए आया हूँ। बार-बार यह साज भरी आवाज़ मेरे कानों में गूँजती थी परन्तु मुझे समझ में नहीं आता था कि यह कौन है, क्यों मुझे लेने आया है। ऐसे समय में, प्यारे बाबा की आज्ञानुसार जापान में होने वाले सम्मेलन में भाग लेने जाते समय, चन्द घंटों के लिए प्यारी दादी जी का लखनऊ आना हुआ और मैंने उनसे उस आवाज़ का रहस्य पूछ लिया। दादी जी ने कहा, डरना मत, यह परमात्मा पिता का अलौकिक इशारा है, वह आपको अपना बनाना चाहता है, आप बहुत भाग्यवान हो जो आपको इतनी छोटी आयु (12 वर्ष) में भगवान ने पसंद किया। दादी जी जापान चली गई परन्तु मेरे दिल पर अमिट छाप छोड़ गईं। चंद घंटों की मुलाकात में उनके वात्सल्य, अपनत्व भरी आवाज़, झील-सी गहरी आँखें जिनमें ममता का सागर लहरा रहा था – इन सबने मेरे दिल में सदा के लिए स्थान बना लिया। उनके ऐसे दिव्य व्यक्तित्व को मैं जीवन में कभी नहीं भूल सकी।

दादी जी ने मुझे छोटी–से–छोटी और बड़ी–से–बड़ी सेवा करनी सिखाई

एक वर्ष के बाद जब दादी जी जापान से लौटने वाली थी तो मैं मधुबन में ही थी। मैंने देखा कि प्यारे बाबा बहुत उमंग और प्यार से दादी जी के स्वागत की तैयारियाँ कर रहे थे। हर ब्रह्मा-वत्स के अन्दर दादी जी के प्रति अथाह प्यार देखकर मैं बहुत ख़ुश हो रही थी। उनके आगमन की घड़ियाँ नज़दीक आती जा रही थीं। बहुत ही हर्षितमुख, बेपरवाह बादशाह, सेवा की सफलता से सम्पन्न, प्यारे बाबा से मधुर मिलन मनाती हुई दादी ने हम सबको भी रूहानी नजर से निहाल किया। मुझे देखकर बोला, आप भी आई हो? मुझे बहुत ख़ुशी हुई कि प्यारी दादी ने मुझे पहचान लिया। तब से उनसे मिलने और पालना लेने का सिलसिला जारी है। तीन वर्ष के बाद जब मैं पुन: यज्ञ में आई तो प्यारे बाबा ने मुझे दादी जी के साथ देहली की अलौकिक सेवार्थ भेजा। दादी जी ने मुझे अपने साथ रखकर छोटी-से-छोटी और बड़ी-से-बड़ी सेवा करनी सिखाई। उनके संग के रंग में मैं आलराउण्डर और हर सेवा में दक्ष बनती गई। मैंने देखा, दादी जी का मम्मा-बाबा के साथ निश्छल प्यार, अटूट भावना, सेवा में समर्पण, हाँ जी का पक्का पाठ और एक बाप दूसरा न कोई की दृढ़ धारणा से सदा एकव्रता स्थिति। सत्यता और दिव्यता की प्रतिमूर्ति दादी सदा बापदादा के दिलतख्त पर विराजमान रह, निश्चिन्त भाव से परोपकार में तत्पर रहतीं और अन्य आत्माओं को सेवा में साथी बनाकर, एकता के सूत्र में बाँधकर, व्यस्त भी रखतीं और आगे भी बढ़ातीं।

दादी जी प्यार से मुझे मोहनलाल कहकर बुलाती थीं

जब हम दिल्ली में सेवारत थे तो कई बार दादी जी आवश्यक कार्य से, मुझे सेन्टर पर छोड़कर, दूसरे स्थान पर चली जाती थीं और वहीं से सन्देश देती थीं कि आज आप क्लास करा लेना। मैं कहती थी, दादी इतने बड़े-बड़े भाई,

मैं कैसे क्लास कराऊँ? पर दादी जी कहती थीं, बाबा मदद करेंगे। इस प्रकार क्लास कराने का उमंग और बल प्रदान करते-करते उन्होंने हमारा संकोच निकाल दिया। कई बार भाई-बहनें प्रश्न पूछते थे तो मैं कहती थी, सारी बातें एक ही दिन में थोड़े ही जान लेनी होती हैं। फिर मैं दादी से पूछकर अगले दिन, उन प्रश्नों के उत्तर दे देती थी। इस प्रकार दादी ने मुझे ज्ञान-योग में प्रवीण बना दिया। दादी जी मुझे बहुत प्यार करती थीं। बच्चों की तरह प्यार करती थीं। प्यार से मुझे मोहनलाल कहकर बुलाती थीं।

प्यारे बाबा के अव्यक्त होने के बाद जब दादी जी पर संपूर्ण यज्ञ की ज़िम्मेवारी आई तो बड़ी दीदी ने मुझे दादी जी का सेवा-साथी बनाया। दादी जी ने सारा प्रशासन सिखाया और सदा साथ में ले जाती थी। तब से दादी जी के अंग-संग रहना, उनके अव्यक्त होने तक बना रहा। अंत में भी इन नयनों ने, सब तरफ से उपराम हुई दादी को बाबा की गोद में समाते देखा। दादी जी के साथ रहते, उनके अनगिनत गुणों, विशेषताओं की साक्षी रही हूँ। प्रस्तुत लेख में मैं उनके मुरली (ईश्वरीय महावाक्यों) के प्रति प्रेम का वर्णन कर रही हूँ।

दादी जी मुरली की बड़ी दीवानी थीं

मातेश्वरी जगदम्बा, बाबा की मुरली (ईश्वरीय महावाक्य) को बहुत अच्छी तरह से पढ़ती थी, नोट करती थीं, उस पर मनन करती थीं, फिर मुरली को अपना बनाकर हम सबको सुनाती थीं। मम्मा कई बार मुरली पढ़ती थीं। वही बात मैंने दादी प्रकाशमणि जी में भी देखी। वे सुबह क्लास में जाने से पहले मुरली को बहुत अच्छी तरह पढ़ती थी। फिर शाम को चाय पीने के बाद मुरली पढ़ती थीं। रात्रि को, कितनी भी देर से वे कमरे में आएँ पर मुरली पढ़े बिना सोती नहीं थीं। बाबा की मुरली से इतना जिगरी प्रेम था। कभी-कभी हम उनको कहते थे, दादी, आप मन-मन में पढ़ रही हैं, हमें भी सुनाइए, हम भी सुनेंगे। तब दादी जी बहुत प्यार से पढ़कर सुनाती थीं, चाहे रात्रि के ग्यारह, साढ़े ग्यारह क्यों न बज जाएँ। दादी जी, क्लास में मुरली सुनाते समय अपनी कोई बात नहीं कहती थीं। जो बाबा ने कहा, जैसे भी कहा, चाहे धारणा, चाहे सेवा के बारे में जैसे का तैसा सुनाती थीं इसलिए मुरली हम सबके अन्दर छप जाती थी। जब दादी हॉस्पिटल में थीं, हम कहते थे, दादी जी, समाचार सुनोगे? तो कहती थीं, नहीं। पर जब हम कहते थे, मुरली सुनोगे? तो कहती थीं, हाँ। जब तक हम सुनाते थे, जागृत होकर सावधानीपूर्वक सुनती रहती थीं। मुरली सुनते समय दादी जी नींद नहीं करती थीं।

अव्यक्त होने के सप्ताह भर पहले भी दादी जी काफी ठीक थी। मुरली में जैसे गीत की लाइन आती थी, रात के राही..। हम पूछते थे, दादी, आगे क्या है, तो कहती थीं, थक मत जाना। जब कोई सिंधी अक्षर मुरली में आता था तो हम कहते थे, दादी, इसका अर्थ क्या है, तो बड़े प्यार से अच्छी तरह समझाती थीं। जितनी मुरली सुनती थीं दादी, बड़े ध्यानपूर्वक सुनती थीं, जब थक गई होती थीं तो स्वयं कह देती थीं, बाकी शाम को सुनेंगे। मैंने देखा, अन्त तक दादी को मुरली से इतना प्यार, जो उसके बिना रह नहीं सकती थीं। मुरली पढ़ने के लिए पूछते थे तो तुरन्त कहती थीं, चश्मा लाओ, दादी मुरली पढ़ेगी।

भ्राता निर्वैर जी, सुबह-दोपहर-शाम को आकर दादी जी को मुरली सुनाते थे। कभी नहीं आते थे तो हम सुनाते थे। मानो मैं सुना रही हूँ, भ्राता निर्वैर जी भी आ गए, तो मैं पूछती थी, दादी, निर्वैर भाई सुनाये? तो दादी कहती थीं, नहीं, आप सुना रही हो ना, आप ही सुनाओ। इस प्रकार, दादी की समदृष्टि और बाबा से प्यार अतुलनीय था।

दादी जी के अन्दर त्याग और वैराग्य की पराकाष्ठा थी

कमरे में दादी के दोनों तरफ बाबा के चित्र लगे हुए थे। उनका सारा ध्यान बाबा में ही रहा। बाबा के सिवाय कहीं भी, न किसी चीज़ में, न व्यक्ति में, न वैभव में लगाव-झुकाव था। उनके अन्दर त्याग और वैराग्य की पराकाष्ठा थी। दादी जी हमेशा कहती थीं, सिम्पल रह, सैम्पल बनो। दादी कभी भी न तड़क-भड़क स्वयं पसंद करती थीं, न हम लोगों को करने देती थीं। कभी ऐसा कुछ देखती थीं तो तुरन्त कहती थी, जाओ, बदल कर आओ। मर्यादा पुरुषोत्तम बाबा की बच्ची होने के नाते दादी, स्वयं मर्यादा में रहती थीं और सबको यही सिखाती थीं। वे कहती थीं, न बहुत

ऊपर, न बहुत नीचे, साधारण रहो।

कई बार हम कहते थे, दादी, इतने वर्ष हो गये हैं, आपका बाथरूम इतना पुराना हो गया है। दादी कहती थीं, जैसा है, वैसा ही ठीक है। दादी का हमेशा लक्ष्य रहा कि जैसा कर्म मैं करूँगी, मुझे देखकर दूसरे भी करेंगे। इसलिए दादी ने आज तक ऐसा कोई कर्म नहीं किया जो दूसरों के लिए ठीक न हो। दादी ने वो कर्त्तव्य किए जिनका सब सहज अनुकरण कर सकें। दादी जैसी परम पवित्र आत्मा, दुनिया में आज तक कोई दिखाई नहीं दी। दादी के संकल्प तक में नकारात्मक भाव नहीं था। पर ऐसा भी नहीं था कि किसी की ग़लती देखकर दादी बताती नहीं थीं, इशारा देती थीं कि इस पर ध्यान दो। पर ध्यान खिंचवाकर चली जाती थीं और भूल जाती थीं। लौटकर आने पर बहुत प्यार से कहती थीं, चलो यह करें, वह करें, अंगुली पकड़कर उसे घर, रसोई घुमाने लगती थीं। अन्दर से आता था कि अभी तो दादी इशारा देकर गईं, अभी ऐसे प्यार कर रही हैं। फिर हम दादी को पूछते थे तो कहती थीं, ऐसा? मुझे तो याद ही नहीं है। पहले-पहले मैं सोचती थी, दादी तो कह देती हैं कि मुझे याद नहीं पर मेरे अन्दर तो यादें चलती थीं। तो दो-तीन बार के अनुभव के बाद मैंने समझा कि दादी के दिल में कुछ रहता ही नहीं था। संकल्प-मात्र भी किसी के लिए कोई ऐसी भावना न हो, यह बहुत ऊँची बात है, बहुत कमाल की बात है।

दादी जी केवल आदेश नहीं देती थीं बल्कि ख़ुद साथ रहकर सहयोग देती थीं

कभी दादी ने किसी को उलाहना नहीं दिया, हमेशा प्यार की भासना दी। कभी यह नहीं कहा कि मेरे पास समय नहीं है। जब क्लास करा रही होती थीं, भोजन बनाने के निमित्त भाई आता और पूछता था, दादी, कढ़ी बनाई है, आप चखकर देखेंगी? तो क्लास में भी चखकर, उसे सन्तुष्ट करके भेजती थीं। कहती थीं, इसको बनाना है ना, मैं अभी नहीं देखूँगी तो भोजन में देर हो जायेगी। दादी को सदा होता था कि कोई मेरे लिए इंतज़ार न करे। बाबा के नियम, धारणाओं पर पक्की होकर चलती थीं। सारा दिन दादी योगयुक्त अवस्था में रहकर कारोबार में व्यस्त रहती थीं। दादी आदेश देकर चली जाए, ऐसा कभी नहीं हुआ। हम कहते थे, दादी, आप जाओ, हम कर लेंगे, पर दादी कहती थीं, आप सेवा कर रहे हो, मुझे नींद ही नहीं आती है। बाबा मुझे सोने नहीं देता है। कहता है, जाओ, बच्चे सेवा कर रहे हैं। बैठेंगी, उमंग-उत्साह दिलायेंगी, टोली खिलायेंगी, पर ऐसे ही छोड़कर नहीं जायेंगी। जब ओम् शान्ति भवन बन रहा था तो सामने जंगल था, छोटी-छोटी पहाड़ियाँ थीं। जब पत्थर तोड़े जाते थे तो रात में सभी भाई-बहनों को लेकर दादी स्वयं जाती थीं और पत्थर उठाती थीं। दादी स्वयं भी उठाती थीं। हम कहते थे, दादी, बैठ जाओ, पर वो बैठती नहीं थीं, दो-चार पत्थर ज़रूर उठाती थीं। सारी रात हमारे साथ बैठी रहती थीं। करती भी थीं और कराती भी थीं। ओम् शान्ति भवन की एक-एक ईंट में दादी की भावनाएँ समाई हुई हैं।

दादी, अन्त तक भी सेवा करती रहीं। दूर से भी उनकी दृष्टि निहाल कर देती थी। एक-एक अंग दादी का सेवा करता रहा। आज दादी साकार में हमारे बीच नहीं है, पर दादी का जीवन एक ऐसा उदाहरण है जो हम कभी भी दादी को भूल नहीं सकते हैं। जो दादी ने सिखाया, उसे करके दिखाएँ, यही दादी के प्रति सच्चा स्नेह है।

दादी जी सम्पूर्णता की देवी थीं

–ब्रह्माकुमारी मुन्नी बहन, आबू पर्वत

सन् 1967 में जब साकार बाबा से मिलन का पुनीत अवसर मुझे मिला तो उन्होंने वरदान दिया कि इस बच्ची को बाबा मधुबन में ही रखेगा और यह बाबा का भण्डारा (स्टॉक) संभालेगी। मई, 1969 में जब कन्याओं का प्रथम प्रशिक्षण कार्यक्रम चला तो उसमें मैं शामिल हुई और इस कार्यक्रम के बाद प्यारे बाबा के वरदान को साकार करते हुए, मीठी दादी जी ने मुझे यज्ञ का स्टॉक संभालने की ज़िम्मेवारी सौंप दी।

दादी जी मुझे 'लवली बेबी' कहकर सम्बोधित करती थीं

दादी जी प्यार की मूरत थीं। मैंने जब उनको पहली बार देखा था तभी से दिल का स्नेह बड़ी गहराई तक उनसे जुट गया था। दादी जी मुझे 'लवली बेबी' कहकर सम्बोधित करती थीं, उनका यह लाड़-प्यार भरा संबोधन मेरे दिल को छूता था। मैं उनके करीब आना चाहती थी। इसलिए रोज़ रात्रि को गुडनाइट करने जाती थी। वे मुझे बाँहों में समा कर मुरली पढ़ती रहती थी और फिर कहती थीं, लवली बेबी, गुडनाइट। दादी जी का सान्निध्य पाने के लिए मैं उनसे कहा करती थी, दादी जी, मुझे सेवा बताइए। मुझे पहली-पहली सेवा उनके हिन्दी पत्र लिखने की मिली। वे स्वयं बोलती जाती थीं और मैं वैसा-वैसा लिखती जाती थी। इस प्रकार मुझे उनके नज़दीक रहने का परम सौभाग्य प्राप्त हुआ और मैं धीरे-धीरे उनकी व्यक्तिगत सेवा भी करने लगी। कहा जाता है, सेवा ही मेवा है। उनकी सेवा के बल ने मुझमें बहुत योग्यताएँ भर दीं। दादी जी ने मुझे ये श्रेष्ठ बातें सिखाईं – आज्ञाकारी, वफ़ादार, फ़रमाँबरदार, ईमानदार, फेथफुल, एक बाप दूसरा न कोई, सदा एक्यूरेट, एवररेडी और दिल की सच्चाई-सफाई। इन श्रेष्ठ धारणाओं को मैंने दिल की तिज़ोरी में संभाल कर रख लिया जिससे मुझमें विशेष सामर्थ्य आता गया।

दादी जी के नयनों से प्यार बरसता था

एक बार दादी जी ने मुझसे कहा, जाओ, म्यूज़ियम सजा कर आओ। मैंने मन में सोचा, मैं तो स्वयं भी ठीक से कपड़े नहीं पहन पाती हूँ, तो म्यूज़ियम में रखे मॉडल्स को कैसे शृंगारूँगी। मैंने दिल की यह शंका दादी के समक्ष प्रकट की तो उन्होंने कहा, तुम जाओ, दादी कहती है, तुम सजा सकती हो। दादी का ऐसा विश्वास पाकर मेरी बुद्धि विचार चलाने लगी। एक दर्जी भाई का सहयोग लेकर मैंने म्यूज़ियम सजाने की सेवा पूरी की और दादी जी को दिखाई। दादी जी ने मुझे बहुत प्यार दिया। इस प्रकार दादी जी आज्ञा भी देती थीं और कार्य करने की शक्ति भी प्रदान करती थीं। जैसे छोटे बच्चे को कहा जाता है, उसी प्रकार दादी जी कहती थीं, मुन्नी, अभी यह काम करके आओ। वे बहुत ही प्यार से कहती थीं और उनकी इसी प्यार की शक्ति ने यज्ञ-सेवा का छोटे-से-छोटा और बड़े-से-बड़ा कार्य भी हमको करना सिखा दिया। उनके नयनों से प्यार बरसता था, जब वे प्यार से 'मुनड़ी' कहकर बुलाती थीं तो मेरा रोम-रोम खिल उठता था।

दादी जी के सामीप्य में थकान की अविद्या होती थी

दादी जी के अंग-संग रहने के कारण कोई भी योग्यता पैदा करने में मुझे कोई खास मेहनत नहीं करनी पड़ी। जैसे पारस के संग रहकर लोहा भी पारस बन जाता है, ऐसे दादी जी के संग रहकर मैं भी योग्य बन गई। सुबह से सायंकाल तक की व्यस्त दिनचर्या में सैकड़ों बार उनके सम्मुख जाना होता, उनकी प्यार भरी दृष्टि पड़ती और मेरे अंदर उमंग-उत्साह लहरें मारने लगता। उनके सामीप्य में थकान किसे कहते हैं, मैंने नहीं जाना। मुझे महसूस होता रहा कि ये नज़रें दादी जी की नहीं, स्वयं भगवान की हैं, जो मुझे निहाल कर रही हैं। उनके स्पर्श मात्र से दिव्य शक्ति का मुझमें संचार होता था।

ओम् शान्ति भवन, ज्ञान सरोवर, शान्तिवन आदि सभी यज्ञ के बड़े-बड़े भवनों को सजाने-संवारने का पूरा प्रबन्धन दादी जी ने मुझे सिखाया। दादी जी ख़रीदारी की चीज़ें ख़ुद बैठकर लिखवाती थीं। दादी जी की हर आज्ञा को साकार करने में मैं दिल से जुट जाती थी, मुझे बहुत खुशी मिलती थी।

दादी जी बहुत ही रहमदिल और ममता की मूरत थीं

दादी जी कभी कोई बात चित्त पर नहीं रखती थीं। मैं छोटी थी, तब कोई ग़लती कर देती थी तो बहुत प्रेम से समझाती थीं। क्षमा की सागर थीं, हर ग़लती को भुला कर प्रेम से आगे बढ़ाती थीं। दादी जी स्वयं सदा सन्तुष्ट रहती थीं और उनके बोल थे, 'सभी यज्ञ-वत्स सदा ख़ुश और सन्तुष्ट रहने चाहिएँ।' किसी को कुछ भी चाहिए तो बाबा के भण्डारे से उसे अवश्य मिलना चाहिए, यह उनकी भावना होती थी।

दादी जी निद्राजीत और अथक थीं

दादी जी को सारे ब्राह्मण परिवार से बेहद प्यार था। जो सामने आता था, उसका मुस्कराकर स्वागत करती थीं। कहती थीं, आओ, आओ। वे निद्राजीत और अथक सेवाधारी थीं। जब कभी हम कहते थे, दादी, अमुक व्यक्ति आपसे मिलने आया है तो बिस्तर से उठकर भी मिलने को तैयार रहती थीं। वे तपस्वीमूर्त थीं। रात्रि को दो बजे उठकर तपस्या करती थीं। अमृतवेले का योग नियमित करती थीं। उस समय उन्हें बाबा से बहुत प्रेरणाएँ मिलती थीं जिन्हें वे सुनाती भी थीं।

दादी जी त्याग और सादगी की मूरत थीं

यज्ञ में हज़ारों ब्राह्मण भाई-बहनें तथा अनेक वी.आई.पीज आते थे। वे हरेक से मिलती थीं। चाहे 30 हज़ार भाई-बहनें भी आ जाते थे, फिर भी लाइन में सभी उनकी दृष्टि का अतीन्द्रिय आनन्द प्राप्त करते थे। हर कार्य करने में उनका उमंग-उत्साह सदा बना रहता था। वे त्याग और सादगी की भी मूरत थीं। प्यारे बाबा के स्लोगन – जो खिलाओ, जो पहनाओ, जहाँ बिठाओ, इसकी पूर्ण धारणा उनके जीवन में देखी। वे मास्टर पालनहार थीं। एक हज़ार यज्ञ-वत्सों और दस हज़ार निमित्त शिक्षिकाओं सहित सभी को बाप समान पालना देती थीं। मुरली से उनका जिगरी प्यार था। दिन में तीन बार स्वयं मुरली पढ़ती थीं ही, क्लास में सुनाती थीं वो अलग। जब तक स्वस्थ रहीं, हमेशा स्वयं ही क्लास में मुरली सुनाती थीं। जब तबीयत नरम-गरम रहती थी तब भी वे देह में रहते भी, देह से न्यारी फ़रिश्ता स्थिति में रहती थीं। कितनी भी तकलीफ़ हो, पूछने पर यही कहती थीं, मैं बहुत ठीक हूँ। एक दिन तो कहा, मैं बहुत सुखी हूँ। वे इस दुनिया में थीं ही नहीं, वो सम्पूर्णता की देवी बन चुकी थीं। सेवा करते महसूस होता था कि वतनवासी फ़रिश्ते की सेवा कर रही हूँ। उनके अन्तिम दिनों में भाई-बहनें कॉटेज की खिड़की के शीशे में से उनके दर्शन करते थे। तब भी कहती थीं, सभी लाइन में आएँ, टोली लेकर जाएँ। हर बच्चे से उनका जिगरी प्यार था। दादी जी का मुस्कराता हुआ चेहरा और प्यार भरे नयन कभी भूलते नहीं हैं।

दादी जी, आपके वो दस कदम...

–ब्रह्माकुमारी गोदावरी बहन, मुलुन्द, मुम्बई

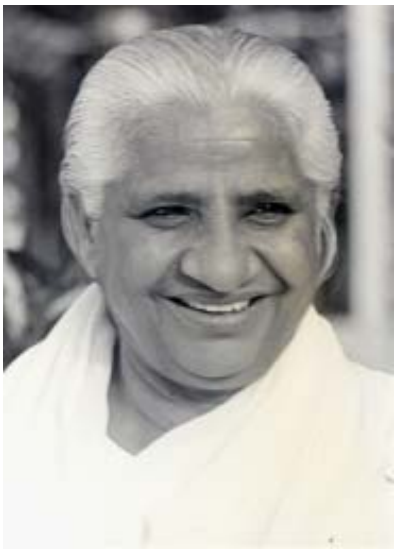

प्यारी प्रकाशमणि दादी जी, आपको याद करते ही भगवान का स्वरूप सामने आ जाता है। आपके जीवन का एक-एक कदम ब्राह्मण परिवार के अन्दर नये उमंग-उत्साह, ख़ुशी एवं ईश्वरीय नशे का अहसास कराता है। प्राण प्यारे अव्यक्त बापदादा और आपके सम्मुख की पालना में कभी भी अन्तर नहीं दिखाई दिया। आपकी दिव्य शक्ति, अलौकिक विशेषतायें, अनमोल गुण तथा अद्वितीय प्यार भरी शिक्षायें एक प्रकाश स्तम्भ की तरह आगे बढ़ने की प्रेरणायें दे रही हैं। आपकी ईश्वरीय शिक्षाओं के हज़ारों कदम विशाल ब्राह्मण समुदाय के आधारमूर्त, उद्धारमूर्त थे और अभी भी हैं। उनमें से कुछ शिक्षायें दस कदम के रूप में, यादगार के रूप में लिख रही हूँ।

1. पहला कदम नम्रता : मीठी दादी जी, आप तो नम्रता की सजीव मूरत थीं। आपका व्यक्तित्व इतना निराला था जो कोटों में कोऊ था। जैसे ब्रह्मा बाबा कोटों में कोई थे वैसे आप भी एक अलौकिक विभूति लगती थीं। सर्व गुण, सर्व कलाओं से सदा ही निखरी रहती थीं। आपकी चाल-चलन एवं चेहरा शिव बाबा की शक्ति को प्रत्यक्ष करता था। आपके आत्मीय स्वरूप के दीदार से यही अनुभव होता था कि आप निमित्तमात्र थीं। ईश्वरीय यज्ञ के विशाल कारोबार को सम्भालने में देहभान व अभिमान का अंशमात्र भी आप में नहीं था, बल्कि फ़रिश्ता स्वरूप बनकर औरों को भी उमंग-उत्साह के पंख देकर अनोखे आनंद में लहरातीं थीं। आपकी नम्रता मस्तक को नहीं परन्तु दिल को झुकाती थी।

2. दूसरा कदम निर्मानता : जिस दिन से मीठे ब्रह्मा बाबा ने आपके हाथ में हाथ देकर यज्ञ रक्षा की ज़िम्मेवारी सौंपी, आपने अन्तिम श्वास तक यज्ञ रक्षक बनकर सम्बन्ध-सम्पर्क में आने वालों को बापदादा के स्नेह की कमी महसूस नहीं होने दी। जिस प्रकार सभी के मुख से निकलता है – बाबा मेरा, वैसे ही सभी के दिल से अभी भी निकलता है – दादी मेरी। आपने सभी बच्चों का दिल जीत लिया। परमात्म-महावाक्यों की दृढ़तापूर्वक धारणा करके सभी को एकता के सूत्र में बाँध दिया। निर्मानता के गुण द्वारा नई सृष्टि के निर्माण कार्य में मन, वचन, कर्म से सभी को सहयोगी बनाया। सच मीठी दादी जी, आप सभी की जान थीं और अभी भी हैं।

3. तीसरा कदम निर्भयता : आपने मम्मा-बाबा दोनों के स्वरूप की पालना का अहसास करवाया। सदा ही माया-रावण पर जीत प्राप्त करने अर्थ शक्तिस्वरूप बनाया और ईश्वरीय मर्यादाओं एवं नियमों पर चलने की एक अद्भुत शक्ति प्रदान की जो आज भी अनेकानेक बाबा के बच्चे दृढ़तापूर्वक अपने मनुष्य जीवन को, देवताई जीवन बनाने के लिए अग्रसर हो चुके हैं। प्रैक्टिकल जीवन में बाबा के हाथ और साथ का अनुभव कराकर निर्भय बना दिया। सच दादी जी, आपका क्या कहना !

4. चौथा कदम निश्चय : सहजयोग एवं सहज ज्ञान के साथ ड्रामा की ढाल को भी साथ में रखना सिखाया। सदा यही कहा कि साक्षी रह बाबा को साथी समझ कर चलो। क्यों, क्या, कैसे में न जाकर, सदा निश्चय बुद्वि होकर रहो। विजय माला में पिरोने का पुरुषार्थ करो। मान-अपमान को छोड़ स्वमानधारी बनो तो सम्मान स्वत: ही मिलेगा। निश्चय जीवन में सफलता दिलायेगा ही। आपकी इन अनमोल शिक्षाओं ने जीवन जीने के लिए एक नई ढाल दे दी। दादी जी, निश्चयबुद्धि बन गये हैं हम।

5. पाँचवाँ कदम निश्चिन्तता : यह कदम भी जीवन को आगे बढ़ाने में बहुत मदद करता है। मानव-आत्माओं के पास अनेकानेक बातें आती हैं परन्तु उन्हें सहन करने की प्रेरणा दादी जी के इस कदम द्वारा मिलती है जो छोटे-मोटे विकारों के अंश जैसे कि जोश, क्रोध परचिन्तन, परदोष के ऊपर विजय प्राप्त करा कर परोपकारी बना देती है। हर कर्म में, कदम में निश्चिन्तता ही चिन्तामुक्त बनाती है। आपकी ऐसी प्रभु पालना आज भी याद आते ही पुराने स्वभाव-संस्कार बदल जाते हैं

6. छटवाँ कदम निर्मोही : दादी जी आपके त्याग, तपस्या और सेवा ने जीते जी मरजीवा बनाकर संसार सागर से उपराम बना दिया। पुरानी दुनिया का लगाव, किसी व्यक्ति के प्रति झुकाव और वस्तुओं का प्रभाव जैसे अन्दर से ही ख़त्म कर दिया। सरलता, धैर्य, गंभीरता जैसे गुणों का दान प्रदान कर निर्मोही बना दिया। आपके सच्चाई-सफ़ाई के संग के रंग ने जीवन में जादूई छड़ी का काम किया जो स्वत: ही मन प्रभुप्रेम की डोर में बँध गया। आपका रूहानी प्यार-दुलार, अपनत्व भरी पालना प्यारे परम पिता की ही भासना कराती थी। यह एक चमत्कारी कला थी जो दादी जी, आपकी आकृति से प्रत्यक्ष होती थी और दूसरों को भी निर्मोही देवी-देवता बना देती थी।

7. सातवाँ कदम निरहंकारी : दादी जी, आपके जीवन की यह बड़ी भारी विशेषता थी जो आप कभी मुख से "मैं" शब्द न कहकर, कहतीं थीं – "दादी" कहती है, दादी का ऐसा विचार है। कहने का भाव यह है कि दादी जी, आप इतने महान् पद पर होते हुए भी, पूरे विश्व की महान् आत्माओं से सम्मानित होते हुए भी, अनेकानेक पुरस्कार प्राप्त करते हुए भी अहम् भाव के नामोनिशान से भी परे थीं। दादी जी, सभी के प्रति समभाव, रहमभाव, शुभभावनायें आपके जीवन से ऐसे निकलती थीं जैसे गरमी में शीतल जल का फव्वारा हो। दादी जी की दिव्य दृष्टि प्रभु के प्यार में ऐसा भिगो देती थी जो सम्बन्ध-सम्पर्क में आने वाली आत्मायें भी रूहानियत का अनुभव करने लगती थीं।

8. आठवाँ कदम निर्विघ्न : संसार में या समाज में कोई भी व्यक्ति, चाहे छोटा से बड़ा, ऐसा नहीं होगा जिसके पास कोई समस्या नहीं हो। कोई न कोई समस्या होती है परन्तु दादी जी, आप परमात्म-शक्तियों एवं वरदानों से ऐसे शक्तिशाली बना देतीं थीं जो थोड़े समय में ही बाबा के बच्चे अपने आपको विघ्न रहित समझने लगते थे। दादी जी, आप कहा करती थीं, तीन बातें ध्यान पर रखो: (1) ईश्वरीय पढ़ाई (2) वर्तमान की प्राप्ति (3) भविष्य का पद। यही बातें आपको नम्बरवन में ले जायेंगी। दृढ़ता में ही सफलता है। जितना बाबा की याद की लगन में मगन रहोगे उतना ही निर्विघ्न जल्दी बनोगे। दादी जी की प्यार भरी दृष्टि, बाबा के बच्चों के जीवन रूपी सृष्टि में उमंग-उत्साह का एक नया फूल खिला देती थी जो जीवन को बोझ से रूहानी मौज में ले आता था, तब सर्व समस्याओं का समाधान नेचुरल अनुभव होता था। चाहे तन की बीमारी हो या मन-वचन-कर्मों की परन्तु मनसा के पवित्र वायुमण्डल से जीवन को कोई भी विघ्न न सताता था, न हराता था। यह भी एक अनमोल कदम है।

9. नौवाँ कदम निर्मल वाणी : दादी जी, आपकी वाणी में एक ऐसी ईश्वरीय शक्ति की मिठास थी जैसे कहें कि सूर्य एक होता है, किरणें अनेक, पुष्प एक, पंखुड़ियाँ अनेक होती हैं, वैसे ही दादी जी की मधुर वाणी का ओजस विश्व के चारों कोनों को प्रकाशित करता था, प्रभुप्रेम की डोरी में पिरोकर सत्यता, पवित्रता, नैतिकता के पथ पर चलने को प्रेरित करता था।

10. दसवाँ कदम निस्वार्थ भाव एवं भावना : मनसा योग शक्ति के द्वारा मानव आत्माओं को जागृत करना, ईश्वरीय संदेश की अनुभूति कराना, आने वाली सतयुगी दुनिया के काबिल बनाना, शुभ भाव एवं भावनाओं का स्रोत बहाकर सबका तन, मन, धन, श्वास, संकल्प, शक्ति ईश्वरीय सेवा में समर्पित कराना, ओम् शान्ति का महामंत्र सुनाकर ईश्वरीय मत का राही बनाना, मैं आत्मा हूँ, शिव बाबा की संतान हूँ, शान्तिधाम मेरा निजी घर है – इस स्मृति का बार-बार स्मरण कराना – ऐसी नि:स्वार्थ सेवा करने वाली थीं अव्यक्तमूर्त, साक्षात्कारमूर्त हमारी दादी प्रकाशमणि जी।

दादी जी ब्रह्मा बाबा समान प्यारी भी थीं और न्यारी भी

–ब्रह्माकुमारी राजरानी बहन, काठमांडू

दादी जी एक ऐसी महान् विभूति थीं जिनका जीवन ही एक खुली किताब बना, जिनका जीवन ही सन्देश बना, जिनके जीवन का एक-एक पन्ना पलटाने से ही उमंग, उत्साह और साहस का स्वीच ऑन हो जाता है। कथनी और करनी को एक समान बनाकर दादी जी ने जीवन को, हर प्रश्न का उत्तर देने वाली डिक्शनरी बनाया। दादी जी सादगी और स्वच्छता की शृंगारी हुई प्रतिमूर्ति थीं। जीवन को त्याग और तपस्या से भरपूर कर ऐसा लाइट, माइट हाउस बनाया जिससे चारों ओर प्रकाश ही प्रकाश बिखरने लगा। उसी प्रकाश से आज यह विश्व विद्यालय प्रकाशित हो रहा है। उनके नयनों में रूहानियत, वाणी में मधुरता, कर्मों में कुशलता थी।

ड्रामा अनुसार बाबा ने मुझे पटना सेवा के लिए भेजा। उस समय बाबा सेवा के हिसाब से "सिन्धी गीता" लिखना चाहते थे, जिसके लिए बाबा का बुलावा हुआ औरे दादी जी मधुबन गयीं। मुझे पटना के बहुत से भाई-बहनों द्वारा दादी जी के जीवन की अद्भुत शक्ति, गुण और विशेषताओं के बारे में सुनने को मिला।

सचमुच दादी जी क्या हैं, जीवन में वह देखने की घड़ी भी आयी। पटना में महासम्मेलन का आयोजन किया गया था, तब दादी जी के और भी समीप आने का चांस मिला। दादी के समीप आते ही बहुत ही अपनेपन की महसूसता आई। दादी जी की एक-एक करनी से मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला।

दादी जी में लव और लॉ का सन्तुलन था

बाबा के अव्यक्त होने पर दादी को और भी अधिक शक्तिशाली, शीतल और स्नेह की मूर्ति के रूप में देखा। जब बाबा का अन्तिम संस्कार किया गया तो ऐसे लग रहा था कि दादी ही साकार बाबा के रूप में खड़ी हैं।

दादी जी ने सभी भाई, बहनों को ऐसे सम्भाला जैसे बाबा ने। उनमें लव और लॉ का बैलेन्स था जिससे ही ब्राह्मण परिवार की दिनोंदिन उन्नति होती जा रही है। दादी जी की महानता थी – छोटे-बड़े सब के साथ समान व्यवहार करना, रमणीकता के गुण से सबको ख़ुश करना। सरलता, नम्रता एवं गम्भीरता की अवतार थीं दादी जी।

कई बार दादी हमें अपने पर्सनल पत्र देतीं थीं और कहती थीं, लो राजी, पढ़ो और पढ़के जबाब दो। हमें ख़ुशी का अनुभव होता था कि कितना आन्तरिक स्नेह है दादी का।

दादी जी में सर्व प्रति शुभभावना थी

जब किसी वी.आई.पी को लेकर दादी जी के सामने जाते थे तो दादी जी उन्हें कहती थीं, आप बहुत अच्छी पवित्र आत्मा हैं। मिलने के बाद वे वी.आई.पी आश्चर्य खाते थे कि मैं तो इतना महान् नहीं हूँ फिर भी कैसे दादी जी ने कहा! फिर उनकी भी आन्तरिक लाइफ में बदलाव आ जाता था। दादी जी काठमाण्डू, नेपाल 7-8 बार आई थीं। नेपाल के सभी भाई-बहनों का और विशेष वी.आई.पीज़ का दिल जीता हुआ था दादी जी ने। जब-जब दादी जी आती थीं तो वी.आई.पीज़ की क्यू लगती थी। दादी जी से मिलने के लिए मन्त्री, सचिव, धर्म नेतायें सब आते थे। इस प्रकार दादी जी के प्युअर मन का वाइब्रेशन हमने मन से अनुभव किया।

मुझे वो दिन और वे बातें पल पल याद आतीं हैं। जब "विश्व शान्ति भवन" (काठमाण्डू सेन्टर) पूरा हुआ तो मैंने दादी जी को कहा, दादी जी, अब भवन पूरा हुआ। दादी ने कहा, नहीं राजी, यह तो बनता ही रहेगा। सचमुच, अभी तक बनता ही जा रहा है।

दादी जी में समाने की और समेटने की बहुत बड़ी विशेषता थी। जिस बात को समाया उस बात की दुबारा याद तक नहीं आई। बड़े-छोटे दादी की नज़र में सब समान थे।

दादी जी विशाल हृदय की धनी थीं

जब-जब दादी जी काठमाण्डू आती थीं, मैं दादी को खुले दिल से सर्विस समाचार सुनाती थी और पूछती थी, अब मुझे क्या करना है, अपनी उन्नति कैसे करनी है? दादी सिर पर हाथ रख कहती थीं, राजी, तेरा सब ठीक है, कुछ होगा तो मैं बता दूँगी। फिर पूछा, दादी, सेवा को कैसे आगे बढ़ाया जाए? दादी कहती थी, राज तेरे को बाबा का वरदान है ही, सर्विस बढ़नी है, बढ़ती ही रहेगी।

नेपाल का नियम था। जब भी मालिक को घर चाहिए, मकान ख़ाली करना पड़ता था। मैंने कहा, दादी, कब तक यह चलता रहेगा। दादी ने कहा, राजी, मैं आपके कान में कहती हूँ ,ज़मीन ले लो और घर बनाओ। विश्वशान्ति भवन का फाउण्डेशन तथा उद्घाटन दादी जी ने ही किया था। फाउण्डेशन डालते समय दादी जी ने कहा, राज, तुम खुले दिल से मकान बनाओ, कुछ करना है तो मुझे बताओ, मैं बैठी हूँ।

दादी जी के संकल्प अटल और सफल थे

दादी जी ईश्वरीय मर्यादाओं में अटल और हैण्डलिंग करने में महान् थीं। कैसी भी भूली-भटकी आत्मा को प्यार से शिक्षा देकर अपना बना लेती थीं। सारे विश्व में बाबा की प्रत्यक्षता के लिए दादी हमेशा सोचती रहती थीं और बहनों को बुलाकार सेवा के विविध इशारे देती थीं जिसका प्रत्यक्ष फल विभिन्न सेवा के प्रोग्राम्स हैं। दादी जी को विविध वर्गों के लिए समान स्नेह था। नारी शक्ति के लिए तो विशेष था ही जिसको भगवान ने निमित्त बनाया।

दादी जी ने हर पल हरेक का भला ही सोचा

आज से 20 साल पहले हमारा एक्सीडेन्ट हुआ था। ठीक होने के बाद मधुबन गयी तो भाई-बहनों द्वारा सुनने को मिला कि दादी ने मधुबन में योग का प्रोग्राम रखा था और कहती थी, 20 बहनों जितनी एक बहन है राज। यह सुनकर मेरा दिल भर आया था। कितनी स्नेह भरी पालना, कितना दुलार देकर नया जीवन दिया दादी ने !

दादी जी ने एक्सीडेन्ट के बाद मधुबन में हमारा बहुत-बहुत स्वागत किया, नया जन्मदिन मना दिया। तब मुझे योगिनी बहन (बाम्बे) ने सुनाया कि उन दिनों दादी ने हमारा भी गाड़ी में आना-जाना रोक दिया था। तब मुझे बहुत आश्चर्य लगा। वाह दादी वाह! कितना प्यार दिया आपने, आपकी महिमा अपरम अपार। इतना प्यार देती थी मेरी दादी जी।

जिस प्रकार बाबा अव्यक्त होने से पहले सारे कारोबार से न्यारे थे, वैसे ही दादी जी भी सारे कारोबार से न्यारी-प्यारी थीं। वह दृश्य आज भी मेरी आँखों के सामने आता रहता है जब मैं दादी जी से बाम्बे हास्पिटल में मिलने गई थी। नयन मुलाक़ात होते ही दादी जी ने पूछा, टोली खाई? मैंने कहा, अभी तो नहीं खाई। दादी जी ने मुन्नी बहन को बुलाया और हम सभी के मुख में टोली खिलायी। मैंने कहा, दादी जी, ठीक होने के बाद आपको नेपाल आना है। दादी जी ने हाँ में सिर हिलाया। जब-जब मधुबन जाते हैं, बाबा के कमरे में, शंतिस्तम्भ पर, दादी साकार में हैं, ऐसा लगता है। दादी-बापदादा सदा साथ हैं ही हैं,और क्या चाहिए?

प्रेरणा-स्त्रोत दादी जी को हम भूल नहीं सकते

–ब्रह्माकुमारी कमलेश बहन, कटक

सन् 1969 से मैं दादी जी के बहुत नज़दीक आ गई जब दादी जी मधुबन में ही रहने लगी थी। प्यारी दादी की ममता, सरलता, नम्रता, गंभीरता, बुद्धि की विशालता का मैंने बहुत गहराई से अनुभव किया। दादी जी प्यार की मूर्ति थी। एक बार हमने कहा, प्यारी दादी, जैसे हमने बाबा की गोद ली है वैसे हम आपकी गोद में जाना चाहते हैं। फौरन दादी जी ने मीठी मुस्कान के साथ कहा, आओ, आओ और गोदी में ले लिया तथा पीठ थपथपायी। हमारी सारी थकान दूर हो गई। हमें अनुभव हुआ जैसे हम बापदादा की गोद में हैं।

दादी जी दिव्यगुणों की खान थीं

दादी जी दिव्यगुणों की खान थी। एक बार मैं एक सेवाकेन्द्र से आई, वहाँ थोड़ा कुछ सहन नहीं हुआ था तो दादी ने बड़े प्रेम से कहा, मैं यहाँ साठ सेठों का सहन करती हूँ, क्या तुम दो-चार स्टूडेन्ट का सहन नहीं कर सकती हो? सहनशक्ति से ही हमारे अंदर और भी दिव्यगुण आ जायेंगे। ऐसी मीठी शिक्षा देकर दादी जी उमंग-उल्लास से भर देती थी।

सहनशीलता और सरलता दादी जी में कूट-कूट कर भरी थी। प्यारी दादी को रोना बिलकुल पसंद नहीं था। एक बार मैं बात करते-करते थोड़ा रो पड़ी तो तुरंत दादी ने एक बहन को कहा, इसे बाहर ले जाओ, जब रोना बंद करे तब मेरे पास आये, तब दादी मिलेगी। मुझे तुरंत हिम्मत दी और दस मिनट के बाद जब मैं दादी के पास एकदम हँसके आई तो दादी ने मुझे बहुत प्यार किया, गले लगाया और खुशी दी, कहा, रोता कौन है? जिसका पति नहीं। तुम्हारा पति तो सर्वशक्तिमान है और मुझे दादी जी से शक्ति प्राप्त होने जैसा अनुभव हुआ। फिर मुझे पंजाब सेवा में जाने के लिए राज़ी किया।

दादी जी बिना कहे मन की बात समझ लेती थीं

जब भी हमने कोई मन की बात प्रकट की, दादी उसे शीघ्र ही पूरा करती। बिना बताये ही दादी को मालूम पड़ जाता था कि हम क्या चाहते हैं। एक बार मेरे मन में आया कि दादी की सेवा करूँ तो दादी मेरे मन की बात जानकर अपनी सेवाधारी बहन को बोली कि आज कमलेश को यह सेवा दे दो। यह सुनकर मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। मन में सोचा कि दादी तो पूरी साकार बाबा हैं। बिना कहे मन की बात समझ लेना और हर खुशी दे देना दादी की विशेषता थी। दादी को देख हमारे अंदर अनेक गुण आने लगे। अनेक कमज़ोरियाँ दादी अपने स्नेह और शक्ति की दृष्टि से मिटा देतीं। दादी को देख कर हमेशा त्याग, तपस्या, वैराग्य वृत्ति जागृत होती। दादी सदा तपस्या और सेवा की तरफ ध्यान खिंचवाती थी।

दादी जी का जीवन ही शिक्षणीय था

दादी का जीवन ही शिक्षणीय था। सन् 1973 में मैं सेवार्थ कटक आई। दादी के अनेक पत्र हमारे पास आते। अनेक प्रेरणादायक, उमंग-उल्लास भरी शिक्षायें हम दादी के पत्रों से प्राप्त करते। हमारा जीवन आगे कैसे बढ़े, इस पर दादी हमेशा ध्यान खिंचवाती। छह-सात बार दादी जी का उड़ीसा आना हुआ। प्रत्येक बार कुछ न कुछ आगे बढ़ने की प्रेरणा दादी जी से प्राप्त होती रही। पहली बार दादी जी ने कहा, यहाँ बहनों के लिए एक बैंक एकाउन्ट होना चाहिए

और तुरंत दादी जी ने अपने पास से पाँच सौ रुपया देकर एकाउंट खुलवाया। इतनी प्यारी दादी सभी प्रकार से हमारा ध्यान रखती। मधुबन में कभी कोई प्रोग्राम होता तो दादी कैसेट भेजती। एक बार दादी जब कटक से वापस जा रही थी तो स्टेशन पर तीस-चालीस बहनों और तीस-चालीस कुमारों का संगठन देखा। जाते-जाते दादी ने कहा कि कमलेश, इनको नज़र न लग जाये, अविनाशी टीका लगा देना।

दादी जी के बोल साक्षात् वरदान थे

एक बार जब कटक में ज़मीन ली, फाउण्डेशन डाला गया, प्यारी दादी जी आईं, बहुत धूमधाम से कार्यक्रम हुआ। मैंने कहा, दादी जी आपने फाउण्डेशन डाला है तो आपको ही इसका उद्घाटन करना होगा। दादी जी ने कहा, दादी एक बार आयेगी, या तो फाउण्डेशन पर या उद्घाटन पर। मैंने कहा, दादी, यहाँ तो आपको दोनों में आना होगा तो दादी ने कहा, अच्छा देखेंगे। फिर अमृतवेले मैंने दादी से कहा, दादी यह मकान कैसे बनेगा, इसका बजट सिर्फ कागज़ में है, हाथ में कुछ भी नहीं। प्यारी दादी ने मुझे ऐसा वरदान दिया, सिर पर हाथ रखकर कहा, तुम यहाँ बीस साल से सेवा कर रही हो, देखना यह चुटकियों में सबसे जल्दी बनेगा। वही हुआ। दादी जी जो कहती वो वरदान के रूप में हमारे सामने प्रैक्टिकल होता। दादी यहाँ से गई और जाते ही फाउण्डेशन के लिए पच्चीस हज़ार रुपये का ड्राफ्ट भेजा और कहा, धीरज से करते चलो तो कार्य शीघ्र ही सफल हो जायेगा। ऐसे दादी जी में अपार धीरज था और सचमुच ही दो वर्ष में मकान बनकर पूरा हो गया।

दादी जी एक ममतामयी माँ थीं

दो साल के बाद दादी कोलकाता म्यूज़ियम के उद्घाटन कार्यक्रम में आई। उसी समय नये भवन के उद्घाटन अर्थ दादी जी हमारे पास भी आई। जून 8, 1992 को प्यारी दादी के करकमलों द्वारा उद्घाटन हुआ। प्यारी दादी ने कहा, यह कमलेश ऐसी लाडली है जो मुझे दो बार खींच लिया, फाउण्डेशन में भी और उद्घाटन में भी। राजस्थान में ऐसी जगहें हैं जहाँ मैं एक बार भी नहीं गई और यहाँ चार-पाँच बार आ चुकी हूँ। ऐसी थी हमारी माँ स्वरूपा प्यारी दादी। आज भी दादी जी के साथ का अनुभव और दादी की यादों से अपना जीवन चला रही हूँ।

दादी जी सत्यता और पवित्रता की देवी थीं

दादी जी हमेशा एकता का पाठ पढ़ाती। वे सत्यता और पवित्रता की देवी थी। जो बात कह देती थी वो एकदम सत्य हो जाती थी। सन् 1976 की बात है, उस समय मेरे पास नीलम बहन थी। दादी-दीदी हमेशा हमें नीलकमल की जोड़ी कहती थी। पत्र में भी नीलकमल कहकर संबोधित करती थी। दादी जी के सारे पत्र आज भी मेरे पास हैं। जहाँ भी रहें, बीच-बीच में पत्र पढ़ते हैं और हमेशा दादी जी को अपने पास अनुभव करते हैं। जब भी मधुबन में जाती तो प्रात: रोज़ दादी जी को गुडमार्निंग करने जाती, वह एक मिनट का मिलन, मीठे गुडमार्निंग के बोल, दादी से नैन मुलाकात हमारे जीवन में लाखों खुशियाँ भर देती जो सारा दिन खुशी में ही व्यतीत होता। हमें अनुभव होता, दादी का प्यार, दादी की छत्रछाया हमारे साथ है और सदा रहेगी। आज भी हम उसी अनुभव में रहते हैं। ऐसी प्रेरणा की स्रोत प्यारी दादी जी को हम कभी भूल नहीं सकते।

दादी जी चमकने वाली मणि, शक्ति देने वाली देवी थीं

–ब्रह्माकुमारी मंजू बहन, ब्रह्मपुर

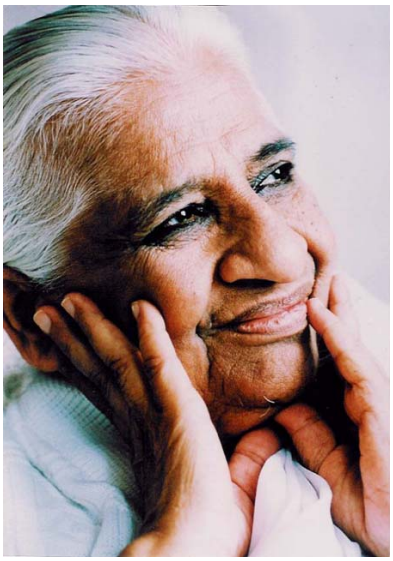

सन् 1969, मई, पाण्डव भवन के प्रांगण में, धरा पर फ़रिश्ता... एक टिक आँखें निहारती रह गई। मन कहने लगा, क्या यह सत्य है? सूरत से ब्रह्मा बाबा सम मुस्कराहट, निर्मलता का झरना बह रहा है! धीरे से समीप जाना हुआ क्योंकि दादी गुलज़ार जी ने पहले से ही सुनाया था कि तुम बाँधेली गोपी हो और पहली बार मधुबन जा रही हो इसलिए सब महारथियों से अलग–अलग अवश्य मिलना। दादी जी को देखने के साथ ही मुझे 18 जनवरी की मुरली में दी गई अनमोल शिक्षा याद आ रही थी – निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी भव। प्राणों से प्यारे ब्रह्मा बाबा, दादी जी के कोमल हस्त को अपने कमल हस्त में लेकर सर्वशक्तियों को वरदान के रूप में सौंपकर वतन की ओर अग्रसर हुए। यह दृश्य मेरे मानस पटल पर इतना स्पष्ट आ गया कि बहुत समय तक वहाँ ही रह गई और मुझे लगा कि इनसे मेरा जन्मों का सम्बन्ध है और रहेगा। दादी जी ने कहा कि तुम तो बाबा और यज्ञ के नज़दीक की आत्मा हो, जो छिपकर भी प्यारे बाबा के घर में इतने दिनों के लिए पहुँच गई हो। तुमको तो बाबा ने कितने वर्षों से मुरलियों में याद किया है और बन्धनों को काटने के लिए, परीक्षाओं में सहनशील बनने के लिए सकाश दे शक्तिशाली बनाया है।

इस प्रकार चलते–चलते 18 जनवरी, 1970 को फिर से प्यारे बापदादा से मिलन मनाने मधुबन जाना हुआ। प्यारे बाबा ने दीदी, दादी के सान्निध्य में मुझे वरदान दिया – ''तुम बाबा की सौग़ात हो, सौग़ात बनकर ही रहोगी और औरों को भी सौग़ात बनाओगी।'' मुझे यह वरदान इतना स्पष्ट समझ में नहीं आया और मैंने दादी जी से इसका अर्थ पूछा तो उन्होंने कहा, तुम यज्ञ की थी, यज्ञ की हो और यज्ञ में आ जाओगी। उस समय तो मुझे यह असम्भव लगा लेकिन 6–7 दिनों की पालना में, सब के साथ सेवा में रहते–रहते मुझे स्वयं पर निश्चय हुआ और दादी जी ने शक्ति भी भरी जिससे कि सम्बन्धों का बन्धन जो टूटना असम्भव था, 11 जून, 1970 को ऐसे टूट गया जैसे पानी पर लकीर। फिर तो लौकिक परिवार ने मुझे मधुबन में रहने के लिए भेजा। सदा बड़ी दीदी जी, दादी जी के द्वारा मिली हुई सेवाओं को लगनपूर्वक करने लगी।

दादी जी एक महान् साधिका एवं स्थितप्रज्ञा थीं

मैंने दादी से सीखा कि "निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी भव" के इस अन्तिम वरदान का स्वरूप कैसे बना जाए। इस वरदान को दादी जी अमृतवेले से रात्रि तक स्थूल, सूक्ष्म दिनचर्या में प्रयोग में लाने का कार्य करती थीं। निराकारी स्थिति का आधार पॉवरफुल अमृतवेला, ये उनके जीवन का स्वरूप हो गया था। निर्विकारी स्थिति का आधार मुरली का गहन चिन्तन है। दादी जी प्रतिदिन रात्रि में और अमृतवेले योग के पश्चात् मुरली अवश्य गहराई से पढ़ती रहीं और सारे दिन में चाहे किसी से पर्सनल मिले या क्लास कराए लेकिन उस दिन की मुरली की धारणा,

श्रीमत ज़रूर सभी को पक्का कराती थीं। ऐसे श्रीमत और दृढ़ता द्वारा ड्रामा के पट्टे पर अचल-अडोल रह निराकारी, निर्विकारी की स्टेज 95% तक हो जाने के कारण सभी गुणों और शक्तियों में पारंगत हो गईं। यज्ञ के सामने कितनी भी बातें आईं, उनमें भी वह न्यारी–प्यारी रह उनका समाधान स्वयं भी करती थीं और औरों से भी कराती थीं। उदाहरणार्थ, एक सेन्टर से फोन आया कि सेन्टर के मकान को आग लग गई, सारा जल गया...। लेकिन दादी जी ने एक सेकण्ड भी चिन्ता नहीं की, न आश्चर्य, न स्तब्धता। तुरन्त कहा, कल्याणकारी ड्रामा...। उसके पश्चात् शक्तिशाली स्थिति और वचनों द्वारा बहनों को समझानी और शक्ति देने लगीं। इस दृश्य को देखकर मुझे लगा कि कई बार एक काँच का गिलास टूटने से भी लगता है कि क्या हो गया, क्यों टूट गया लेकिन दादी जी की तो कमाल है !

दादी जी में कर्मातीत बनने की सदा लगन रही

दादी जी में कर्मातीत बनने की सदा लगन रही। हर घड़ी यह स्मृति पक्की थी कि मुझे घर जाना है, साथ–साथ निमित्त हूँ, करनकरावनहार बाबा मुझसे करा रहा है। रात्रि को ज़रूर अपनी कर्मेन्द्रियों की दरबार लगाकर निरहंकारी बन निश्चिन्त हो, प्यारे बाबा की गोद में विश्राम करती रहीं।

दादी जी ने सदा स्व–सेवा तथा ईश्वरीय सेवा का सन्तुलन रखा

एक बार दादी जी गुजरात सेवा के चक्कर पर अपने साथ मुझे भी ले गईं। उसमें मैंने समीप से देखा कि दादी जी सभी के साथ कैसे हलके रूप से मिलन मना रही थीं लेकिन साथ-साथ प्यारे बाबा की याद, सेवा, धारणा को भी पक्का करा रही थीं। एक बार मुझे इलाहाबाद, कोलकाता, लखनऊ के मेले में शिविर की सेवा हेतू भेजा। स्वयं भी जब पहुँचती तो मुझे अमृतवेले पॉवरफुल याद द्वारा आत्माओं को सकाश दे शक्तिशाली और निश्चयबुद्धि बनाने की सेवा के लिए प्रेरित करती रहीं। सन् 1977 में दादी मनोहर इन्द्रा के साथ दादी ने मुझे कर्नाटक के टूअर पर भेजा जहाँ दादी मनोहर इन्द्रा जी को विशेष भट्ठियाँ करानी थीं। मुझे भी यही कहा गया कि भट्ठियों द्वारा अपनी भी शक्तिशाली स्थिति बनाते रहना। जब प्यारे अव्यक्त बापदादा से छुट्टी लेने का समय आया तो दादी जी ने बापदादा से कहा कि यह सेवा पर जा रही है। इस प्रकार अनेकों को आगे बढ़ाते हुए सन् 2007 में दादी जी ने बाप समान साक्षात् मूरत एवं साक्षात्कार मूरत बनकर सम्पूर्ण स्थिति को प्राप्त किया।

वाह रे! दादी जी...

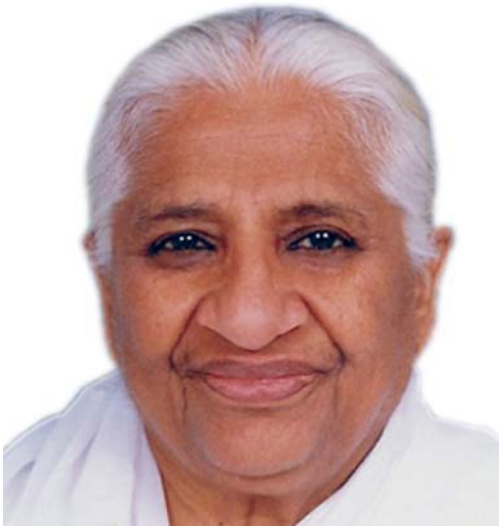

–ब्रह्माकुमारी शीला बहन, गुवाहाटी

महान् विभूति परम आदरणीया दादी जी की विशेषता यह रही कि सदा उन्होंने मुझ आत्मा को सन्तुष्ट किया। मेरी सर्व आशाओं को पूर्ण करते हुए भी यही पूछती रहीं कि है कोई आशा, तो बताओ। जब गुवाहाटी के भवन का निर्माण किया गया, उसका उद्घाटन करने के लिए मैंने दादी जी को निमंत्रण दिया। दादी जी ने मेरे मन की आवाज सुनीं और कहा, मैं जरूर आऊँगी और बहुत प्यार किया। मैंने देखा कि कितने सरल भाव से, उदारता से उन्होंने निमंत्रण स्वीकार किया! उद्घाटन के समय जब दादी जी आईं तब फिर से यही पूछा कि है कोई आशा? है तो अभी बोलो। उस समय सारी क्लास के बीच मेरे मुख से निकला, ''अभी ना जाओ छोड़कर कि दिल अभी भरा नहीं।'' दादी के प्रेम में निकले इस बोल ने मेरे दिल को छू लिया और आँखों से आँसू निकल पड़े। वाह रे मीठी दादी जी!

सहनशीलता की प्रतिमूर्ति

एक बार दादी जी की तबीयत ठीक नहीं थी। मैं कोलकाता में निर्मलशान्ता दीदी जी के साथ रहा करती थी। उस वक्त मुझे उनके साथ रहने तथा उनकी सेवा करने का अवसर मिला। मैंने देखा कि हम जो कुछ भी उन्हें खिलाते–पिलाते, वो शरीर के अन्दर जाता परन्तु थोड़ी ही देर में उल्टी हो जाती थी। हम कहते थे कि कितना कष्ट हो रहा है लेकिन उनके चेहरे पर जरा भी उदासी, चिन्ता की रेखायें नहीं दिखाई देती थीं। ऐसी अवस्था में भी वे हमें प्यार से मिलतीं और क्लास भी कराती रहीं। मुझे आश्चर्य लगता था कि इतनी तकलीफ़ होने के बावजूद भी दादी जी में इतनी सहनशक्ति है! दादी जी योगी आत्मा का स्वरूप थीं। हम कहते, दादी जी, आप यहीं बैठकर उल्टी कर लें परन्तु वे पूरी कोशिश करती रहीं कि मैं निर्धारित स्थान पर ही जाकर उल्टी करूँ। सचमुच महान् उदारता और सहनशीलता का एक उदाहरण स्वरूप थीं दादी जी।

उमंग–उत्साह से भरपूर

सन् 1987 में प्रथम बार गुवाहटी में मेले का आयोजन किया गया था। उस समय यहाँ हैंड्स थोड़े थे। दादी जी ने जानकी दादी जी को मेले का उद्घाटन करने भेजा था। उस कार्यक्रम में मुख्यमंत्री को आना था। मैंने क्या देखा, दादी जी का विशाल हृदय एवं दूरांदेशी बुद्धि। दादी जी ने ख़ुद ही सभी जोन की बहनों को प्रोत्साहित करके हमारे पास भेजकर सहयोग दिया। एक बहन को तो बस से उतार कर भी कहा कि तुम्हें हर हालत में जाना है, मदद करना है। सचमुच दादी ने दूर बैठकर मनसा शक्ति और सहयोग देकर मेले को सफल बनाया। लगभग सभी बड़ी बहनों तथा बृजमोहन भाई को भी भेजकर हमारे उमंग को बढ़ाया। कहने का तात्पर्य यह है कि दादी जी स्वयं भी सदा उमंग–उत्साह में रहतीं और हम सबमें उमंग–उत्साह ऐसा भरती थीं कि हम किसी भी कार्य को करने के

लिए तैयार हो जाते थे। वे सदा कहती थीं, हिम्मत रख, बाबा बैठा है, दादी है ना! क्या चाहिए? कोई भी चीज़ की आवश्यकता हो तो बताना। कुछ खाने का दिल हो तो भी बोलना, संकोच नहीं करना।

उनका व्यक्तित्व ही निराला था

मैं जब बड़ी दादी जी के विषय में सोचती हूँ तो लगता है कि औरों की तुलना में मैंने दादी जी को ज़्यादा नहीं पाया लेकिन जितना भी पाया उस क्षण, उस पल के बारे में सोचती हूँ तो मन ख़ुशियों से नाचता है, गद्‌गद हो जाता है। बात उस समय की है जब कुमारियों की ट्रेनिंग में दो मास के लिए मधुबन जाना हुआ था। तब हमने दादी जी को काफ़ी नजदीक पाया। दादी जी जब कुमारियों को क्लास कराने आतीं तो हाथों में पकड़ा फूलों का सुन्दर–सा गुलदस्ता हिलाती हुई धीरे-धीरे आतीं। उनके चेहरे से ऐसा लगता जैसे हम कन्याओं पर सब–कुछ लुटाने के लिए तैयार हैं। हमें लगता था कि बस हम धन्य–धन्य हो गये।

विशेष क्लास के दौरान दादी जी कहती थीं कि आप मेरी सखियाँ हो। इतना ऊँचा सम्मान दादी जी देती थीं और पूछती थीं कि आप अपने सेन्टर में ख़ुश हो? कुछ समस्या अगर है तो दादी को चिटकी लिखो या व्यक्तिगत दादी से मिल सकती हो, दादी किसी को कुछ नहीं बतायेगी। उस समय हमें दादी जी, दादी जी नहीं लगती थीं बल्कि अपनी सगी माँ नजर आती थीं। दादी भरी सभा में हम सभी के लिए कहतीं कि मेरी सखियों के लिए आइसक्रीम बनानी है। साथ में, हम सभी बहनों के साथ ब्रह्मा भोजन भी करती थीं। हमारी ट्रेनिंग की समाप्ति के पहले दादी जी ने सौग़ात में राजस्थानी रजाई दी और कहा कि सखियो, यह रजाई किसी को भी नहीं देना, इसे अपने पास ही रखना। यह सौग़ात बाबा ने आपको दी है। ऐसा कहकर रजाई को ओढ़कर सभी के बीच में दिखातीं तो हमारे नैन गीले हो जाते थे। दादी हमें कहतीं गो सून, कम सून (जल्दी जाओ, जल्दी आओ)।

ख़ास 18 जनवरी को जब दादी जी ब्रह्मा बाबा के अनुभव सुनातीं तो उनके नैन भी बाबा के प्यार में गीले होते देखे और उनके साथ–साथ अपनी भी आँखें भर आती थीं। दादी जी के शब्दों में इतना बल था।

दादी बिना मधुबन सूना–सूना लगता है

आज जबकि साकार रूप में दादी जी नहीं रहीं तो मुझे मधुबन सूना–सूना लगता है और यह भी आभास होता है कि हमारे सिर से कोई शीतल छाया देने वाला वृक्ष हट गया। बरबस आँखें नम हो जाती हैं। इस प्रकार दादी जी चैतन्य देवी माँ स्वरूपा, ममतामयी, त्यागमयी, स्नेहमयी सम्पूर्ण बाप समान पालना देने वाली प्रतिमूर्ति थीं।

गुणों की खान दादी प्रकाशमणि जी

–ब्रह्माकुमारी कानन बहन, कोलकाता

जीवन की इस यात्रा में हज़ारों लोग मिलते हैं, उनसे अनेक मार्गदर्शन भी मिलते हैं। माँ-बाप का प्यार-पालना मिलती है, गुरुजनों से शिक्षा व सावधानी मिलती है। कभी-कभी कुछ ऐसी महान् हस्तियों की नज़र भी पड़ जाती है जिनसे जीवन पत्थर से पारस बन जाता है। दादी प्रकाशमणि जी की रूहानी नजर भी मुझ पर ऐसी पड़ी जिसने मेरे जीवन को निहाल कर दिया।

दादी जी ने ही मुझे समर्पित कराया

एक सितम्बर, सन् 1975 का वो दिन मेरे जीवन में अविस्मरणीय है, जब दादी जी के एक ही वरदानी बोल से मेरा जीवन प्रभु को अर्पण हो गया। माउण्ट आबू में स्थित मेडिटेशन हॉल में जब दादी जी ने भरी सभा में पूछा कि अभी बहुत सेवाएँ हैं देश-विदेश में, अत: कौन बाबा की सेवा में मददगार बनने को तैयार है, हाथ उठाओ। बस, मेरा हाथ अचानक उठ गया। न कोई संकल्प था और न हिम्मत थी जैसे कि उन्हें मेरे संकल्प का ही इन्तज़ार था । दादी जी ने बड़े प्यार से मुझे पास बुलाया और तुरन्त समर्पण करा दिया।

छोटी–छोटी कन्याओं प्रति दादी जी की बहुत शुभ आशाएँ होती थीं

मेरा जन्म उत्तर प्रदेश के शहर गाजियाबाद में सन् 1954 में हुआ। लौकिक माता-पिता सहित हम 6 बहनें तथा एक भाई गोपाल जी (दिल्ली पाण्डव भवन) शुरू से ज्ञानमार्ग में चलने के कारण साकार बाबा एवं दादियों की स्नेह भरी पालना प्राप्त करते रहे। उनका हमारे घर आना-जाना लगा रहता था। हम छोटी-छोटी कन्याओं के प्रति दादी जी की बहुत ही शुभ आशा रहती थी। वे कहा करतीं थीं कि अपनी लौकिक पढ़ाई करते भी अलौकिक पढ़ाई नहीं भूलो। वे दिल से चाहती थीं कि हम भी विश्व-कल्याण की सेवा करें। लौकिक पिता इलाहाबाद बैंक में रीज़नल मैनेजर के पद पर होने के कारण अनेक स्थानों पर हम ट्रान्सफर होकर रहे और जहाँ भी रहे दादी जी के स्नेह भरे, उमंग भरे पत्र तथा मीठी पालना में हम पलते रहे। लौकिक शिक्षा में बी.एड. करने के पश्चात् मैंने तो यह संकल्प कर लिया था कि ख़ूब धन कमाकर ईश्वरीय सेवा करूँगी परन्तु दादी जी की प्रभावशाली प्रेरणाओं ने, जीवन का गुणों से श्रृंगार कर विश्व-कल्याण करने की उमंग जगाई। ये गुण ही मानव को सच्चे अर्थों में धनवान बनाते हैं।

दादी जी न केवल कुशल प्रशासिका थीं परन्तु कुशल नेता भी

दादी जी एक कुशल प्रशासिका थीं । उनकी विशाल बुद्धि तथा परखशक्ति असीम थी। वे हरेक के भीतर छिपे हुए गुणों को जाग्रत कर उन्हें सेवा में लगाती थीं। अपनी कुशलता व प्रेम भरी नेतृत्व कला से वे सर्व के दिलों

पर राज्य करती थीं। सन् 1991 में ईस्टर्न ज़ोन के सभी सेवाकेन्द्रों की संचालिका बहनों को स्थानान्तरित किया गया जिससे उनके गुणों का विकास भी हुआ और वे अधिक कार्यकुशल व उदार भी बनीं।

दादी जी के शब्द हरेक के अन्दर शक्ति तथा उमंग-उत्साह भर देते थे। मुझे याद है, सन् 1982 के मेले के समय कोलकाता में विक्टोरिया मेमोरियल का ग्राउण्ड किसी कारणवश नहीं मिल पा रहा था परन्तु दादी जी ने सर्वशक्तिवान परमपिता की स्मृति दिलाकर कहा कि विक्टरी (विजय) हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है, आप सभी मिलकर शुभ-भावना रख कर प्रयत्न करो। बस उन शब्दों ने तो हमारे पर जादू कर दिया और हम भाई-बहिनों ने मिलकर, रात-भर प्रयत्न कर, दृढ़ विश्वास से सफलता प्राप्त की।

दादी जी उदारचित्त और विनम्र थीं

दादी जी अपने नेतृत्व में विशेष लॉफुल और लवफुल थीं। स्नेह भरी पालना देकर अपना बनाकर नियम मर्यादाओं पर भी चलना सिखाती थीं। एक बार किसी भाई ने पूछा, दादी जी, क्या हम मधुबन (माउण्ट आबू)नहीं आ सकते? तो दादी जी ने बड़े प्यार से कहा, क्यों नहीं, बाबा का घर है, भले आओ, ज़रूर आओ पर अपनी निमित्त टीचर बहिन से पूछकर आओ। दादी जी हमेशा कहा करतीं थीं, निन्दा हमारी जो करे, मित्र हमारा सो होय। इस प्रकार, यह स्पष्ट होता कि दादी जी कितनी उदारचित्त और विनम्र थीं।

दादी जी हरेक को शीघ्र ही निश्चिन्त भी कर देती थीं। मुझे याद आ रहा है, एक बहिन के बीमार पड़ने पर दादी जी ने पत्र में राय दी कि डॉक्टर को तुरन्त दिखाना चाहिए, उससे संकल्प व्यर्थ नहीं चलता, निश्चिन्त हो जाते हैं।

दादी जी माताओं को बहुत प्रेरणा देती थीं

घर-गृहस्थ में रहने वाली माताओं के प्रति भी दादी जी का बहुत ध्यान रहता था। वे उन्हें विशेष स्नेह-प्यार देती थीं। वे कहा करती थीं, 'हे माताओ, अब जगतमाता, शिव-शक्ति बन विश्व की आत्माओं को परमात्मा का वर्सा दिलाना है। आपका ही गायन है "वन्दे मातरम्"। दादी जी के साथ का वह अनमोल क्षण हम भूल नहीं सकते, जब 2003 में कोलकाता में मेगा प्रोग्राम होने की बात चल रही थी। दादी जी के प्रेरणादायी, हिम्मत भरे बोल मुझे याद हैं। दादी जी ने कहा था, "कानन, कोलकाता में शाही मेला करना, ठीक है, कुछ मदद चाहिए तो हमें अवश्य बताना।" ये बोल सुनकर लगा कि यह कार्य जैसे परमात्मा व दादी जी स्वयं करवा रहीं हैं।

ऐसी थीं मीठी-मीठी दादी जी हमारी, जिन्होंने हमें ज्ञान-मार्ग में चलना तथा सेवा के पथ पर उड़ना और उड़ाना सिखाया।

दादी जी धरती पर फ़रिश्ता थीं

– ब्रह्माकुमारी पुष्पा बहन, पाण्डव भवन, दिल्ली

प्यारी दादी जी को मैं बाल्यकाल से ही देखती आ रही थी। यूँ तो मैं 9-10 वर्ष की आयु में प्यारे साकार बाबा और प्यारी मम्मा से भी मिली, गोद भी ली लेकिन आयु छोटी होने के कारण ख़ास बातें याद नहीं रहीं। दादी जी मुझे हमेशा बड़े प्यार से पुष्प कहके बुलाती थीं जो मुझे बहुत अच्छा लगता था और अपनेपन की, समीपता की बहुत भासना आती थी, यह पुष्प सम्बोधन मेरे दिल को अन्दर तक छू लेता था।

उस समय मुझे दादी का चेहरा नहीं साकार बाबा का ही चेहरा दिखायी दे रहा था

जब मैं एम.ए. की पढ़ाई का लास्ट ईयर कर रही थी, मैं आलराउन्डर दादी जी के साथ मधुबन आई थी। दीदी मनमोहिनी जी की हमारे सारे परिवार को राजौरी गार्डन सेन्टर में पालना मिली थी। दीदी मनमोहिनी ने, आलराउन्डर दादी के साथ मुझे पाण्डव भवन दिल्ली में सेवार्थ जाने का निर्णय दिया। तब आलराउन्डर दादी जी और मैं बड़ी दादी जी से मिली और सुनाया कि ऐसे पाण्डव भवन में सेवा पर जा रही हूँ। तब दादी जी ने बड़े प्यार से छुट्टी दी और बहुत देर दृष्टि देने के बाद बातचीत करते हुए कहा कि यह समझदार है, बहुत गम्भीर है, लायक है। उस समय मुझे दादी का चेहरा नहीं दिखायी दे रहा था, साकार बाबा का ही चेहरा दिखायी दे रहा था। मेरे मुख से भी निकला, "जी बाबा"। बाल्यकाल में, साकार बाबा ने हमारा हाथ पकड़कर, बड़े प्यार से दृष्टि दी थी। ऐसा अहसास मुझे बाद में भी कई बार दादी जी के द्वारा हुआ। दादी जी के ये शब्द उस समय जैसे वरदान लग रहे थे क्योकि मैं अपने को इतनी योग्य नहीं समझती थी। सचमुच, तब से इस आत्मा में एक हिम्मत और बल भर गया।

दादी जी छोटे–बड़े सभी को अपनापन और बहुत मान देती थीं

दादी जी के अंग-संग के अनेक अनुभव हैं, जिनसे हमने बहुत सीखा और जीवन में आगे बढ़ते रहे। प्यारी दादी जी के बोल, चाल, व्यवहार से कभी लगता ही नहीं था कि दादी स्वयं को चीफ़ समझ रही हैं या वो भान है। दादी जी एक बार विदेश से दिल्ली आयी, तब बड़े ही प्यार से आलराउन्डर दादी जी को गिफ़्ट दिया और कहा, यह आप अपनी सन्दल पर बिछाओ। वह बहुत सुन्दर झालर वाला बैड कवर था। दादी आलराउन्डर ने मुस्कराते हुए मना किया। दादी जी ने उसी क्षण स्वयं उसे खोलकर, अपने हाथों से दादी जी के पलंग पर बिछा दिया, फिर आलराउन्डर दादी को भी अपने हाथ से पकड़कर पलंग पर बिठा दिया और कहा, देखो, अब अच्छा लग रहा है ना! सचमुच दादी जी सबको इतना अपनापन और मान देती थीं जो सब-कुछ एक ही है, एक ही परिवार है, ऐसा दिखाई देता था।

टीचर्स बहनों की मधुबन में भट्ठी थी और दादी जी पाण्डव भवन के मेडीटेशन हाल में हम सब बहनों को रास करवा रही थीं। थोड़ी ही बहिनें थीं, दो-तीन सर्कल बनाए थे। दादी जी जब हमारे सर्कल में आयीं तो मैं दादी जी के साथ रास करने लगी और दादी जी ने मुझे गले लगा लिया। वह इतनी सुखद अनुभूति और लवलीन अवस्था थी, सब-कुछ जैसे कि भूला हुआ था। अब तक इतने वर्षों बाद भी मैं उसी अनुभूति में खो जाती हूँ। दादी जी के नेत्रों से जैसे प्रेम की गंगा बह रही थी।

दादी जी की साधारण से साधारण बात में भी बड़ी ऊँची भावनाएँ समाई होती थीं

दादी जी अक्सर सेवा-अर्थ देहली में आती ही थीं और पाण्डव भवन में रुकती थीं। एक बार जैसे ही हाल में कार्यक्रम पूरा हुआ दादी जी बरामदे में आकर बैठीं, सभी वापिस जा रहे थे। तभी एक परिवार की 5 वर्ष की बच्ची और 3 वर्ष का उसका भाई, बरामदे में आने की कोशिश कर रहे थे। वहाँ दो स्टैप थे चढ़ने के, छोटा बच्चा चढ़ नहीं पा रहा था। बच्ची ने अपने भाई को उठा लिया, पर ठीक से उठा नहीं पा रही थी। जैसे-तैसे उसे छाती से लगाकर स्टैप चढ़कर बरामदे में आ गयी कि कहीं मेरा भाई गिर न जाये। दादी यह सब बड़े ही ध्यान से देख रही थीं । मैं दादी जी के पास ही खड़ी थी । दादी जी ने कहा, पुष्पा, देखा तुमने, कितना प्यार है इसको अपने भाई से। यह है प्यार। जैसे दादी जी के उस कहने में भी गहरी भावनाएँ थीं और बड़े ही राज़ से दादी जी यह सब कह रही थीं। हमने अनुभव किया कि दादी जी की साधारण से साधारण बात में भी बड़ी ऊँची भावनाएँ, बेहद दृष्टिकोण, विशाल हृदय और शुभ कामनाएँ समाई हुई होती थीं।

दादी जी को, मुरली सुनाते हुए मैंने कई बार सफ़ेद-सफ़ेद चमकते फ़रिश्ते के स्वरूप में देखा है। मैं कइयों को सुनाती भी थी कि आज दादी धरती पर फ़रिश्ता रूप थीं।

दादी जी दैवी फुलवाड़ी की महामल्लिका थीं

–ब्रह्माकुमारी मीरा बहन, सान्ताक्रुज, मुंबई

हमारे जीवन में दादी जी की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण रही। हमारा जीवन दादी जी के कारण असीम लाभान्वित हुआ। पन्द्रह साल की उम्र में मैं ज्ञान में आयी और उसके थोड़े समय बाद ही दादी जी के सान्निध्य में आ गयी। मुझे 48 वर्षों से उनके मार्गदर्शन में अविस्मरणीय अनुभव हुए। जब भी मैं दादी जी से मिलती थी तो महसूस होता था कि दादी सचमुच दादी माँ हैं। हमेशा उनसे अपनापन महसूस हुआ। दादी जी जब भी मुंबई में आती थीं तो हर बार मैं उन्हें मिलती थी।

दादी जी का हर बोल वरदान ही था

सन् 1975 में शिवरात्रि के आस–पास सान्ताक्रुज (पूर्व) के नये सेन्टर का उद्घाटन कार्यक्रम था। कार्यक्रम में मुंबई के सभी बी.के. भाई-बहनें आये थे। दादी जी ने उस समय मेरे सिर पर हाथ रखकर वरदान दिया कि ख़ूब सेवा करो, यहाँ पर ख़ूब सेवा होगी। उनके वो वचन कितने सार्थक रहे, वो आज नज़र आ रहा है। उस दिन उन्होंने मुझे हार भी पहनाया, उस समय इतनी ख़ुशी हुई जिसका बयान शब्दों में करना मुश्किल है। उसके बाद बहुत ज़्यादा संख्या में भाई–बहनें आने लगे। उन्हें देखकर दादी जी कहती थीं कि मीरा, यह सान्ताक्रुज सेन्टर, तीन सेन्टर के बराबर है।

दादी जी को देख आनन्द के स्रोत का अनुभव होता था

दादी जी बहुत प्यार से हमारी परवरिश करती थीं। दादी जी की हर्षितमुखता तो बेमिसाल थी। हमने हमेशा उनको प्रसन्नचित्त ही पाया है। दादी जी नम्रता का एक दिव्य आदर्श थीं। सर्वगुणों की खान दादी जी में प्रेम और नियम का समन्यव हमने हमेशा देखा। उन्हें देखकर आनन्द के स्रोत का अनुभव होता था। जब भी मैं दादी जी से मिलने जाती थी तो उनके दिल का दरवाज़ा सदैव खुला पाया। उनके व्यक्तित्व की यही सबसे बड़ी बात थी। दादी जी का नूरानी ख़ुशनुमा चेहरा हम ब्राह्मणों के लिए सर्वोच्च आकर्षण था। उनका जीवन हम ब्रह्मावत्सों के लिए आदर्श उदाहरण है और रहेगा।

उनकी दृष्टि में अदम्य शक्तियाँ छिपी रहती थीं

कांदीवली सेन्टर खुला, तो दादी जी जब ट्रेन से आया करती थीं तो मैं उन्हें लेने–छोड़ने स्टेशन पर जाती थी। तब उनके बहुत प्यार का अनुभव किया करती थी। मेरे चेहरे पर प्यार से हाथ फेरती थीं तो ऐसा अनुभव होता था कि दादी जी कितनी साफ़ दिल की हैं ! उनकी दृष्टि में छिपी हुई अदम्य शक्तियों का अहसास होता था। बड़ों के साथ बड़ी, छोटों के साथ छोटी – ऐसी ममता की मूर्ति थीं दादी जी। दादी जी अपनी दिव्य आभा, विशाल बुद्धि, मुग्ध मुखमंडल, शक्तिशाली दृष्टि से सबको निहाल कर देती थीं

जब भी हम मधुबन जाते तो जब तक दादी जी से नहीं मिलते तब तक चैन नहीं आता था। एक बार मुझे मधुबन से मुंबई जाने के लिए जल्दी में निकलना पड़ा, तो दादी जी ने बहनों से पूछा, मीरा चली गई? इतना ध्यान रखती थीं। उनकी इतनी समीपता के कारण यह अहसास होता था कि ये मेरी दादी जी हैं। इतने लोगों में दादी ने मुझे याद किया।

दादी जी का मुरली क्लास इतना मधुर और रमणीक होता था कि लगता था, चात्रक की तरह सुनते ही रहें। सुबह की क्लास जब वे कराती थीं तब सब ख़ुशी में झूम उठते थे। मुरली के बाद दादी दोनों हाथ हिलाकर ऐसी दृष्टि देती थीं कि अतीन्द्रिय सुख का अनुभव होता था।

दादी जी सबकी प्रेरणास्रोत थीं

दादी जी की मधुर हँसी अभी तक कानों में गूँजती है। सारा दिन उन में ज्ञान का चिन्तन चलता था। ज्ञान-रंगों से चित्रांकित उनकी वो भोली मुस्कराहट, योग-तपस्या की प्रकाश-रश्मियाँ बिखेरते उनके निर्मल नयनों की हमारे दिल पर गहरी छाप लगी है। एक बार जो भी दादी जी से मिला, उसके हृदय में दादी जी की अमिट छाप लग जाती थी। उनके प्यार और मार्गदर्शन ने मुझे आध्यात्मिक मार्ग की ओर अग्रसर किया।

दादी जी मेरे अलौकिक जीवन की सिर्फ दाता ही नहीं लेकिन पुरुषार्थ के लिए मार्गदर्शिका और भाग्य-विधाता भी थीं। रूहानी ख़ुशी और मौलाई मस्ती की प्रतीक दादी जी मेरे लिए सदैव आदर्श हैं। दादी जी न केवल प्रकाश का पुंज थीं बल्कि उन्होंने विश्व के विभिन्न भागों से हीरे चुनकर उन्हें सुनहरे युग की स्थापना में सहयोगी बनाया।

दादी जी को देखकर अलौकिक अनुभूतियाँ होती थीं

दादी जी का चेहरा उनके मन का दर्पण था। पग–पग पर सद्भावना, श्रेष्ठ विचार उनसे हमें मिलते थे। सेवा के लिए दादी जी हमारे में बहुत उमंग, उत्साह और शक्ति भरती थीं। वी.आई.पी. और नये भाई–बहनों को लेकर जब हम शिविर में जाते थे तो बहुत प्यार से उनको शिक्षा देती थीं। उन भाई–बहनों को भी दादी जी को देखकर अलौकिक अनुभूतियाँ होती थीं।

दादी जी की दृष्टि में भगवान के प्यार का अनुभव होता था

दादी जी ने हर एक ब्रह्मावत्स की बहुत दिल से एवं प्यार से पालना की। एक बार अव्यक्त बापदादा से मिलने हम पाण्डव भवन गये थे। उन्हीं दिनों मेरा जन्मदिन बीच में आया। मैंने तो किसी से कुछ कहा नहीं था लेकिन पता नहीं, दादी जी को कैसे ख़बर पड़ी कि मेरा जन्मदिन है, तो उन्होंने मेरे लिए बहुत बड़ा केक बनवाया और सभी भाई–बहनों के साथ केक काटकर उमंग–उत्साह से मेरा जन्मदिन मनाया। मैं तो आश्चर्य चकित हो गयी। मेरी ज़िन्दगी का यह अविस्मरणीय जन्मदिन था। इसे मैं कभी भूल नहीं पाऊँगी।

मैंने उनकी दृष्टि से भगवान के प्यार का अनुभव किया है। दादी जी कहा करती थीं, मेरे नयन में बाबा है, मेरे मुख पर बाबा है, मुझे बाबा ही चला रहा है, वही मुझे शक्ति दे रहा है। उनका दिव्यता सम्पन्न व्यक्तित्व हमें चुम्बक के जैसे आकर्षित करता था। उनके मुखमण्डल पर विलक्षण जादू था।

वे ख़ुदादोस्त थीं

दादी जी का आदर्श जीवन देखकर लगता था कि जीवन हो तो ऐसा हो। प्रेरणा आती थी कि हमें भी ऐसी ही गॉडली स्टुडेण्ड लाइफ रखनी है। उन्हें देखकर मुझमें अलौकिक ऊर्जा का प्रवाह बहता था। दादी जी "दैवी फुलवाड़ी की महामल्लिका" थीं, उनके संग में हम झूम उठते थे। हम तो मन में शिव बाबा से बातें (वार्तालाप) करते हैं लेकिन दादी जी को बाबा के कमरे में शिव बाबा से ऐसे वार्तालाप करते हुए हमने देखा है जैसे कि वे आपस में व्यक्त में बातें कर रहे हैं। ऐसी दिव्य विभूति दादी जी के बारे में जितना भी कहें, वो बहुत कम है।

दादी जी का प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तित्व था

–ब्रह्मकुमारी चंद्रिका बहन, महादेव नगर, अहमदाबाद

बात सन् 1966 की है। आदरणीया दादी प्रकाशमणि जी कुछ सदस्यों के साथ मुम्बई से माऊंट आबू जा रही थीं। अहमदाबाद स्टेशन पर ट्रेन बदलनी थी जिस कारण मैं दादी जी के लिए चाय-नाश्ता आदि लेकर गई थी। ट्रेन रुकने पर मैं कम्पार्टमेन्ट के अंदर गई तो पाया कि दादी जी एक राशन से भरी बोरी पर बैठी थीं और साथी पार्टी को सीट पर बिठाया हुआ था। यह दृश्य देखते ही मुझे दादी जी की त्यागवृत्ति के प्रति बहुत ही सम्मान पैदा हुआ और उनके प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तित्व को देखते हुए यह भाव पैदा हुआ कि मुझे इन दादी जी जैसा ही बनना है। हालांकि दादी जी से मेरा पूर्व परिचय नहीं हुआ था, पहली बार ही मिल रही थी परन्तु उनके प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तित्व की झलक मेरे लिए अमिट बन गई।

दादी जी मेरी प्रेरणा स्रोत थीं

दादी जी मुझ पर बहुत ही अपनेपन का अधिकार रखती थी। एक बार अव्यक्त बापदादा की पधरामनी होने वाली थी। हम सभी हिस्ट्री हॉल में बैठ गए थे। दादी जी ने मुझे अचानक बुलाया और कहा, चंद्रिका, तुम म्यूजियम की सर्विस पर जाओ, अभी वहाँ पर बहुत आवश्यकता है। दादी जी ने कहा और मैं चल पड़ी। मुझे लगता है, दादी जी की त्यागवृत्ति ने ही मेरे में त्याग का सद्गुण भरा। उस दिन जब मैं म्यूज़ियम से वापस आई तो दादी जी ने मुझे बापदादा से मिलाया। तब बाबा ने मुझे वरदान दिया, "बच्ची बहुत चतुर है, त्याग का पद्मगुणा भाग्य जमा कर लिया।"

ऐसे ही एक अन्य प्रसंग है। मधुबन में कुमारियों की एक मास की ट्रेनिंग होने जा रही थी। मैं भी उस ट्रेनिंग के लिए आई थी। अव्यक्त बापदादा ने मुझ से पूछा, कौन-सा नम्बर लेंगी? मैंने जवाब दिया, फर्स्ट नम्बर। आश्चर्य की बात थी कि दूसरे दिन सुबह दादी कुमारका जी ने मुझे बुलाकर कहा, 'तुम्हें ट्रेनिंग में नहीं रहना है, आज से तुम म्यूजियम सेवा पर जाओगी।' एक सेकण्ड के लिए मेरे मन में आया, मेरी ट्रेनिंग का क्या होगा लेकिन फिर तुरन्त ही दादी जी की बात स्वीकार कर ली और लगातार म्यूज़ियम सर्विस पर जाती रही। यह थी दादी की त्याग करवाने की शक्ति।

जैसे मुझे दादी में परम विश्वास था, दादी जी का भी मेरे में पूर्ण निश्चय था कि चंद्रिका मेरे कहने पर चलेगी। एक बार दादी जी का मेरे पास पर्सनल लेटर आया – देखो चंद्रिका, बाबा का भावनगर का सेन्टर थोड़ा ढीला हो गया है। चन्द्रु बहन की माँ ने खोला है और चन्द्रु बहन अमेरिका गई हुई है। तो इस सेवाकेन्द्र को अच्छी तरह से, नारणपुरा के भाई-बहनों के सहयोग से उठाना है। दादी की यह आश तुम्हें पूरी करनी है। दादी जी के कहने पर इस सेवा को मैंने स्वीकार किया और लगातार डेढ़ साल तक पुरुषार्थ किया। फिर वहाँ 150 भाई-बहनों की नियमित क्लास होने लगी। मुझे लगता है कि दादी जी को आत्माओं की शक्ति की जबरदस्त परख थी और व्यक्तियों से काम कराने का गज़ब का तरीका भी था।

दादी जी एक कुशल प्रशासिका रहीं

दादी जी किस तरह एक कुशल प्रशासिका रहीं उसका मुझे एक अद्भुत अनुभव हुआ। सन् 1974 में, अहमदाबाद में सेवा का एक नवीन प्रयोग बाबा ने करवाया जिसके लिए प्रथम तीन दिन पूर्णतया मौन में रही और प्रोजेक्ट का प्लानिंग किया। प्रोजेक्ट था राजयोग शिविर। एक ही साथ पाँच राजयोग शिविरों की तीन-तीन दिनों की शृंखला बनाई थी। इस राजयोग शिविर में जिन्होंने भाग लिया, उन्होंने बहुत ही अद्भुत अनुभव किये। किसी को ब्रह्मा

बाबा का साक्षात्कार हुआ, किसी ने ज्योति देखी। परम शांति का अनुभव तो सभी ने किया और जीवन में बदलाव लाने का बहुतों ने संकल्प किया। व्यसनों का त्याग, अशुद्ध भोजन का त्याग करने के लिए प्रतिज्ञाबद्ध हुए। कइयों ने ब्रह्मचर्य व्रत और नियमित राजयोग का अभ्यास करने का संकल्प किया। मैंने यह सारा समाचार आदरणीया दादी जी को लिखकर के भेजा। समाचार पढ़ते ही दादी जी ने मुझे अपने पास मधुबन में बुलाया। उस समय यज्ञ की कुछ बड़ी निमित्त बहनों की मीटिंग थी। दादी जी ने मुझे कहा, तुम इन सभी को राजयोग शिविर कराओ। मैं संकोच कर रही थी क्योंकि उस समय मैं नई भी थी और उम्र भी बहुत छोटी थी। मात्र 23 साल की उम्र थी। दादी जी ने मनोहर दादी जी को मेरी बाजू में बिठाया और कहा, शिविर कराओ। मैंने दादी जी की आज्ञा का पालन किया। जब इन बड़ी बहनों ने शिविर के अनुभव दादी जी को सुनाए तो दादी जी ने मुझे कहा, अब तुम यहीं बैठ जाओ। इन सारे लेक्चर्स की पुस्तक लिखो और उसकी मार्गदर्शिका भी लिखो। मैंने करीब तीन दिन में दादी जी को यह सब तैयार करके दिया। दादी जी ने केवल दो दिन में उस पुस्तक की प्रिंटिंग करवा ली और उस समय जितनी भी टीचर्स थी, सभी को फ्री में सौगात दी। आवश्यक कार्य को समय देकर कितना जल्दी करना चाहिए, यह दादी जी से सीखने को मिला।

फिर दादी जी ने कहा, देखो चंद्रिका, यह नया भवन बन रहा है ना, इस राजयोग भवन में राजयोग शिविर ही चलेगी और राजयोग भवन तैयार होते ही मुझे आदेश दिया, अहमदाबाद से शिविर का ग्रुप लेकर आओ और यहाँ ही शिविर कराओ। तभी से दादी जी ने राजयोग शिविर प्रारंभ कराये।

दादी नम्बरवन कैसे बनीं?

मेरे सौभाग्य की मैं जितनी महिमा करूं, कम ही है। साकार बाबा ने मुझे और वेदान्ती बहन को आदरणीया दादी जी के साथ, उस समय के भारत के सभी सेवाकेन्द्रों के टूअर पर भेजा था। आगरा, जयपुर, कानपुर, पटना, लखनऊ, उदयपुर, दिल्ली और मुम्बई आदि स्थानों का टूअर दादी जी के साथ पूरा करने के बाद मैंने दादी जी से एक प्रश्न पूछा था, दादी जी, आप दादी जी कैसे बनी? दादी जी ने कहा, यह भी कोई सवाल होता है? मैंने कहा, यही मेरा सवाल है और आपको जवाब देना होगा। तब दादी जी ने कहा, देखो चंद्रिका, बाबा को कोई भी नया कार्य कराना होता तो सभा में सभी से पूछता, यह काम कौन करेगा? सबसे पहले मैं हाथ खड़ा कर देती थी, चाहे वो काम मुझे नहीं भी आता हो। फिर उस कार्य के बारे में मम्मा से या बाबा से पूछ लेती थी। कार्य के प्रति तत्परता और बाबा के आदेश को तुरंत स्वीकार करने के सेवाभाव के आधार से दादी जी ने नंबरवन प्राप्त किया।

दादी जी श्रेष्ठ तपस्विनी थीं

दादी जी श्रेष्ठ तपस्विनी थी। लोगों के दिलों के भावों को जानकर, औरों को ख़ुश करके स्वयं को मोल्ड करने वाली थी। एक बार, अहमदाबाद में नवरंगपुरा विस्तार में भव्य मेले का आयोजन किया गया था। उद्घाटन के लिए गवर्नर आने वाले थे और दादी जी का भी आने का प्रोग्राम था लेकिन किसी कारण से दादी जी के आने का प्रोग्राम केन्सल हुआ और मेरे पास समाचार आया कि दादी जी नहीं आयेगी। मुझे थोड़ा धक्का-सा लगा। मैंने दादी जी को फोन किया, तब भी दादी जी ने कहा, सॉरी चंद्रिका, दादी नहीं आ सकेगी। दादी जी के ये शब्द सुनकर मैं कर भी क्या सकती थी लेकिन फिर मैंने प्यारे बाबा से बात की और बाबा को कहा, किसी भी हालत में आपको दादी को अहमदाबाद में लाना होगा। बाबा के साथ यह मेरी हठीली याद थी। दो दिन के बाद दादी जी का फोन आया, ठीक है चंद्रिका, दादी तुम्हारे पास आ जाएगी। हमें ख़ुश करने के लिए दादी जी ने अपना प्रोग्राम बना ही लिया। ऐसी थीं हमारी दादी जी।

दादी जी के बोल वरदानी बोल थे

–ब्रह्माकुमारी सत्यवती बहन, तिनसुकिया

दादी जी के साथ रहने का हमें बहुत चांस मिला। दादी जी के साथ की अनेक यादें समाई हुई हैं। समय प्रति समय वे स्मृति में आती रहती हैं। दादी जी बहुत सरल और मधुर स्वभाव वाली थी। कोई भी बात को जल्दी स्पष्ट और हलका कर देती थी।

वे कभी भी अपनी महिमा स्वीकार नहीं करती थीं

दादी जी के बोल वरदानी बोल थे। जब वे तिनसुकिया में पहली बार आई थीं, तब यहाँ सेवाकेंद्र का कोई स्थायी भवन नहीं था। तब दादी जी ने कहा कि तिनसुकिया मुख्य स्थान है, यहाँ पर कोई स्थायी भवन बनना चाहिए। इसी वरदानी बोल के प्रभाव से बहुत ही कम समय में भवन बनकर तैयार हो गया, जिसका उद्घाटन दादी जी के ही कर कमलों से हुआ और उसे देखकर दादी जी बहुत ख़ुश हुईं और बाबा के चमत्कार का वर्णन करती रहीं। इस प्रकार यह भी देखने में आता था कि दादी जी के दिल में बाबा ही समाया था। वे कभी भी अपनी महिमा स्वीकार नहीं करती थी।

दादी जी की मातृवत् पालना थी

तिनसुकिया भारत के एक कोने में है। यहाँ से ट्रेन द्वारा मधुबन पहुँचने में 4-5 दिन लग जाते हैं, तो मधुबन पहुँचकर दादी जी के पास जाते ही वे पहले तो रास्ते का सारा समाचार पूछती थी। तो ऐसा लगता था कि जैसे माँ, बच्चों से सारा हाल-चाल पूछ रही है और सचमुच तब रास्ते की सारी थकावट दूर हो जाती थी।

वे साकार बाबा की अनुभूति कराती थीं

मैं प्यारे ब्रह्मा बाबा के बहुत ही समीप थी और दिल का अटूट प्यार बाबा से था। कोई भी दिल की बात बड़ी ही हलके होकर मैं बाबा को सुनाती थी। बाबा के अव्यक्त होने के बाद दादी जी ने भी पूरा वैसा ही पार्ट बजाया।

स्नेह की प्रतिमूर्ति दादी माँ

–ब्रह्माकुमारी किरण बहन, काठमाण्डू

जिनके बारे में कितना भी कहें पर कम ही लगता है वे प्रतिभाशाली सबकी प्यारी आदरणीया दादी जी स्थूल रूप से हमारे बीच नहीं हैं परन्तु उनकी यादें भुलायी नहीं जा सकती। वह तेजस्वी मस्तक, रूहानियत और प्यार भरी आँखें, उदारता के प्रतीक सदा हर्षित एवं ओजस्वी बोल, सफ़ेद बालों में छिपे सफ़ेद विचार, रूई समान कोमल एवं वरदानी हस्त, विशाल हृदय, सदा उमंग-उत्साह भरे कदम – ऐसी थीं मेरी दादी माँ।

दादी जी की शुभ भावना ने ही मुझे समर्पित किया

मुझे हमेशा महसूस होता है कि दादी जी सदा मेरे साथ हैं। हम बचपन से ही दादी जी की पालना लेकर बड़े हुए हैं। बचपन में ही सारा परिवार ज्ञान में आ गया था। इस यज्ञ में ही बड़े हुए। दादी जी की ही शुभ भावना, शुभकामना, सकाश, मेरे प्रति विश्वास तथा प्यार भरी बातों ने खींचकर मुझे समर्पित करा दिया।

दादी जी ने अपने हाथों से मुझे चाय पिलायीं

सन् 1991 की बात है, काठमाण्डू से हम 4 बहिनें भट्ठी में आयी थीं। दादी जी ने कहा कि सभी टीचर्स की ग्लोबल हॉस्पिटल में चेकिंग होनी चाहिए। मेरी चेकिंग के बाद डॉक्टर ने कहा, पेट के लिए ऑपरेशन कराना पड़ेगा। फौरन दादी जी ने मुझे डॉ, बनारसी भाई के साथ ऑपरेशन कराने मुंबई भेजा। ऑपरेशन के बाद मधुबन में वापिस आये। आते समय संयोगवश मुम्बई से दादी जी की ट्रेन में हमारी भी टिकट थी। मैंने अपने को बहुत सौभाग्यशाली समझा कि आज की रात्रि ट्रेन में दादी जी के साथ रहेंगे। ऑपरेशन को 4 दिन हुए थे। दादी जी के साथ रहते सारा दर्द दूर हो गया। दादी जी ने साथ ही रखा और खिलाया। बाद में, ख़ुद ही पर्स से टार्च निकालकर ऑपरेशन का घाव देखा और कहा, यह जल्दी ठीक हो जाएगा। रात में सोते समय लगा कि मैं दादी जी की गोदी में सोई हुई हूँ। सुबह अहमदाबाद उतरना था, दादी जी के पास दो कप चाय थी, साथ में मोहिनी दीदी भी थीं। मेरे साथ एक बहन और भी थी। हम चार थे। दादी जी ने पहले मुझे चाय दी। मैंने कहा, दादी जी, यह तो आप के लिए है, आप पी लीजिए, चाय कम पड़ जायेगी। दादी ने कहा, किरण तुम बीमार हो, दादी बीमार नहीं है इसलिए यह चाय पहले तुम्हें पीनी चाहिए। फिर दादी ने अपने हाथों से मुझे चाय पिलायी। मेरी आँखों में आँसू आ गये कि ख़ुद एक घूँट भी नहीं पीया और पहले मुझे पिलायी। जैसे माँ अपने बच्चों को खिलाये बिना नहीं खाती, ऐसा ही अनुभव दादी जी के द्वारा हुआ।

दादी जी स्वच्छता और सादगी की अवतार थीं

एक बार काठमाण्डू (नेपाल) में विश्व हिन्दू महासम्मेलन हुआ था। उस समय दादी जी नेपाल में आयीं थीं। वहाँ बहुत सारे सन्त, महन्त बड़े-बड़े महामण्डलेश्वर देश-विदेश से आये हुए थे। उस प्रोग्राम में दादी जी को भाषण करना था परन्तु स्टेज बहुत बड़ी थी। दादी जी साधारण चौकी पर बैठी थी जिस पर एक पतली चादर थी, दरी भी नहीं थी। हमने दादी जी से पूछा, दादी, आप कैसे बैठेंगी? आपको मुश्किल होगी। तो दादी जी ने कहा, मुझे आज इन महामण्डलेश्वरों को तीर लगाना है। बाबा का सन्देश देना है, मुझे इतनी ख़ुशी है कि पट पर बैठकर भी इन्हें सन्देश देना है। इतना उमंग-उत्साह था। एक घण्टे तक भाषण किया। बाद में हमने पूछा, दादी जी, कोई दिक्कत तो नहीं हुई? तो दादी जी ने कहा, नहीं। आज एक घण्टा बाबा बोला है, दादी नहीं। इतनी देही-अभिमानी थीं। श्वासों श्वास बाप में समायी हुई, स्वच्छता और सादगी की अवतार थीं।

दादी जी ने सिम्पल रह सैम्पल बनके दिखाया। सदा हर एक को उमंग देते हुए गिरे हुए को उठाया। हर बात में अच्छा-अच्छा करते अच्छा ही बनाया, सबके दिलों को जीत कर, सबको अपना बनाया और सब की दादी बन गयी।

वाह, भाग्य विधाता की अनुपम रचना, दादी प्रकाशमणि जी!

–ब्रह्माकुमारी शोभा बहन, पणजी, गोवा

इस दुनिया में ऐसी भी महान् विभूतियाँ जन्म लेती हैं जो अपने पीछे बहुत सारी स्मृतियाँ, प्रेरणाएँ सबके लिए छोड़कर जाती हैं। ऐसे ही हैं हमारी अति प्यारी, अति मीठी आदरणीया डॉ. प्रकाशमणि दादी जी। दादी जी के बारे में क्या कहें, जितना भी कहना चाहें, लिखना चाहें, शब्द अधूरे हैं। दादी जी का जीवन संपूर्ण है, सार्थक है एवं प्रेरक है।

उस हर्षितमुख को देख रास्ते की सारी थकावट मिट गई

मैंने दादी जी को सबसे पहले तब देखा जब मैं पहली बार बाबा से मिलने 1979 में, मधुबन गई थी। उस समय पाण्डव भवन के आँगन में कुर्सी पर बैठे हुए, रूहानी हर्षितमुख द्वारा दादी जी, आने वालों का स्वागत नयन मुलाक़ात से और कांध हिलाते हुए कर रही थीं। उनको देखते ही रास्ते की सारी थकावट मिट गई, मन ख़ुशियों में झूम उठा – वाह! आते ही हमारे विश्व विद्यालय की मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि जी के दर्शन और हर्षित चेहरे द्वारा ही स्वागत हुआ। वाह रे मेरा भाग्य, वाह भाग्यविधाता की अनुपम रचना! बहुत ही ख़ुशी हुई।

उन दिनों दादी जी आते-जाते आँगन में मिलतीं, क्लास करातीं तो उस अपनेपन की भासना और खोये हुए परिवार से मिलने का आनंद कुछ और ही था। दादी जी के एक-एक शब्द में ऐसी ताक़त थी जो पुराना भूलना और इस जीवन को अपनाना कभी कठिन नहीं लगा, और ही आश्चर्य लगता था कि दादी जी कैसे इन सबकी पालना करती हैं, कैसे हरेक से प्रेम से चलती हैं। दादी जी में कमाल का बेलेन्स था, लव और लॉ का, गंभीरता और रमणीकता का। यह एक-एक बात हमने बहुत नज़दीक से देखी।

दादी–दीदी की जोड़ी...

जब शुरू-शुरू में हम बाबा से मिलने जाते थे तो विदाई के समय दादी जी और दीदी जी (मनमोहिनी जी) दोनों सबको बहुत ज्ञान रत्नों से सजाते, हँसाते, बहलाते और जब विदाई की टोली (बादाम, किसमिस, मिश्री) देने का समय आता था, तो दीदी जी बहुत स्नेह में डूबी हुई दृष्टि देतीं। दादी जी बहुत गंभीर तथा शक्ति रूप हो जाती थीं जो पूरे साल भर के लिए उन दोनों के स्नेह और शक्ति से भरी विदाई, बधाई महसूस होती। रोते भी रहते थे और ख़ुशी में उड़ते भी रहते थे। भगवान तेरे घर का शृंगार जा रहा है... यह गीत सुनकर रोमांच होता था। अभी भी वह दृश्य याद करते हैं तो मन गद्गद होता है, दादी जी का शक्तिरूप सामने खड़ा हो जाता है, बहुत बड़े सहारे और शक्ति का अहसास होता है।

दादी जी की भावना कितनी ऊँची थी...

कुछ साल पहले की बात मुझे याद आती है। मैं मधुबन में थी, वार्षिक मीटिंग चल रही थी। टीचर्स बहनें अपने अनुभव और सेवाओं के समाचार सुना रही थीं। दादी जी अध्यक्षीय स्थान पर थीं। बीच में ब्रेक के समय हम (मैं और कोल्हापुर की सुनंदा बहन जी) उस हॉल से उठकर बाहर जा रहे थे। अचानक सामने से दादी जी आ गईं। दादी जी ने हमें देखते ही, अपने दोनों हाथ हमारे हाथों से मिला दिए। स्नेह भरी दृष्टि देते, मुस्कराते

हुए कहा, "दादी को मालूम है, आप बहुत सेवा करते हो लेकिन सभा में सुनाते नहीं हो।" दादी जी के ये बोल सुनकर जैसे अंदर ही अंदर गद्‌गद हो गई। सचमुच, हम कभी सुनाते नहीं थे लेकिन दादी जी का एक-एक की तरफ़ कितना ध्यान और कितनी ऊँची भावना थी जो हरेक का उमंग-उत्साह बढ़ाकर आगे बढ़ाती रहती थीं।

दादी जी तो बाप समान ऊँची हस्ती थीं

ऐसे ही वर्ष 2001 में दादी जी गोवा आयी थीं। दो बार दादी जी का गोवा आना केन्सल हुआ था। जब भी हम मधुबन में दादी जी से मिलते, भले ही हम गोवा दौरे के बारे में कुछ नहीं बोलते लेकिन दादी जी ही हमें याद दिलातीं, "दादी गोवा ज़रूर आयेगी।" ड्रामा अनुसार वह भी दिन आया जब दादी जी का गोवा में आगमन हुआ। सन् 2001 में, मार्च 27 से 31 तक गोवा में प्रोग्राम बना। चार दिन पूरे राज्य में उमंग-उत्साह और ख़ुशियों का वातावरण रहा। एक-एक की तरफ़ दादी जी का ध्यान था। सेंटर की चीज़ों को भी बहुत ध्यान से देखतीं और अपनी अमूल्य राय भी देतीं। रात के भोजन के बाद मैं दादी जी के संग आँगन में चक्कर लगा रही थी। कई बातें दादी जी मुझसे शेयर कर रही थीं। मेरा हाथ दादी जी के हाथ में था। अचानक ही मेरा हाथ थोड़ा-सा दबाते हुए और बड़े प्रेम से मेरी तरफ़ देखते हुए उन्होंने कहा, "शोभा, तुमने दादी को बहुत सुख दिया!" वह मुलायम हाथ का स्पर्श और वो शब्द अब भी कानों में गूँजते हैं तो ख़ुशी से रोम खड़े हो जाते हैं ! उन सुखद यादों में मन खो जाता है, आँखों से प्यार के आँसू निकल आते हैं। समझ में नहीं आता, दादी जी को कौन-सी उपमा दूँ। ऐसा कोई नाम ही नहीं...। बहुत ऊँची बाप समान हस्ती थीं दादी जी!

दादी जी, साकार के संग के अनुभव सुनाकर हमें भी साकार के साथ मिला देती थीं

एक शाम, गोवा में पब्लिक प्रोग्राम पूरा होने के बाद हम कलंगुट नामक एक सुंदर समुंदर किनारे पर गये थे। वहीं कुर्सियाँ लगाकर बैठ गये। दादी जी ने साकार बाबा की बहुत अच्छी-अच्छी बातें सुनायीं। कराची के दिनों का सारा समाचार हमारी आँखों के सामने खड़ा किया। उस समय ऐसे महसूस हो रहा था कि जैसे साकार बाबा की ही पालना मिल रही है। उस शाम के बाद यह ख्याल कभी नहीं आया कि हमने साकार बाबा को नहीं देखा या साकार पालना नहीं ली!

मुझे क्या पता था कि दादी जी का यह अंतिम दर्शन है

जब दादी जी की तबीयत ठीक नहीं रहती थी, वे अपने कोटेज में ही रहती थीं। तीन साल पहले, रक्षाबंधन के त्योहार के निमित्त हम दादी कोटेज में, दादी जी को राखी बाँधने के लक्ष्य से गयी थी। सवेरे 8.30 बजे थे। दादी जी कुर्सी पर बैठी थीं, साथ में मुन्नी बहन जी और मोहिनी दीदी जी भी थीं। दादी जी की आँखें बंद थीं। मुन्नी बहन जी ने दादी जी को बताया कि गोवा से बहुत सुंदर राखी आयी है। सुनते ही सेकण्ड में दादी जी ने अपनी आँखें खोलीं, राखी को निहारा, मेरी तरफ़ भी देखा, बहुत मीठी मुस्कान दी...। फिर अपनी पलकें बंद कर दीं, अपनी अव्यक्त, कर्मातीत अवस्था में, मौन की गुफ़ा में चली गईं। वह मीठी मुस्कान, शक्तिशाली दृष्टि अब भी खींचती है। मालूम नहीं था कि वह साकार में दादी जी की अंतिम दृष्टि होगी। अभी भी ऐसे ही अनुभव होता है कि दादी जी हर पल हमारे अंग-संग सूक्ष्म रूप में हैं और सारा कारोबार संभाल रही हैं।

✪

विश्व की आदर्श – दादी माँ

–ब्रह्माकुमारी सोमप्रभा बहन, सोलापुर

सन् 1974 में मैं सोलापुर में आयी और सेवा शुरू की। तब हर दिन का सेवा-समाचार मासिक-हिसाब सब दादी जी को मधुबन में भेजती थी। दादी जी के पत्र आते रहते थे। वे उमंग-उत्साह भरे पत्र पढ़कर हमारे पुरुषार्थ में चार चाँद लग जाते थे। उस समय नई-नई सेवाएँ विशेष रूप से चलती रहती थीं। जब भी हम मधुबन में जाते थे, दादी जी बड़े प्यार से हमसे मिलती थीं, रूहानी दृष्टि देती हुई कभी हाथ में हाथ मिलाती थीं, तो कभी गले लगाकर मिलती थीं। इस मुलाक़ात से हमारे सारे सफर की थकावट दूर हो जाती थी। दादी जी स्नेहपूर्वक कहती थी, 'कैसी हो, ठीक-ठाक हो, तबियत ठीक है, सफ़र में कुछ तकलीफ़ तो नहीं हुई?' दादी जी के ये स्नेह में भीगे हुए मधुर शब्द सुनते ही हमारा मन मोर की तरह ख़ुशी से नाच उठता था, चेहरा फूल की तरह खिल जाता था। ऐसी थी हमारी ममतामयी दादी माँ !

स्नेहमयी दादी माँ

साकार बाबा को मैंने नहीं देखा था। एक बार अचानक 18 जनवरी के दिन मैं मधुबन पहुँची थी। अव्यक्त दिन होने से वहाँ के वातावरण में रहने से बाबा की याद बहुत आती रही, इतनी आई कि आँखों से आँसू बहने लगे। मेरी अवस्था देखकर दादी जी ने मुझे अपने पास बुलाया, अपनी गोद में बिठाया, उन्होंने स्वयं रुमाल से मेरे आँसू पोंछे। उस समय मुझे ऐसा अनुभव हुआ जैसे कि मैं साकार बाबा की गोद में बैठी हूँ और स्वयं बाबा मेरे आँसू पोंछ रहे हैं। ऐसी थी हमारी स्नेहमयी दादी माँ !

शक्ति स्वरूपिणी दादी माँ

दादी जी की यह विशेषता थी कि मधुबन में रात को 9 से 10 बजे के दरम्यान सभी टीचर्स बहनों को अपने कमरे में बुलाकर स्वयं बाबा की मुरली पढ़कर सुनाती थी। इससे हमारा विचार सागर मंथन चलता था, ज्ञान का विकास हो जाता था। हर दिन सुबह दादी जी के कमरे में उन्हें गुड मार्निंग करने और रात को गुड नाईट करने जाते थे। दादी जी से मिलते ही ख़ुशी होती थी, एक विशेष शक्ति का संचार होता था, आत्मा तेज:पुँज बन जाती थी दादी द्वारा, साकार पिताश्री ब्रह्मा बाबा से ही मिलन मनाया, ऐसी अनुभूति होती थी। साकार में स्वयं पिताश्री ब्रह्मा बाबा ही उतरकर आए हैं, ऐसा प्रतीत होता था। ऐसी थी हमारी शक्ति स्वरूपिणी दादी माँ !

महादानी दादी माँ

वास्तव में सोलापुर एवं आस-पास के क्षेत्रों में सेवा की अभिवृद्धि हेतु दादी जी ही निमित्त बनीं। सोलापुर में सेवा शुरू होते ही वे हमें पत्रों द्वारा बीच-बीच में सेवा समाचार पूछती रहती थीं। हृदयपुष्पा दादी जी बीच-बीच में सोलापुर आकर यहाँ का सेवा समाचार दादी जी को सुनाती थीं। इन कारणों से सोलापुर के भाई-बहनों का दादी जी के साथ स्नेह जुड़ता गया और उनमें उमंग-उत्साह आ गया कि कोई न कोई सेवा द्वारा दादी को निमंत्रण देकर सोलापुर में बुलाना ही है। उस अनुसार दादी जी को निमंत्रण भी भेजा गया। बहुत बिज़ी होने के कारण कभी हाँ और कभी ना करते हुए दादी जी ने अंतत: 24 अक्टूबर, 1976 में सोलापुर पधारने की स्वीकृति दे दी। हमने दादी जी के शुभ हस्तों से 'नव विश्व निर्माण' आध्यात्मिक मेला एवं राजयोग शिविर' का उद्घाटन कराने का कार्यक्रम निश्चित किया। हालाँकि दादी जी की स्वीकृति हमें 18 अक्टूबर, 1976 को अर्थात् 6 दिन पूर्व ही मिली थी। इन 6 दिनों के अंदर मेले की एवं अन्य सभी तैयारियाँ अतिशीघ्रता से पूर्ण की। इसके लिए महाराष्ट्र ज़ोन की इंचार्ज बृजइन्द्रा दादी जी ने मुंबई से

मेले के अनुभवी सेवाधारी भाई-बहनों को तुरंत सोलापुर भेजकर एवं हुबली से मृत्युंजय भाई ने पधारकर, मेले की सारी व्यवस्था कराकर अनमोल सहयोग दिया। फिर दादी जी ने 24 अक्टूबर, 1976 में सोलापुर पहुँचकर बड़े ही धूमधाम एवं उमंग-उत्साह से मेले का उद्घाटन किया। दूसरे दिन महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश एवं आस-पास के सेवाकेंद्रों से पधारे सभी भाई-बहनों को दादी जी ने ज्ञान-अमृत का पान कराकर, टोली खिलाकर, स्वयं रास कर और करवाकर बहुत ही उमंग-उत्साह भरा। दादी जी के साथ मोहिनी बहन जी, दिव्या बहन जी, चंद्रहास दादा आदि भी आए थे। दादी जी को सेवाकेंद्र देखकर बहुत अच्छा लगा। दादी जी ने तुरंत भोग का सेट, भोग के लिए सुंदर रूमाल तथा अन्य चीज़ें सौग़ात में दी। फिर भी दादी जी मुझे घड़ी-घड़ी पूछती रही, 'सोमप्रभा, बाबा के घर के लिए और कुछ चाहिए, तो बताओ?' मैंने कहा, दादी जी, आप आए, इसमें ही हमें सब-कुछ मिला और कुछ नहीं चाहिए। इस पर भी दादी जी ने अपने-आप देखकर, चंद्रहास दादा को बाज़ार में भेजकर टेबल फेन, दीवार की घड़ी मँगवाकर सौग़ात के रूप में दिए (अभी तक भी मैंने इन चीज़ों को संभालकर रखा है)।

उदारमयी दादी माँ

मुझे विदेश में यानि कि मॉरीशस में सेवा के लिए भेजने की प्रेरणामूर्त दादी जी ही रहीं। उन्होंने मुझे पत्र लिखकर मॉरीशस जाने के लिए ऑफर किया। इतना ही नहीं, मुझे तुरंत मधुबन में बुलाकर, अहमदाबाद भेजकर मेरा पासपोर्ट तैयार करवाया। वर्ष 1978 में मैं मॉरीशस सेवा के लिए गई। उसके पूर्व मैंने कभी भी प्लेन से सफ़र नहीं किया था, इसलिए मॉरीशस जाने के पूर्व दादी जी ने, बृजइन्द्रा दादी को कहकर रमेश भाई जी के साथ, मुंबई से दिल्ली तक का मेरा सफ़र प्लेन से करवाया। ऐसी थी हमारी उदारमूर्त दादी माँ !

प्रेममयी दादी माँ

मॉरीशस तथा अन्य स्थानों पर 3 वर्षों तक सेवा करके भारत लौटने के पश्चात् अचानक उन्होंने मुझे फिर से सोलापुर की एरिया में सेवा करने हेतु भेजा। इसी बीच में, मधुबन में अंगूर की वाटिका जल जाने का समाचार मिला। उस समय सोलापुर के हिरेमठ भाई अंगूर की खेती करते थे, उनके साथ अंगूर के पौधे लेकर मैं सोलापुर की पार्टी के साथ मधुबन पहुँची। अंगूर के पौधे लेकर आई हुई सोलापुर की पार्टी को देखकर दादी जी को बेहद ख़ुशी हुई। बड़े प्यार से दादी जी ने, मोहिनी बहन जी ने, निर्वैर भाई जी ने, रमेश भाई जी ने और मैंने आज के सुखधाम के पास की वाटिका में उन पौधों का रोपण किया। ऐसी थीं हमारी प्रेममयी दादी माँ !

प्रकाशमयी दादी माँ

सन् 1986 में सोलापुर में दादी जी का दोबारा पधारना हुआ। उस समय सोलापुर के सम्राट चौक में नियोजित सेन्टर 'शिव प्रकाश भवन' का शिलान्यास दादी जी के कर कमलों द्वारा ही सम्पन्न हुआ। दादी जी अव्यक्त स्थिति को प्राप्त करने तक भी, स्वास्थ्य ठीक न होने पर भी हम सभी टीचर बहनों को बहुत ही अच्छी बेहद की पालना देती रहीं। दादी जी चाहे मुंबई में, चाहे मधुबन में, या शांतिवन में हों, जहाँ-जहाँ भी हम दादी जी से मिलने जाते, वे बड़े प्यार से हाथ में हाथ मिलाकर रूहानी दृष्टि देतीं। उनके द्वारा हम रूहानियत की, पवित्रता के किरणों की प्राप्ति का अनुभव करते, जिससे हमारी आत्मा में शक्ति एवं ख़ुशी भर जाती। दादी जी अपने अंतिम समय तक और अभी भी प्रकाश-स्तम्भ बनकर मार्गदर्शन कर रही हैं। सचमुच, अपने नाम के अनुसार अपने कर्त्तव्यों एवं सुकर्मों से सारे विश्व में ईश्वरीय ज्ञान का प्रकाश फैलाने वाली विश्व की आदर्श 'प्रकाशमणि' थी हमारी प्रकाशमयी दादी माँ !

✪

गुणों की खान, प्यारी दादी जी

–ब्रह्माकुमारी प्रेमलता बहन, देहरादून

सादगी, सरलता और सात्विकता की साक्षात् मूरत प्यारी दादी जी को, अंतर्राष्ट्रीय संस्थान की अध्यक्षा होते हुए भी अहंभाव छू भी नहीं पाया। उनका हर कर्म सर्व ब्राह्मणों के लिए अनुकरणीय था। दादी जी का पूरे जीवनकाल का हर क्षण सेवा में समर्पित था। छोटा-बड़ा चाहे कोई भी हो, सबकी सेवा में दिल व जान से तत्पर रहती थी। बाबा के बच्चे संसार के आगे उदाहरण स्वरूप बनें, यह उनका संकल्प रहता था। यज्ञ के लाखों ब्राह्मण होते हुए भी उनको हरेक बच्चे का पूरा-पूरा ध्यान रहता था।

हरेक के प्रति दादी जी का ख्याल चलता था

एक बार मधुबन में मेरा स्वास्थ्य कुछ ठीक नहीं रहा, आवश्यक कार्य से मुझे वापिस भी आना पड़ा। दादी जी को इतना ओना था, देहरादून पहुँचते ही दादी जी का फोन आया कि ठीक से पहुँच गई हो? मैंने तो अभी फोन किया नहीं था, सोचा था कि करूँगी लेकिन दादी जी को एक-एक बच्चे का कितना ख्याल रहता था! ऐसी ममतामयी हमारी माँ थी प्यारी दादी जी।

संतों के प्रति दादी जी को अगाध प्यार था

दादी जी को पूरे विश्व की हर वर्ग की आत्माओं की सेवा करने का उमंग-उत्साह रहता था। बच्चों में भी उमंग-उत्साह भरती रहती थीं। हरिद्वार सेवाकेंद्र की स्थापना का संकल्प दादी जी का था। मैंने दादी से कहा, 'तीर्थ स्थानों पर कोई विशेष सेवा तो होती नहीं है, समय प्रति समय हम देहरादून से जाकर हरिद्वार की सेवा तो करते ही रहते हैं।' लेकिन, दादी जी का इतना पॉवरफुल संकल्प था कि चाहे कोई सेवा हो या ना हो परन्तु यह सेंटर धर्मसत्ता के लिए दर्पण का काम करेगा। अब प्रत्यक्ष हम अनुभव करते हैं कि दादी जी का वो संकल्प प्रैक्टिकल में धर्मसत्ता की सेवा करने के निमित्त बना हुआ है। संतों के प्रति दादी जी को अगाध प्यार था। सभी संत, बाबा के घर में आये, इसी चाहना से हर साल दादी जी संत-सम्मेलन आयोजित करती थी और स्वयं उनके हर प्रोग्राम व व्यवस्था का ध्यान रखती थीं कि किसी भी तरह से उन्हें कोई असुविधा न हो। इतना आदर-सम्मान उनको देती थीं कि आज भी संत बड़े प्यार से दादी माँ को याद करते हैं।

दादी जी के लिए सब समान थे

एक तरफ़ उनके हृदय में प्यार का सागर हिलोरे लेता था, तो दूसरी तरफ संयम, नियम और मर्यादा का उन्हें पूर्ण ध्यान रहता था। स्वयं हर मर्यादा का सख्ती से पालन करती थीं और चाहती थीं कि सब भी बाबा की बताई

मर्यादाओं पर पूर्णत: चलकर महान् बनें। दादी जी का शिक्षा देने का तरीका इतना सुंदर था कि बिना किसी की कमी को बताये उसको उसकी कमी का एहसास करा देती थीं। सहनशीलता की प्रतिमूर्ति थीं। कोई कैसा भी व्यवहार करे, बात करे- दादी जी कभी उत्तेजित नहीं होती थीं। उसी रूहानी स्नेह से बात करती थीं, जैसे उसने कुछ कहा ही नहीं है। उनकी वाणी व व्यवहार में रिंचक मात्र भी अंतर नहीं आता था। इतनी महान् पदवी पर होते हुए भी यज्ञ के छोटे से छोटे व्यक्ति से भी ऐसे मिलती थीं जैसे माँ अपने बच्चों से मिलती है। जिस प्रकार माँ के लिए कोई छोटा-बड़ा नहीं होता, वैसे उनके लिए भी सब बच्चे समान थे।

दादी जी के संकल्प में सदैव सफलता रही

बद्रीनाथ से दिल्ली तक की पदयात्रा के अवसर पर सर्वे करने वालों ने दादी जी को बताया कि यह रास्ता ख़तरनाक है। हिमालय की ऊँची चोटियों और गहरी घाटियों के बीच से पदयात्रा निकालना सुरक्षित नहीं है। दादी जी ने मेरे से पूछा कि आपका क्या विचार है? मैंने कहा, दादी जी, आपका शुभ संकल्प है तो सब ठीक ही रहेगा और हम पदयात्रा ज़रूर करेंगे। आपका शुभ संकल्प सब पदयात्रियों को शक्ति प्रदान करता रहेगा। दादी जी ने अपने शुभ आशीर्वादों सहित पदयात्रा की स्वीकृति दी और पूरी यात्रा के बीच-बीच में फोन करके पूछती रहीं कि सब यात्री ठीक है? पदयात्रा के मोदी नगर पहुँचने पर दादी जी सब पदयात्रियों से मिलने विशेष मोदी नगर आयीं और पदयात्रियों के स्वास्थ्य को देख दादी जी बहुत प्रसन्न हुईं और सबको वरदानी दृष्टि देते हुए कहा, आप लोग तो और ही डट्टे-मुट्टे (हैल्दी) हो गए हो। ऐसी थी हमारी ममता की मूर्ति दादी जी, उनके जितने गुण गायें उतने ही कम हैं।

✪

प्रेरणा-प्रोत्साहन की प्रतिमूर्ति – दादी जी

–ब्रह्माकुमारी दिव्या बहन, बोरीवली, मुंबई

बोरीवली स्थित सेवाकेंद्र पर हमारे साथ कला दादी रहती थी। उनका स्वास्थ्य नाजुक रहता था। शारीरिक कमज़ोरी के कारण कर्मेंद्रियों पर उनका कन्ट्रोल नहीं रह पाता था। ऐसी परिस्थिति के बावजूद भी कला दादी की एक बार मधुबन जाने की तीव्र इच्छा थी। ड्रामा अनुसार इस तीव्र इच्छा की पूर्ति के लिए मैं निमित्त बनीं।

चुनौती स्वीकार करते हुए, विकट शारीरिक अवस्था में, कला दादी को अपने साथ मधुबन लेकर आयी और मधुबन में दादी जी के प्रोत्साहन भरे बोल मेरे जीवन के अविस्मरणीय पल बन गए। दादी जी ने कहा, 'दिव्या, सचमुच तुम श्रवण हो।' आज मैं कहती हूँ, "दादी, अपने दिव्यगुणों और कत्तव्य से आप अमर हैं!"

विश्व की महान् विभूति

एक और प्रसंग याद आ रहा है, मुझे पहली बार पार्टी लेकर मधुबन जाना था। यह कार्य मुझे बहुत ही मुश्किल लग रहा था। मैं यह ज़िम्मेवारी निभा पाऊंगी, ऐसा मुझे आत्मविश्वास नहीं था। मुंबई से कला दादी ने हिम्मत भरते हुए मुझे आबू भेज दिया। मधुबन में दादी जी जानती थीं कि मैं पहली बार पार्टी लेकर आई हूँ। जब दादी जी से मेरी मुलाकात हुई, एक माँ के समान मेरा ख्याल करते हुए उन्होंने मुझसे पूछा, 'दिव्या, सब ठीक है? कुछ मदद चाहिए, कुछ तकलीफ हो तो नि:संकोच बताना।'

विश्व की महान् विभूतियों में अपना स्थान प्राप्त करने वाली हस्ती होते हुए भी मुझ छोटी कुमारी का इतना ख्याल करना, ऐसी निर्मानता ही दादी जी की महानता का बयान करती है।

शक्ति–स्वरूपा दादी जी को सलाम !

दादी जी के शक्ति स्वरूप का प्रत्यक्ष प्रमाण बोरीवली स्थित प्रभु उपवन, राजयोग रिट्रीट सेंटर है। बोरीवली में सेवाओं की वृद्धि को देखते हुए, हम सभी के साथ-साथ दादी जी का भी यह शुभ संकल्प रहा कि इस स्थान पर ब्राह्मण परिवार की सुव्यवस्थित पालना हेतु एक बड़ा सेवा स्थान होना चाहिए। लेकिन, मुंबई जैसे शहर में एक भवन का निर्माण करना, यह कार्य किसी चुनौती से कम नहीं था। यह एक ऐसा शुभ कार्य था, जिसकी सम्पन्नता के पूर्व कई परीक्षाओं को पार करना पड़ा। ज्ञान-योग की शक्ति से कई विघ्न तो पार हो गए, पर कुछेक ऐसी अड़चनें भी थीं, जिन्हें बड़ों के सहयोग के बिना पार करना असम्भव प्रतीत होता था।

ऐसी विकट परिस्थिति में दादी जी की छत्रछाया ने मुझे शीतलता प्रदान की। एक अंतर्राष्ट्रीय संस्था की मुख्य प्रशासिका होते हुए भी मैंने दादी जी के चरित्र में सदैव निर्मानता देखी। पर यह वो क्षण थे जब मैंने शक्ति स्वरूपा दादी जी को अपनी ऑथोरिटी यूज़ करते देखा। मुझमें असीम विश्वास रखते हुए दादी जी ने मुझे अपने दृढ़ निर्णय का सहारा दिया और उस निर्णयात्मक मोड़ पर दादी जी के समर्थ निर्णय ने एक जादुई चिराग की भाँति सभी बंद दरवाज़े खोल दिए।

✪

दादी जी तीनों स्वरूपों की स्वरूपा थीं

–ब्रह्माकुमारी आरती बहन, इंदौर

दादी प्रकाशमणि जी जैसा नाम वैसा काम करने वाली थीं। सबके जीवन में प्रकाश फैलाने वाली थीं। जो भी उनसे मिलता उस आत्मा का जीवन ज्ञान प्रकाश से आलोकित हो जाता। उनका यही प्रयास रहता था कि जो भी परमपिता परमात्मा शिव के द्वारा स्थापित इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय में आया है, वह संतुष्ट होकर जाए। वे हर आत्मा की पालना बहुत प्यार से करती थीं।

उनसे मिलते ही कुछ नया करने की प्रेरणा मिलती थी

मैंने दादी जी को बहुत नजदीक से देखा है, उनकी ममतामयी पालना का अनुभव किया है। जब मैंने प्रथम टीचर ट्रेनिंग माउण्ट आबू में पूरी की, तब स्वयं दादी जी एवं दीदी मनमोहिनी जी ने मुझे कहा कि आरती, तुम्हें ईश्वरीय सेवा के लिए इंदौर जाना है। मैंने तुरंत कहा, दादी जी, जैसी आपकी आज्ञा। मैं इंदौर आ गई। दादी जी के वरदानी आदेशों का यह परिणाम है कि आज इंदौर ज़ोन में विशाल पैमाने में ईश्वरीय सेवा का कार्य चल रहा है। वास्तव में दादी जी की परख शक्ति बहुत ही तेज थी, वो हर व्यक्ति को देखकर जान जाती थीं कि इसमें क्या विशेषता है और उसका किस प्रकार से मानव कल्याण के लिए उपयोग किया जाए। मैं जब भी दादी जी को मिलने जाती, उनमें एक सम्पूर्ण मातृत्व का अनुभव करती। बहुत प्यार से दादी जी एक माँ की तरह पूछतीं, अच्छे से आए, रास्ते में कोई तकलीफ़ तो नहीं हुई। वे छोटी से छोटी बात का भी ध्यान रखती थीं। उनसे मिलते ही नया उमंग-उत्साह आ जाता था। कुछ नया करने की प्रेरणा मिल जाती थी। दादी जी की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वे कोई की भी ग़लती को अपने चित्त पर नहीं रखती थीं। हमेशा आगे बढ़ने की प्रेरणा देती रहीं। उनके चेहरे से एक अलौकिक दिव्य प्रकाश झलकता रहता, जो साकार बाबा का अनुभव कराता था।

उनको अपने पद का रिंचक मात्र भी अभिमान नहीं था

सन् 1983 की बात है। वाराणसी से एक महामंडलेश्वर जी मधुबन पधारे थे। उस समय प्रात: क्लास में उनका आगमन हुआ। दादी जी क्लास करा रही थीं। महामंडलेश्वर जी का परिचय देने के लिए शीलू बहन मंच पर आई। उस समय एक संदल पर महामंडलेश्वर जी विराजमान थे और एक संदल पर स्वयं दादी जी। दादी जी ने उसी समय शीलू बहन को कहा कि आप मेरे पास आकर बैठो। शीलू बहन ने दादी जी के पास बैठकर महामंडलेश्वर जी का परिचय दिया। इसके बाद महामंडलेश्वर जी ने अपना अनुभव सुनाया और अंत में कहा कि

दादी जी वास्तव में बहुत ही निर्मानचित्त है। उन्होंने कहा कि मेरे आश्रम में कोई भी शिष्य मेरे पास बैठ नहीं सकता और ना ही पास से निकल सकता है परंतु दादी जी तो इतनी महान् हैं कि बहन जी को अपने पास ही बैठा लिया। साथ ही महामंडलेश्वर जी ने कहा कि दादी जी बहुत ही साधारण श्वेत वस्त्र पहनती हैं और मैं कीमती रेशम के वस्त्र पहनता हूँ।

वे जितनी अच्छी ममतामयी माँ थीं, उतनी ही अच्छी सखी थीं

मधुबन में जब हम बहनों की भट्ठी होती तो दादी जी हम सब बहनों को ऐसे मिलतीं जैसे कि एक सखी, दूसरी सखी से मिलती है और अपनी हर बात हमसे ऐसे शेयर करतीं जैसे वे हमारी हमउम्र हों। उनमें यह बहुत अच्छी विशेषता थी कि वे सबके साथ घुलमिल जाती थीं। हमारे लिए तो वे बहुत सुंदर ममतामयी माँ और मीठी सखी ही थीं। साथ में बड़ी बहन बनकर हर बात इशारे से समझा देती थीं, कहने की आवश्यकता नहीं पड़ती थी।

उनके अंदर बाबा को प्रत्यक्ष करने की लगन बड़ी तीव्र थी

उनको बाबा की मुरली से अति प्यार था और मुरली को वे उसी ढंग से सुनातीं जैसे कोयल की कूक अर्थात् उनकी वाणी बहुत ही मीठी थी। उनके अंदर बाबा को प्रत्यक्ष करने की लगन बड़ी तीव्र थी। दादी जी को देखकर हमें भी बड़े-बड़े कार्य करने की प्रेरणा मिलती रही। दादी जी को हम जब भी कोई प्रोग्राम सुनाते तो बड़े प्यार से और बड़े ध्यान से सुनतीं, जैसे एक माँ अपने छोटे बच्चे की हर बात बड़े ध्यान से सुनती और बड़ी सरलता से, प्यार से उसका निर्णय सुनातीं। उनके अंदर जजमेंट पॉवर बहुत अच्छी थी और जज करके तुरंत निर्णय देना, यह उनकी बहुत अच्छी विशेषता थी।

उनके तीन स्वरूप

दादी जी के अंदर निर्माणता, निर्मल वाणी और निमित्त भाव स्पष्ट अनुभव होते थे। वे हमेशा निमित्त समझकर हर कार्य करती थीं। हमेशा कहा करती थीं: कराने वाला करा रहा है, चलाने वाला चला रहा है, हम तो सिर्फ निमित्त हैं। बाबा ने जो तीन शब्द अंत में उच्चारे थे – निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी, तीनों स्वरूपों को दादी जी ने प्रैक्टिकल करके दिखाया।

आज भी जब मैं प्रकाश-स्तम्भ के सामने जाकर बैठती हूँ तो एक नया अनुभव, नई प्रेरणा प्राप्त करती हूँ। ऐसी महान् ममतामयी, करुणामयी, विश्व को प्रकाशित करने वाली दादी प्रकाशमणि जी को मेरा कोटि-कोटि नमन!

✪

दादी जी, अजब आत्म-विश्वास की स्वामिनी

–ब्रह्माकुमारी डॉ. निरंजना बहन, अलकापुरी, बड़ौदा

एक बार पांडव भवन में स्नातक (ग्रेजुएट) कुमारियों की भट्ठी चल रही थी। हरिद्वार से कुछ संन्यासी आश्रम की मुलाकात के लिए आये थे। उन्होंने हमारी क्लास को देखा, फिर आकर के दादी जी से बातचीत करते हुए कहा, 'आपने इन भोली-भाली बच्चियों को भरमाकर रख लिया है। इन्होंने कहाँ संसार देखा है?' दादी जी ने कहा, 'देखो, मैं आपके सामने बैठी हूँ। आप वहाँ से किसी भी कुमारी को बुलाओ, आपको जो पूछना है, पूछ सकते हैं।' दो-तीन बहनों को बुलाया गया, उसमें मैं भी थी। दादी जी के सामने ही एक संन्यासी इंटरव्यू ले रहा था। अनेक प्रश्न पूछ रहा था। दादी जी केवल मधुर स्मृति के साथ देख रही थी। सभी प्रश्नों के संतोषजनक जवाब सुनकर वे संन्यासी ख़ुश हो गए। दादी जी के प्रति सम्मान से उनका सिर झुक गया!

देह और देह से उपराम साक्षी स्थिति की अभ्यासी

एक बार की बात है, दादी जी को मैं रूम से लेकर मुरली क्लास की ओर जा रही थी। दादी जी बाहर आयीं तो दादी जी को थोड़ा चक्कर-सा आया। मैंने पकड़ कर सोफे पर बैठा दिया। तुरंत डॉक्टर को फोन किया, वे आ गए। कुछ बड़े-भाई बहनें भी आये। डॉक्टर ने देखा, कुछ ट्रीटमेंट दिया। आधे घण्टे में सब सामान्य हो गया। दादी जी को कमरे में सुला दिया। मैं दादी जी के पास बैठ गई। दादी जी ने घूम करके मेरे सामने देखा, फिर कहा, निरंजना देखा, दादी का नाटक ! एकदम ख़ुशमिजाज़ !! दु:ख-दर्द या कुछ हुआ भी है उसकी कोई रेखा चेहरे पर नहीं !

दिल को छू लेने वाला प्यार और सम्भाल

सन् 1973 की बात है। दिल्ली में रामलीला मैदान में मेला लगना था। मेले की तैयारी के लिए गुजरात से हम सेवा में गए थे। रात के करीब 8 बज गए थे। दादी जी वहाँ ग्राउण्ड में चक्कर लगाने आयी थीं। हमें देखा, पूछा, आप लोग कैसे वापस जाएंगे? कोई व्यवस्था हुई नहीं थी। गुलज़ार दादी जी भी साथ में थीं। उन्होंने कहा, दादी, इनकी व्यवस्था कर देंगे, आप चलिए। दादी जी तो वहाँ ही बैठ गईं। बोली, नहीं, जब तक इन कुमारियों की व्यवस्था नहीं होती, हम नहीं जाएंगी। हमारी गाड़ी में पहले इनको भेज दो, फिर जाएंगे। मैं तो गद्‌गद हो उठी। ये था ममतामयी माँ का दिल का प्यार और पालना !

बेजोड़ सरलता और ज्ञान की स्पष्टता

सन् 1970 की बात है। मैं मधुबन गई थी। दोपहर के समय पर पांडव भवन के आँगन में अकेली बैठ करके कुछ पढ़ रही थी। दादी जी अपने रूम से बाहर निकल आईं। मुझसे पूछा, 'क्यों नींद नहीं करनी है?' मैंने कहा, 'दादी जी, मुझे दोपहर में नींद की आदत नहीं।' दादी जी भी वहाँ ही मेरे साथ बैठ गईं। मुझे लगा, ऐसा मौका कहाँ मिलेगा। मैंने दादी जी से एक प्रश्न पूछा। दादी जी वहाँ ही जैसे की गहराई में चली गईं। मेरे से कहा, देखो, सागर में पनडुब्बी लेकर लोग जाते हैं ना। जैसे ही गहराई में जाएंगे, प्रेशर का अनुभव होगा। उसी प्रकार हम जितना बाबा की याद में गहराई में जाते हैं शांति के शक्तिशाली प्रकम्पनों का हमें अनुभव होता है। उस समय ही मुझे समझ में आया और गहन शांति का अनुभव भी हुआ जो आज भी स्मृति में अंकित है।

✪

दादी जी का जीवन औरों के लिए समर्पित था

–ब्रह्माकुमारी सुषमा बहन, जामनगर

यह भारत भूमि धन्य है, जिस पर अनेक महान् हस्तियों का जन्म हुआ। महान हस्तियों ने बड़े होकर सत्य की वा परमात्मा की खोज की और दुनिया में बहुत बड़ा नाम कमाया। लेकिन इस धरती पर एक ऐसी विभूति ने भी जन्म लिया जिसको स्वयं भगवान ने तलाशा वा परखा और उनका नाम रखा – प्रकाशमणि, जो नाम वास्तविक रूप में खरा उतरा। आगे चलकर वे कहलाईं 'दादी प्रकाशमणि।'

वे जितनी महान् थीं उतनी नम्र थीं

दादी जी वास्तव में बहुमुखी प्रतिभाशाली थीं। उनका जीवन औरों के लिए समर्पित था। जितनी महान् उतनी नम्र थीं। उनके व्यक्तित्व में रूहानी आकर्षण था। जो भी उनसे मिलता था, प्रभावित हुए बिना नहीं रहता था। वे सभी के दिलों पर राज्य करने वाली थीं। चाहे छोटा हो, जवान हो या वृद्ध भी क्यों न हो, हरेक दादी जी को चाहता था।

वे सबसे समानता का व्यवहार करती थीं

जैसे सूर्य का प्रकाश हरेक व्यक्ति के लिए समान होता है वैसे ही दादी भी थीं। दादी जी देश-विदेश की सेवार्थ जहाँ भी गईं, हरेक के दिल से 'मेरी दादी माँ' यही शब्द निकलता था। अलग-अलग धर्म वा जाति वाले लोगों से मिलना होता था, फिर भी अपनी विशेषता के कारण वे सबसे समानता का व्यवहार करती थीं

दादी जी बहुत ही सरल व साफ़ दिल वाली थीं

वे सबकी परेशानी को सहज तरीके से सुलझा देती थीं, फिर भी कभी किसी के अवगुण को अपने दिल में स्थान नहीं देती थीं अर्थात् यह व्यक्ति ऐसा है वा वैसा है – यह भाव दादी जी के दिल में नहीं था। इतने बड़े यज्ञ का कारोबार सम्भालने के निमित्त थीं लेकिन कभी यह नहीं सोचा कि मैं सम्भालती हूँ। दादी जी के मुख से कभी मैं शब्द नहीं निकला। सदैव कहते रहे – बाबा कहते हैं, बाबा करा रहे हैं। बाबा को ही समर्पित करके चलते रहे।

ज़िम्मेवारी सम्भालते हुए भी अपनी पढ़ाई कम नहीं होने देती थीं

दादी जी की शिक्षा में क्षमा भाव भी समाया रहता था, जिससे ग़लती करने वाला, ग़लती को सहज ही स्वीकार कर लेता था। जितना प्यार दादी जी को बाबा से था, उतना ही प्यार मुरलीधर की मुरली से भी था। इतनी बड़ी ज़िम्मेवारी सम्भालते हुए भी अपनी पढ़ाई कम नहीं होने देती थीं।

वे ब्रह्मा बाप समान ही थीं

दादी जी बहुत रमणीक भी थीं। बड़प्पन होते भी दादी सबके लिए दादी थीं। हर छोटे-बड़ों की बात को सम्मान देती थीं। दादी जी ब्रह्मा बाप समान ही थीं। दादी जी बाप के कदम पर कदम रखकर चलती थीं, इसलिए पूरे यज्ञ को, इतने बड़े संगठन को भी साथ लेकर चलीं।

सबको ख़ुशी मिले, सब आगे बढ़ें, बस दादी जी यही चाहती थीं

दादी जी सभी की बातों को स्वीकार करती थी। ऐसे ही एक बार द्वारका म्यूज़ियम के लिए दादी जी ने हाँ कर दी। लेकिन, मई 1996 में दादी जी की अचानक तबीयत ख़राब होने के कारण दादी जी ओपनिंग में नहीं आ सकीं और उसी वक्त दादी चंद्रमणि जी को ओपनिंग के लिए बुलाया। एक महीने के बाद दादी जी के स्वास्थ्य में सुधार हुआ, तब दादी जी द्वारका ओपनिंग के लिए आ गईं। इस तरह से दादी जी किसी की बात को हाँ करके छोड़ती नहीं थीं। सबको ख़ुशी मिले, सब आगे बढ़ें, बस दादी जी यही चाहती थीं। ✪

दादी जी के बोल, हस्त और दृष्टि वरदानी थे

–ब्रह्माकुमारी रानी बहन, मुजफ्फरपुर

एक बार मैं पांडव भवन में अकेली ही रिफ्रेश होने आई थीं। सर्दी का मौसम था। प्रात: क्लास के बाद हिस्ट्री हॉल के बाहर मैं बैठ गई थी। धूप भी थी, सभी से मिलना भी हो रहा था। दादी जी अपने मीटिंग रूम में पार्टियों से मिलती और बीच में बाहर भी आती। दादी जी दो बार बाहर आईं और हर बार मुझे बैठा हुआ देखा, तो दादी जी ने मुझे बुलाया और कहा, रानी, मैं जब बाहर आई तुम्हें बैठा देखा। मैंने कहा, दादी जी, मैं अकेली आई हूँ इसलिए यहाँ बैठकर सभी से मिल रही हूँ। दादी जी ने कहा, नहीं-नहीं, तुम्हें किसी बात की चिंता हो गई है। मैंने कहा, दादी...। दादी ने कहा, तुम्हारे पास मकान बन रहा है ना, तुम्हें चिंता हो गई है और दादी जी ने ऐसा वरदानी हाथ सिर पर रखा और कहा, जाओ, कोई चिंता नहीं करो, बाबा का कार्य है, सब हो जाएगा। सो, मैंने देखा कि दादी जी दिल का हाल जानने वाली थीं। वास्तव में दादी जी के वरदानी हस्तों ने, दृष्टि ने कमाल कर दिया। फिर सेवाकेंद्र पर ऐसे सहयोगी रत्न आते गए। दादी जी ने कहा, हिम्मत रखी है ना, तो मदद बाबा की मिलती रहेगी। दादी जी के वरदान प्रैक्टिकल में, हर पल नज़ारा दिखा रहे हैं।

निरंतर याद में रहने वाली दादी

मीठी दादी के साथ एक वर्ष मुम्बई में रहने का सुअवसर मुझे प्राप्त हुआ। मैंने देखा कि दादी जी बहुत निरहंकारी और लाइट होकर रहती। एक दिन की बात है। दादी जी के सिर में दर्द हो रहा था। मैं सिर पर बाम लगा रही थी, अचानक दादी जी ने कहा, देखो रानी, बाबा मेरे सामने खड़ा है। फिर थोड़ी देर बाद रुककर दादी जी ने कहा, सारे दिन में कोई समय ऐसा नहीं होता जो बाबा मेरे सामने ना हो। दादी जी के वो महावाक्य ऐसे मेरे अंदर समा गए, जो मैं भी सारा दिन बाबा को अपने सामने देखने के पुरुषार्थ में लग गई। ऐसी मीठी दादी जी और बापदादा हर घड़ी मेरे साथ रहते हैं।

क्रोधमुक्त, प्रसन्नचित्त दादी

जब मैं मुंबई में दादी के पास रहती थीं, मैंने देखा, दादी जी बहुत शांत और प्रेम की मूर्ति हैं। एक दिन रात्रि को मैंने दादी जी से पूछा, दादी जी, क्रोध नहीं आए, इसकी कोई युक्ति बताइये? दादी जी ने कहा, राजा की तरह रहो, राजा अपने ही ख्यालों में मस्त रहता है, इधर-उधर नहीं देखता। अपने ही लक्ष्य को लेकर चलो, बस क्रोध मिट जाएगा। दूसरा, उन्होंने कहा कि आगे बढ़ने के लिए सहनशक्ति हो, क्यूँ में आप पीछे से आगे निकल जाओ तो आगे वाले आपको बोलेंगे ही, अगर आप सहन कर लेगी तो आगे ही रहोगी। यह शक्ति धारण करने से मीठे बन जाएंगे। मैं समझती हूँ दादी जी 10-12 प्वाईंट मुझे समझाती गई कि कैसे चलो जो शीतलता का अवतार बन जाओ।

मधुरता की खान आदरणीया दादी जी क्रोधमुक्त रहकर सदा प्रसन्नचित्त रहीं। हर परिस्थिति में इसकी वे प्रत्यक्ष मिसाल रहीं।

✪

ज्वेल इन द क्राउन ऑफ ब्रह्माकुमारीज़

–ब्रह्माकुमारी मनोरमा बहन, इलाहाबाद

वो रहनुमा दादी जी, अद्भुत प्रेरक शक्ति थीं। सच कहूँ तो दादी जी के बारे में लिखना मुश्किल कार्य है। मन में स्मृतियों के मेघ घुमड़ने लगते हैं, अनेक प्रसंगों की विद्युत चमकने लगती है।

ईश्वर की दिव्य प्रतिकृति थीं दादी जी

उन्होंने अपने जीवन में निर्मानता को व्यवहारिक जामा पहनाया, किसी भी कृत्य को 'मैं' शब्द नहीं दिया। मगरूरियत का मुजाहिरा नहीं हुआ। वे विनम्रता का साकार रूप थीं। हमेशा कहती थीं, बाबा करन-करावनहार है।

प्रीति निर्झरा दादी माँ स्नेह का अजस्र स्रोत थीं

स्नेह उनके हर आचरण में झलकता था। कभी पल भर विस्मृति नहीं हुई – न बाबा के प्रति और ना कभी यज्ञ के प्रति। दादी जी अनेकों बार कॉटेज के दरवाज़े पर आकर खड़ी हो जातीं। आते-जाते लोग तुरंत चुम्बकीय आकर्षण में बंधकर जहाँ के तहाँ रुक जाते । तपस्या धाम किस तपस्वी की यादगार है, स्वयं साकार होता गया।

विश्व वंदनीया दादी जी

दादी जी का कुशल प्रबन्धन देख लगता था, समय उनकी आज्ञानुसार बंधा है, वो नहीं। घड़ियों की सूई यथास्थान तब पहुँचती जब वह आसन पर वाणी सुनाने बैठ जाती थीं। हर सेवाकेंद्र की बहन से नाम सहित परिचित होना, एक बहुत बड़ी उपलब्धि थी। बहनों के चेहरे खिल जाते थे, हर भाई-बहन की दादी जी अपनी थी। वो स्वयं को विशेष कृपापात्र और समीप मानकर चलता। श्रद्धा-विश्वास दो सूत्र थे जो पंगू को चला देते। विशाल यज्ञ में एक नहीं, अनेक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन हुए। उन्हें सदैव जागरूक और अथक देखा। उनके स्नेह की अंजली से सुधा पान करते अनेकों बार संतों, विद्वानों,

वैज्ञानिकों को देखा। वे दादी जी के सम्मुख शिशुवत् हो जाते थे। विश्व वंदनीया दादी जी सदैव दोनों कर कमलों से जी भर स्नेह व सम्मान लुटातीं।

संकट विमोचक दादी जी

दया, करुणा, क्षमा ऐसी कि सदैव संकट मोचक बन समाधान स्वरूप बन जातीं, तपते मन को शीतल कर जाती। जब कभी प्रकृति विद्रुप बनकर कष्ट देने लगती, राजस्थान की मरुभूमि के मूक जानवर तड़प रहे होते तो ऐसे समय पर दादी जी ट्रक भरवा-भरवाकर चारा पहुँचातीं। कच्छ-भुज के भूकम्प में मेडिकल रिलीफ़ ट्रकों में भरकर अन्न, जल व अन्य आवश्यक सुविधाएँ ब्रह्मावत्सों द्वारा भिजवाईं। गुजरात ही नहीं वरन् हर स्थान पर सक्रिय सहयोग किया, बाढ़ पीड़ितों को भी पार लगाया।

ईश्वरीय सेवाओं के नित नए साधनों के द्वार खोलतीं

अरावली की पर्वत शृंखलाओं पर ही ज्ञान सरोवर बना हो ऐसा नहीं, दिल्ली में विशालकाय 'पद्म सरोवर' (ओ.आर.सी.), हैदराबाद में 'शांति सरोवर', और भी देश के विभिन्न स्थानों पर आपने रिट्रीट सेंटर खुलवाये। लाखों के जनसमुदाय में ईश्वरीय ज्ञान की बरसात सहजता से करतीं, श्रेय-प्रेय सर्व अन्य आत्माओं को देतीं। उनकी इन्हीं क्रिया-कलापों के आधार पर उदयपुर के मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय ने उन्हें डॉक्टरेट की मानद उपाधि से सम्मानित किया।

अगर व्यक्तिगत बात करूँ तो जैसे भगवान को कहते हैं, 'त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बंधु च सखा त्वमेव, त्वमेव विद्या द्रविणम् त्वमेव, त्वमेव सर्वम् मम देव देव'। मेरे लिए दादी जी सर्वस्व थीं। मैंने बहुत अंतरंग स्नेह पाया, जीवन के विभिन्न चित्र सामने आते हैं।

पप्पू पास हो गया

महामहिम ज्ञानी जैलसिंह जी का अभिनंदन पत्र बनाना था। यह ज़िम्मेवारी मुझे दी गई। मैंने लिखा, मन बार-बार पीछे हटता। आशा बहन जी प्रोत्साहित करतीं, लिखो मनोरमा, बाबा करवा रहा है। हमारे वरिष्ठ राजयोगी निर्वैर भाई जी कहते – घबराना नहीं, ये लेटर पैड ले जाओ, ऑपरेशन होगा, अनेक बार लिखना पड़ेगा, सफलता मिलेगी। मैं श्रद्धा-विश्वास का दामन थामकर लिखकर दादी जी के सम्मुख ले गई। दादी पढ़ती गईं, मुस्कराती गईं और कहा, मनोरम। बड़ी पक्की हिन्दी है, ज़रा और छोटा करो। मैं अंदर से गद्गद। आज दादी जी स्वयं करेक्शन दे रही हैं। मैं धन्य हो गई,जब दादी जी ने पास कर दिया तो निश्चय हो गया कि हो गई। वरिष्ठ लेखक राजयोगी जगदीश भाई जी की नज़रों से गुजरा, अन्य वरिष्ठजनों की मुहर लगी। मुझे इतनी ख़ुशी मिली –'पप्पू पास हो गया।'

मेरे लिए यह बहुत बड़ा अवार्ड था

एक बार मैं युवा प्रभाग की कांफ्रेंस का मंचन करके दादी जी के साथ पांडव भवन आई। दादी जी ने पांडव भवन के आँगन में खड़े होकर कहा, मनोरमा हमारी बेस्ट कन्डेक्ट करती है। शायद मैं कोई अन्य अवॉर्ड पाकर प्रसन्न नहीं होती, मेरे लिए यह बहुत बड़ा अवॉर्ड था।

दादी की नहीं, बाबा की नज़रें मुझ पर पड़ रही हैं

मुझे याद आता है, मैं यू.पी. के इटावा जनपथ से बी.ए. कर रही थी। दादी जी कलकत्ते से वापिस आबू जा रही थीं। स्टेशन पर हम सब मिलने गए। मेरे कल्चरल एक्टीविटी, मोनो प्ले, मिमीक्रीज़ के कार्यक्रमों में ग्राम्य भाषा अवधी, भोजपुरी का पुट होता तो कहतीं – 'बिहारी बाबू, तुम्हें मॉरीशियस भेज दूँ, जाओगी?' मुझे लगा, दादी की नहीं, बाबा की नज़रें मुझ पर पड़ रही हैं।

अद्भुत थी उनकी पारखी दृष्टि

उनके दो बोल भी अमृत समान जीवन दान दे जाते। युवा प्रभाग में मैं सक्रिय कार्यकर्ता रही। मीडिया प्रभाग ने चाहा कि मनोरमा बहन हमें दे दी जाए। दादी जी बड़े प्रेम से कहतीं, हाँ-हाँ, मनोरमा को ले लो, लेख व कविताएँ लिखती है ना। दोनों विंग का कार्य करे। लेकिन फिर मुझे धार्मिक प्रभाग की सेवा में व्यवस्थित कर दिया गया, अद्भुत थी उनकी पारखी दृष्टि। मुझे लगता था हमारी दादी जी, हमसे कुछ भी कहे, हम उसे पूरा कर उनकी आशाओं पर खरे उतरें।

दादी जी का महान् प्रज्ञा शक्ति सम्पन्न व्यक्तित्व था

कानपुर में मैंने सन् 1964 में मम्मा की गोद ली थी। उस समय मेरी आयु 10 वर्ष की थी। बाबा को भी दिल्ली में देखा लेकिन दादी जी की पालना को तो मैं कभी भी भूल नहीं सकती। जब मैं दादी जी के साथ मंच पर होती तो ऐसा लगता कि मैं बाबा के साथ हूँ, महान् प्रज्ञा शक्ति सम्पन्न व्यक्तित्व।

मुझे ऐसे लगता था कि मेरे ईष्ट ने बुलाया है

एक बात और कहना चाहूँगी। एक बार दादी जी कायिक रूप से अस्वस्थ थीं। मधुबन में अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन था। पहले मुझे निमंत्रण दादी जी के नाम से ही जाते थे और मैं दौड़ी चली आती थी। लोग कहा करते थे, इलाहाबाद और आबू एक कर दिया है। मुझे ऐसे लगता था कि मेरे ईष्ट ने बुलाया है।

उस कान्फ्रेंस के तहत जब मैं स्टेशन पर पहुँची तो समाचार मिला कि दादी जी अस्वस्थ हैं। पांडव भवन पहुँचने पर व्यवस्था देख रहे वरिष्ठ भाई जी ने कहा, आप आ गई, आपका नाम कई स्थानों पर रखा गया है। मैंने वाक्य पूरा किया – अब कहीं नहीं। वो मुस्कराये। मैंने कहा, मैं योग करने आयी हूँ, दादी जी स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करें।

मुझे दादी जी ने कहा, मनोरमा, कवि सम्मेलन तुम ही मंचन करो, मैं सुनने आऊँगी। उन दिनों एक डॉक्टर पीछे खड़ा रहता था, फिर भी दादी जी व्हील चेयर पर काव्य गोष्ठी में पधारी थीं। मैंने सरस्वती के वरद पुत्रों से पुन: दादी जी के सम्मुख उनकी श्रेष्ठ रचनाएँ पढ़वायी।

✪

दादी जी तो सबकी मनोकामना पूर्ण करने वाली थीं

–ब्रह्माकुमारी राज बहन, जालंधर

अति मीठी प्यारी दादी जी बाबा की अनन्य बच्चा तो थी हीं परन्तु पुरुषार्थ करते-करते हमारे देखते-देखते वे बापसमान सम्पूर्ण बनकर एडवांस पार्टी में जाकर हम सबको तीव्र पुरुषार्थी बनकर सम्पूर्ण बनाने के निमित्त बन गईं। सारा जीवन दादी जी अथक बनकर ज्ञान रत्नों से सबकी झोली भरती रहीं। अंत में भी हम सबने दादी जी के प्रश्न-उत्तर पढ़े। दादी जी का फ्राक दिल और विशाल बुद्धि थी। उनके प्यार को तो हम सबने बरसते हुए देखा है। उनको देखते ही हरेक को यही फील होता था कि दादी मेरी है। हमने देखा, दादी जी के हर कर्म से आध्यात्मिक शक्ति झलकती थी, जिसके कारण कठिन से कठिन कार्य को दादी जी ने सहज करके दिखाया।

दादी जी ऐसी चमत्कारी आत्मा थीं, ऐसे लगता था उनके साथ कोई विशेष शक्ति है

हमने मम्मा-बाबा की भी खूब पालना ली परन्तु कभी नहीं सोचा था कि साकार में इनसे अलग होंगे। बाबा के अव्यक्त होने के बाद दादी और दीदी दोनों ने एक मत होकर सारे यज्ञ का कारोबार सुचारु रूप से संभाला। साकार में बाबा से ली हुई प्यार और पालना का प्रत्यक्ष सबूत दिखाया। वंडर तो यह देखा कि जो प्यार बाबा ने साकार में हमको दिया, दीदी और दादी ने भी प्यार और पालना देने में कभी कमी नहीं महसूस होने दी। दीदी के अव्यक्त होने के बाद तो दादी जी ने सूक्ष्म में उनका सहयोग लेकर डायरेक्ट सर्व शक्तिवान बाप को कम्बाईंड रखकर कुशल प्रशासिका बनकर विश्व की सेवाओं को बढ़ाते हुए बाबा को प्रत्यक्ष करने के लिए तीव्र पुरुषार्थ की उड़ान में चार चांद लगा दिए। दादी जी की इस ऊँची स्थिति को बनते हुए हमने अपनी आँखों से देखा है। सन् 1975-76 की बात है, दादी जी का जालंधर में एक विशेष प्रोग्राम पर आना हुआ, जिसमें पी.ए.पी. का बैण्ड बजाकर दादी जी का भव्य स्वागत किया गया था। दादी जी ऐसी चमत्कारी आत्मा थीं, उनके आने पर न जाने कहाँ-कहाँ से गाड़ियाँ भर-भरकर आ रही थीं। कैसे दादी जी का प्यार चुम्बक की तरह सबको अपनी तरफ खींचता था। दादी जी के आने पर कोई न कोई ऐसा नवीन कार्य ज़रूर होता था, जो हमने सपने में भी नहीं सोचा हो और सेवाएँ सहज ही हो जाती थीं। ऐसे लगता था, उनके साथ कोई विशेष शक्ति है जो प्रोग्राम में विशेष मदद करती है। हम तो ख़ुशी और नशे में ऐसे मस्त होते थे, सेवाओं में न जाने कैसे अच्छी सफलता प्राप्त होती थी।

दादी जी ने हमें अविनाशी अमानत दी है

दादी जी के लिए एक विशेष प्रकार का बैज बनवाया था जिसका डिजाईन आर्मी बैज की तरह था। अंदर में शिवबाबा का डिजाईन था। दादी जी मुझे राज नहीं कहती थीं, राजि कहकर बुलाती थीं। दादी जी जब बाम्बे-कलकत्ता टूअर पर गईं, तो वहाँ सब दादी जी से पूछने लगे कि दादी, ये नए प्रकार का बैज कहाँ बनवाया? तो दादी कहतीं, राजि, तूने कैसा नए डिजाईन का बैज बनवाया, सब मुझे पूछने लगे, दादी बैज कहाँ से बनवाया? ख़ैर, मुख से तो क्या कहना था, दिल और दिमाग तो आज दिन तक कह रहा है कि दादी जी ने अविनाशी अमानत दी है शिक्षाओं और प्रेरणाओं की, अमिट छाप लगाई है जिसका वर्णन भी नहीं कर सकते, बाकी हम तो क्या आपको दे सकते हैं, जो पहले ही सागर के समान भरपूर है। हमारी झोली तो आपने अनन्य अमूल्य रत्नों से भरी है।

आज भी ऐसे महसूस होता है कि उनकी दिव्य शक्ति हमको पल-पल हिम्मत और प्रेरणाएं दे रही है

जीवन में अनेक कड़ी परीक्षाएँ आईं जिनको पार करने में असमर्थ समझते थे लेकिन मीठी-प्यारी दादी जी ने ममतामयी माँ बनकर पर्सनली बैठाकर ऐसी गहरी शिक्षाओं और अलौकिक शक्तियों से भरपूर किया और हल्का करके हर पेपर में पास करवा दिया। दादी माँ के उस अलौकिक प्यार को, अलौकिक शिक्षाओं को कदापि नहीं भूल सकते। आज भी ऐसे महसूस

होता है कि उनकी दिव्य शक्ति हमको पल-पल हिम्मत और प्रेरणाएं दे रही है, तो आख़िर कैसे भूल सकते हैं ऐसी मीठी माँ को।

दादी ऐसे-ऐसे हँसाती, बहलाती भी थीं

एक बार मैं दादी जी के साथ सैर करने जा रही थी, तो दादी जी ने पूछा, तुमको किसकी राजधानी में जाना है राधे की या कृष्ण की? मैंने कहा, दादी जी, मुझे तो मालूम नहीं, किसकी राजधानी में आऊँगी। दादी ने पूछा, तुम मम्मा से ज़्यादा प्यार करती हो या बाबा से? मैंने कहा, दोनों से। तो दादी ने कहा, दिल का सच्चा प्यार तो एक से होता है। अब बताओ, किससे दिल का नज़दीकी प्यार है? मैंने कहा, बाबा से ज़्यादा प्यार है। तो दादी ने कहा, तुम फिर कृष्ण की राजधानी में आओगी। दादी ऐसे-ऐसे हँसाती, बहलाती भी थीं।

दादी जी एक्टिव भी थीं और रमणीक भी

जब मम्मा कहीं टूअर पर जातीं तो दादी, मम्मा के साथ होती थीं। जब पहली बार दादी और मम्मा जालंधर में आए थे तब प्लेन से फूल गिराकर दादी और मम्मा का स्वागत किया गया था। दादी बहुत एक्टिव थीं। एक बार मम्मा और दादी अमृतसर आए थे। जब मम्मा को वापस जाना था तो लोगों ने बहुत हंगामा किया, जाने का रास्ता ही रोक दिया। दादी जी को न जाने कहाँ से टचिंग आई। पुलिस स्टेशन का रास्ता तक नहीं देखा था, फिर भी अकेले पुलिस स्टेशन जाकर, अचानक पुलिस की चार गाड़ियों के साथ वहाँ मौके पर पहुँच गईं।

सब लोग रास्ते से इधर-उधर हट गए। कहाँ लोग विघ्न डाल रहे थे, कहाँ दादी जी की कमाल ने शिव शक्तियों की जय-जयकार करवाई। दादी जी की उस कमाल को देखकर सब हैरान हो गए। जाते समय मम्मा मुझे और शुक्ला बहन को साथ मधुबन ले जा रही थीं। मम्मा की विदाई के कारण सब बच्चे प्यार के आँसू बहा रहे थे, तो दादी गाड़ी में बैठकर मम्मा को हँसी में कहतीं, 'मम्मा, आप बड़े निर्मोही हो, सब आपके लिए आँसू बहा रहे हैं, आपको तो एक भी आँसू नहीं आया। ऐसे-ऐसे मम्मा और दादी भी आपस में हँसी-मजाक करते थे, रमणीकता से आपस में रहते थे।

जब बाबा के पास मधुबन पहुँचे। बाबा ने दादी और मम्मा से पूछा, क्या ले आई हो पंजाब से? मम्मा ने जवाब दिया, बाबा, दो फूल लाए हैं सौग़ात में (राज बहन और शुक्ला बहन)। दादी साथ में मुस्करा रही थीं क्योंकि दादी जी ने ही हमको प्रेरणा दी थीं साथ में चलने की।

अन्त तक दादी जी की स्मरण शक्ति पॉवरफुल रहीं

कुछ समय पहले आखिरी समय पर जब दादी जी से मिलने गए, तो दादी जी की तबियत ठीक नहीं थी। लेकिन दादी जी की स्मरण शक्ति पॉवरफुल थी। हम 8-10 बहनें बैठी थीं। मुन्नी बहन ने कहा, दादी ये कौन हैं? दादी जी कहतीं, जालंधर की राजि है। यह सुनकर दिल कितना गद्‌गद् हुआ होगा। दादी जी की यादों की गहरी छाप लगी है जो दिल से मिट नहीं सकती।

हमें तो गर्व है कि ऐसे-ऐसे महारथियों की छत्रछाया में पलने का सुनहरा मौका मिला, जो कल्प-कल्प के लिए नूँध हो गई है। आज भी उन दिनों को याद करके ख़ुशी और नशा उतरता नहीं। दादी जी ने क्या नहीं किया, वह तो सबकी मनोकामना पूर्ण करने वाली थी। उनका रिटर्न हम चुका नहीं सकते। इनकी कुर्बानियों को भूल कैसे सकते हैं? हम सबके लिए जो फल वाला वृक्ष तैयार कर दिया है, इसको सींचने में कितने विघ्नों का सामना किया होगा? इसमें दादी हर पल सफल रही हैं इसलिए कर्मातीत बनकर हम सबको सम्पूर्ण बनने का पाठ पढ़ाकर गई हैं।

✪

दादी जी सरल तथा निरंतर तपस्वीमूर्त थीं

–ब्रह्माकुमारी चंद्रिका बहन, हिम्मत नगर

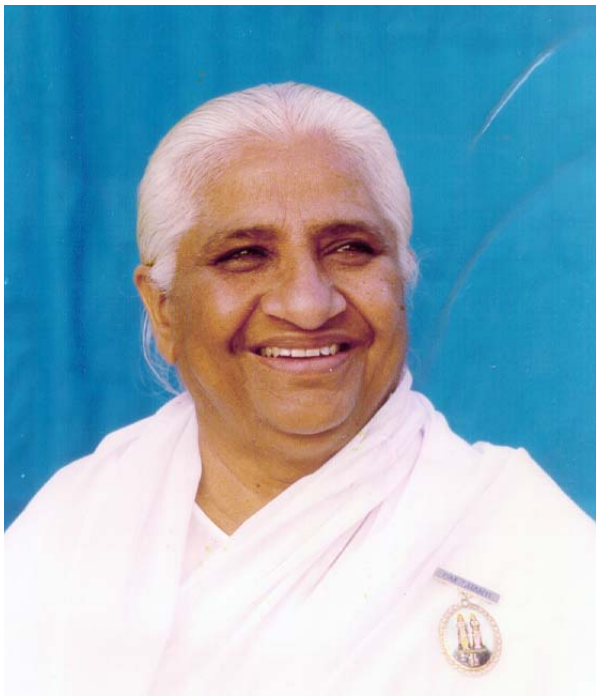

मैं, बाबा के अव्यक्त होने के बाद सन् 1971 में मुंबई-कांदीवली से ज्ञान में आई। साकार बाबा, मम्मा की पालना नहीं मिली लेकिन प्यारी कुमारका दादी (दादी प्रकाशमणि जी) की पालना जो शुरू से अंत तक मिली, उसमें प्यारे बाबा, मम्मा की पालना का अनुभव किया। दादी जी बहुत पवित्र, सच्ची दिल, फ्राक दिल वाली थीं। उनका कन्याओं से बहुत प्यार था।

दादी जी को देख, उन जैसे बनने की प्रबल प्रेरणा मिली

जब मैं पहली बार बाबा से मिलने मधुबन गई तो बाबा हिस्ट्री हॉल में ही मुरली सुनाने आते थे और इसी हॉल में हमें दादी जी सवेरे मुरली क्लास के बाद मिलीं, तो दादी जी से टोली, दृष्टि लेते समय ऐसा अनुभव हुआ कि जैसे यही मेरी सच्ची माँ है और अब मुझे यहाँ ही रहना है, लौकिक घर वापिस जाना ही नहीं है। फिर तो मेरे नयनों से प्यार के आँसू बहने लगे, जो मैं रोक न सकी। दादी जी ने मुझे गले लगाया और इतना प्यार दिया जो मैंने कभी पाया नहीं था लेकिन मेरे प्यार के आँसू बहते ही रहे। दादी जी ने मुझे बहुत पूछा कि जो भी बात है, बताओ लेकिन मैं कुछ बोल न सकी। दादी जी ने दादी शीलेन्द्रा जी से कहा कि बच्ची का दिल लेना। शीलेन्द्रा दादी जी ने मुझे अपने कमरे में बुलाया और प्यार से पूछा, क्या दिल है? जो बात है वो बताओ। मैंने कहा, मुझे यहाँ समर्पण होना है। मेरी कॉलेज की पढ़ाई चल रही थी। लौकिक पिता का बहुत बंधन था। समर्पण का स्वीकृति-पत्र मिलने वाला नहीं था। इसलिए मुझे कहा गया कि अभी कॉलेज की पढ़ाई पूरी करके समर्पण होना। मैं घर में रहते पढ़ाई करते कांदीवली सेंटर पर दिन में सेवा करने लगी। जैसे ही बी.काम. की परीक्षा पूरी हुई, मैं 15 दिन के लिए अहमदाबाद घूमने के बहाने डायरेक्ट हिम्मतनगर सेवाकेन्द्र, (जो कांदीवली-मुंबई द्वारा खोला गया था), आ गई।

दादी जी को देख लौकिक पिता जी भी पिघल गए

हमने आकर हिम्मत नगर में सेवा की शुरूआत की और वापस मुंबई नहीं गई। लौकिक बहन ज्योति भी आ गई (जो अभी खेडब्रह्मा सेवाकेंद्र सम्भाल रही हैं)। हिम्मतनगर में बहुत सेवा हुई, बहुत वी.आई.पी. ज्ञान में चलने लगे। पिताजी हमें ढूँढ़ते हुए माउण्ट आबू पहुँचे, तो म्यूज़ियम में प्रतिभा बहन (मुंबई-कांदीवली) से मिले। उनसे पिता जी ने पूछा, हमारी बच्ची कहाँ है? बहुत गुस्से में थे। प्रतिभा बहन ने बहुत प्यार से समझाकर ख़ातिरी की। प्यारी

दादी जी से मिलाने का वायदा किया। सभी बातें दादी जी को फोन से बताकर पिताजी को पांडव भवन में दादी जी के पास भेजा। दादी जी ने प्यार से पिता जी की बातें सुनी, समझाया और बहुत आदर-सम्मान किया। अपने साथ भोजन कराया, इतना प्यार दिया जो पिता जी पिघल गए। दादी जी ने कहा कि 6 मास में हिम्मतनगर की सेवा करके आपकी बच्ची मुंबई आ जाएगी, पिता जी मान गए। फिर हिम्मतनगर का पता दिया और पिता जी हिम्मतनगर हमें मिलने आए और क्लास के भाइयों से मिलकर आश्चर्यचकित हो गए कि इतने बड़े-बड़े वी.आई.पी. आ रहे हैं और मेरी बच्ची समझा रही है। क्लास के भाई-बहनों ने पिता जी को समझाया कि बहनों को यहाँ कुछ मास और रहने दीजिए, हमारी बहुत ऊँची जीवन बनाई है। हम पक्के हो जाएं, 6 मास के बाद भले मुंबई ले जाना। पिताजी मुंबई चले गए।

दादी जी दयालु, कृपालु व रहमदिल थीं

मैं सच बताऊँ, आज मैं जो कुछ हूँ, वह दादी जी के कारण हूँ। दादी जी ने मेरी दिल की बात सुनकर हिम्मत-उल्लास भर, सही मार्गदर्शन देकर मेरा जीवन इतना ऊँचा बनाया है। ईश्वरीय जीवन भी मेरा निर्विघ्न रहा है। बाबा का तो आशीर्वाद रूपी हस्त मेरे सिर पर है ही, लेकिन प्यारी दादी जी का भी वरदानी हस्त सदा मेरे सिर पर रहा है। आज भी मैं यही महसूस करती हूँ कि दादी जी मेरे साथ हैं ही हैं।

दादी जी पवित्रता की मूर्त थीं, दयालु, कृपालु व रहमदिल थीं। ब्रह्माकुमारी बहनों के आँसू देख नहीं सकती थीं। जल्द ही सच्चा मार्गदर्शन देकर समस्या का समाधान कर देती थीं। कभी किसी की कमज़ोरी वा ग़लती को चित्त पर नहीं रखती थीं इसलिए सरल तथा निरंतर तपस्वीमूर्त थीं। टीचर्स बहनों की भट्ठी के क्लास में पवित्रता और कर्मातीत अवस्था पर क्लास कराते समय दादी जी पवित्रता की मूर्त, कर्मातीत अव्यक्त फ़रिश्ता दिखाई देती थीं। निमित्त भाव, निर्माण भाव और निर्मल वाणी थी उनकी। मैंने कभी भी दादी जी की वाणी में मैं और मेरापन नहीं देखा, सदा करन-करावनहार बाप की स्मृति में निमित्त, निर्माण बनकर अथक सेवा करती रहीं।

हमें गौरव और ईश्वरीय नशा है कि हिम्मतनगर का छोटा या बड़ा कोई भी प्रोग्राम दादी जी की उपस्थिति में ही हुआ है। नये भवन के भूमिपूजन के वक्त तो दादी जी, अन्य सर्व दादियों और मधुबन निवासियों सहित पधारीं। दादी जी ने कभी भी कोई भी निमंत्रण अस्वीकार नहीं किया।

✪

नज़र से निहाल करने वाली दादी माँ

–ब्रह्माकुमारी दमयंती बहन, जूनागढ़

आज से 42 वर्ष पूर्व बाम्बे में वाटरलू मेन्शन सेन्टर पर दादी जी के साथ एक मास रहने का परम सौभाग्य मुझ आत्मा को प्राप्त हुआ था। उस थोड़े ही समय में मुझे दादी जी के अंग-संग रहने से अलौकिक जीवन को सफल करने की बहुत सारी प्रेरणाएँ मिलीं।

दादी जी ने मुझमें बेहद की भावना जागृत की

दादी जी के जीवन से मैंने स्नेह और शक्ति का अनुभव किया। दिल की हर बात नि:संकोच दादी जी से करती थी, जिससे बहुत ही हल्केपन का अनुभव होता था। मन के हर संकल्प को दादी जी के साथ शेयर करती थी। दादी जी ने मुझमें बेहद की भावना जागृत की। ऐसी थीं हम सबकी ममतामयी माँ दादी जी।

यह थी प्यारी दादी जी के दृष्टि की शक्ति की कमाल

जीवन में कई अनुभव ऐसे होते हैं जिनको भुलाना चाहो तो भी नहीं भूल सकते हैं। ऐसे कई अनुभवों में से एक अनुभव आज से छह साल पहले का है। मैं और 5 बहनें, (जूनागढ़ और उसके कनेक्शन की), साथ में एक भाई, टोटल 7 भाई-बहनें, एकाउण्ट ऑडिट पूरा करके मधुबन से दोपहर 2 बजे शांतिवन (जूनागढ़ वापिस जाने के लिए) पहुँचे। वहाँ पर दादी जी से छुट्टी लेने के लिए दादी कॉटेज में पहुँचे, तो तुरंत ही मुन्नी बहन ने कहा, आओ, दादी जी की दृष्टि ले लो। जैसे ही हम 6 टीचर्स बहनें दादी जी के सामने बैठे, बहुत ही शक्तिशाली दृष्टि देते हुए सभी को फल दिया। फिर अचानक ही दादी जी ने कहा, अच्छा, जाने से पहले सभी 'मेरे बाबा के कमरे में' (दादी कॉटेज में जो बाबा का कमरा है) बाबा से दृष्टि लेकर जाओ। उस घड़ी कुछ अजीब-सा अनुभव मैं और अन्य बहनें कर रही थीं। हम सभी बाबा के कमरे में बैठे। कमरे से बाहर निकले तो दादी जी, कॉटेज में ही खड़ी थीं, जैसे कि हमारे ही इंतज़ार में थीं। हमने कहा, दादी जी, हम अभी निकलते हैं। फिर दादी जी ने हम सभी को खड़े-खड़े दृष्टि दी, उसी समय कोई वी.आई.पी. मिलने के लिए आये थे। तब दादी जी ने कहा, उनको बैठाओ। फिर अचानक ही दादी जी ने हाथ पकड़ा और पूछा, आप बहनें किस गाड़ी में जा रही हो? दादी जी कॉटेज से बाहर आईं। हमने कहा, दादी जी बाहर बहुत ही धूप है, आप नहीं आओ। तो भी दादी जी धूप में बाहर आईं और टोयोटो क्वालिस गाड़ी थी, उसके पास जाकर खड़े होकर दृष्टि देने लगीं और कहा, जूनागढ़ पहुँचते ही मुझे फोन करना कि हम पहुँच गए। हमने कहा कि हम तो रात को 2 बजे पहुँचेंगे। फिर भी दादी जी ने कहा, पहुँचते ही फोन ज़रूर कर देना। जैसे माँ अपने बच्चों को विदा करती है, उसी तरह का अनुभव हो रहा था। हमारी यात्रा शुरू हुई। लगभग 2 से 2:30 बजे (रात्रि को) के बीच में जब हम जूनागढ़ से 9 किलोमीटर की दूरी पर थे, हमारी गाड़ी गड्ढे में गिर गई। झाड़ के साथ भी टकराई। उस समय जैसे बाबा, मम्मा वा दादी जी हमारे साथ ही हैं, ऐसा अनुभव हो रहा था। ना किसी के मन में डर और ना चिंता थी। अंदर से धक्का लगाकर दरवाज़ा खोला और हम एक-एक करके बाहर निकले, फिर तो बाबा की मदद से सब तरफ से मदद भी मिल गई। जूनागढ़ से सभी भाई भी पहुँच गए। हम सभी का यह चमत्कारी बचाव था। किसी को कुछ भी नहीं हुआ। कार को जब कम्पनी में ले गए तब कार की हालत देखकर कम्पनी वालों ने कहा कि कितने लोग मर गए, कोई भी ज़िंदा नहीं बचा होगा? तब कहा गया कि किसी को भी, ज़रा-सी चोट भी नहीं आई। यह थी हमारी प्यारी दादी जी की दृष्टि की शक्ति, जो सर्वशक्तिवान बाप को साथ रखकर हम सभी का बचाव किया और हम सभी बाबा की सेवा में लग गए।

ऐसी थी हमारी प्यारी दादी जी की कमाल। अंदर ही अंदर गूँजता रहता है – वाह बाबा वाह, वाह दादी जी वाह, तब गर्व के आँसू आ जाते हैं।

✪

सभी प्रश्नों का उत्तर – दादी माँ

–ब्रह्माकुमारी राज बहन, मंगलवाडी, बड़ौदा

सभी प्रश्नों का उत्तर, सभी समस्याओं का समाधान और हर दर्द का इलाज़ होती है ममतामयी माँ। कहते हैं, भगवान ने जन-जन तक जाने का माध्यम माँ को ही बनाया। ऐसी ही एक माँ का नाम है – दादी प्रकाशमणि जी।

मैंने अपने 37 वर्षों के समर्पित जीवन में दादी जी द्वारा भिन्न-भिन्न रूप की पालना का अनुभव किया। कभी माँ के रूप में दुलार, कभी शिक्षक के रूप में समझ तो कभी वरदानी के रूप में वरदान लुटाते हुए देखा। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि भगवान ने दादी जी को बड़ी ही रुचि से रचा और उनको हर गुण व कला के रंग से सजाया।

दादी जी के संकल्प व वाणी में शक्ति थी जो अपना पूर्ण प्रभाव दिखाती

बात सन् 1975 की है, मैं अपने जीवन का फैसला कर समर्पित जीवन व्यतीत करने के लक्ष्य से मधुबन में पहुँची। दादी जी से मिलने पर उन्होंने मुझे मुंबई गामदेवी सेवाकेंद्र पर यह वरदान देकर भेजा कि राज, मैं तुम्हें अपनी कर्मभूमि पर भेज रही हूँ। यदि तुम यहाँ पास हो गई तो सदा हर सेवास्थान पर पास होती रहोगी। वहाँ मुझे हर तरह की सेवा का अवसर प्राप्त हुआ। दो वर्ष पश्चात् मार्च 1977 में बड़ौदा गुजरात में विशाल मेले के आयोजन में दादी जी ने मुझे बड़ौदा सेवाकेंद्र पर भेजा और कहा कि राज, मैंने यहाँ भी सेवा का बीज डाला हुआ है। तुम जाओ और उसे फलीभूत करो। आज उनके वे वरदानी बोल साकार होते देख रही हूँ। मैं निरंतर 36 वर्षों से बड़ौदा शहर में अपनी सेवाएँ दे रही हूँ। केवल बड़ौदा शहर में ही 10 से अधिक सेवाकेंद्र जन-जन की सेवा कर रहे हैं। दादी जी के वरदान का वरदहस्त आज भी मैं अनुभव करती हूँ, जो मुझे निरंतर आगे बढ़ने का अहसास कराता है। उनके संकल्प व वाणी में शक्ति थी जो अपना पूर्ण प्रभाव दिखाती। वर्तमान समय दादी जी का शक्तिशाली संकल्प साकार ही नहीं वरन् फलीभूत भी हो रहा है।

करुणा, ममता और सरलता की देवी

मैं भुला नहीं सकती उस दिन के उन चन्द लम्हों को, जब मैं मधुबन में वार्षिक मीटिंग के लिए गई थी। अचानक बी.पी. बढ़ जाने से मेरी तबीयत बहुत बिगड़ गई। हज़ारों की संख्या में सम्पूर्ण भारत से पधारे मुख्य भाई-बहनों की उपस्थिति में संस्था की मुख्य प्रशासिका होने के नाते अत्यंत व्यस्तता के बावजूद जैसे ही दादी जी को मेरी तबीयत का पता चला, वे समस्त व्यस्तताओं को छोड़ मोहिनी बहन जी के साथ मेरे कमरे में हालचाल पूछने आ गईं। एक अंतर्राष्ट्रीय संस्था की मुख्य प्रशासिका का इस तरह मेरे कमरे में आकर मेरा हालचाल पूछना, मेरे सिर पर हाथ फेरना और अपने हाथ में मेरा हाथ लेते हुए दवा आदि के बारे में पूछना, उनके करुणामय व्यवहार को प्रगट करता है। दादी जी के इस करुणामय व्यवहार ने मेरे दिल को जीत लिया और मेरी पीड़ा को सच में दूर कर दिया। मेरे लिए इससे धन्य कौन-सी घड़ी होगी? जिनसे मिलने को लाखों लोग आतुर रहते हैं, वे स्वयं मेरे कक्ष में चलकर मेरा हाल पूछने आईं। भला कैसे भुलाया जा सकता है ऐसी करुणामयी ममतामयी दादी जी को? यही नहीं, ऐसे अनेकों छोटे-बड़े अवसर आए जिनमें दादी जी ने ही हमें मार्गदर्शन दिया। उनके सरल, सहज व्यक्तित्व में असामान्य एवं अद्भुत विशेषताओं का अहसास होता। उनके व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता जो मैंने बार-बार अनुभव की, वह थी सरलता जो सहज ही दूसरे को अपना बना लेती थी।

✪

दादी जी गुणों और अनुभवों की निधि थीं

–ब्रह्माकुमार रमेश भाई शाह, गामदेवी, मुंबई

दादी प्रकाशमणि जी ने मुझे तथा मेरे लौकिक परिवार को अनेक रीति से संवारा। आज मैं तथा मेरे लौकिक परिवार वाले जो भी ईश्वरीय सेवायें कर रहे हैं, उसके पीछे उनकी पालना का महत्त्वपूर्ण स्थान है। बातें तो अनेक हैं, समझ में नहीं आता कहाँ से शुरू करें और कहाँ अन्त करें क्योंकि लेख के रूप में लिखने की एक मर्यादा होती है, फिर भी संक्षिप्त में दादी जी के साथ के संस्मरण लिखता हूँ।

दादी जी जहाँ पाँव रखती थीं वहाँ सेवा हो जाती थी

सन् 1952 में जब मेरा इस विश्व विद्यालय के साथ परिचय हुआ तब से इसके सभी अनन्य रत्नों का परिचय तो था ही और कइयों के परोक्ष व अपरोक्ष रूप से संपर्क में भी आया था। जब दादी जी और रतनमोहिनी दादी जी जापान गये, तब मुझे वह समाचार मिला और मैंने दादी जी को पत्र लिखा कि श्रीमद्भगवद्गीता पाठशाला के मुखिया पांडुरंग शास्त्री जी तथा उनके एक साथी जिनके साथ मेरा पहले बहुत घनिष्ठ संबंध था तथा जो बाहर के तत्वज्ञान के बहुत बड़े विद्वान हैं, भी जापान के विश्व धर्म सम्मेलन में आये हुए हैं, तो आप उनको भोजन के लिए रोज़ अपने पास बुलाना और उनकी ईश्वरीय सेवा करना। मैंने शास्त्री जी को भी मुंबई में कहा था कि आप और आपका साथी दोनों अकेले जापान जा रहे हैं, वहाँ आपको खाने की दिक्कत होगी इसलिए मैंने ब्रह्माकुमारी बहनों को लिखा है, आप भी उनसे संपर्क करना। दोनों ने मेरी बात मानी और जापान की दस दिन की कांफ्रेंस में दादी जी ने और रतनमोहिनी दादी जी ने उन दोनों को अपने हाथ से पकाया हुआ पवित्र भोजन खिलाया और साथ ही यज्ञ का इतिहास भी बहुत विस्तार से सुनाया। परिणामरूप, जब शास्त्री जी मुंबई आये तब उन्होंने मुझे कहा कि रमेश भाई, ब्रह्माकुमारी संस्था का इतिहास सुनकर जब मैंने जाना कि पुरुष प्रधान समाज ने बहनों की आध्यात्मिक उन्नति में कितनी रुकावट डाली तो मेरी आँखों में पानी भर आया। बाद में हमेशा ही शास्त्री जी का विश्व विद्यालय के साथ स्नेह भरा संबंध रहा और शास्त्री जी प्यारे ब्रह्मा बाबा तथा प्यारी मातेश्वरी जी से मिलने भी आये। इस प्रकार से, अपरोक्ष रूप से दादी जी के द्वारा सेवा हुई, उसका मैं साक्षी हूँ।

दादी जी ने ही पहली प्रदर्शनी के सभी चित्रों की समझानी फाइनल की

बाद में दादी जी जब पटना में थे और ब्रह्मा बाबा जब मुंबई आते थे तो दादी जी भी मुंबई का चक्कर लगाती थीं परंतु मेरा इतना घनिष्ठ संबंध दादी जी के साथ नहीं था क्योंकि ब्रह्मा बाबा की उपस्थिति में ज़्यादा कारोबार ब्रह्मा बाबा से ही होता था। परंतु जब सन् 1964 में हम सबने प्रदर्शनी के चित्र बनाने का कार्य शुरू किया तो पहला-पहला चित्र 'सच्चा वैष्णव कौन?' बनाया गया और ब्रह्मा बाबा के पास वह चित्र लिखत सहित प्रमाणित कराने के लिए भेजा गया। दो दिन में ही ब्रह्मा बाबा ने उस लिखत में सुधार कर दुबारा अच्छे अक्षरों में लिखवा कर भेजा तो मैंने ब्रह्मा बाबा को पत्र लिखा कि बाबा, ये आपके अक्षर नहीं हैं, ये किसने लिखा है? तो ब्रह्मा बाबा ने लिखा कि बच्चे, कुमारका बच्ची यहाँ है, उसी ने लिखत को सुधार करके भेजा है। तो हमने ब्रह्मा बाबा को लिखा कि जब हमारे चित्रों की लिखत कुमारका बहन को ही फाइनल करनी है तो क्यों नहीं आप कुमारका बहन जी को

अपने प्रतिनिधि के रूप में मुंबई भेज दें। बाबा ने हमारी बात को माना और टेलीग्राम किया कि कुमारका बच्ची को रिसीव करो। इस प्रकार प्रदर्शनी के पहले चित्र से ही दादी जी का पूर्ण सहयोग प्रदर्शनी की सेवा के लिए मिला और दादी जी ने ही प्रदर्शनी के सभी चित्रों की समझानी फाइनल की। जब पहली प्रदर्शनी का उद्घाटन महाराष्ट्र के राज्यपाल मंगलदास पकवासा ने किया तब दादी जी और ऊषा बहन ने उन्हें समझाया और उनसे ओपिनियन लिखवाया। गवर्नर ने लिखा, यह अद्भुत (Marvellous) प्रदर्शनी है। बाद में सभा में संबोधन के लिए भी गवर्नर गये। इस प्रकार से प्रदर्शनी सेवा में ओपिनियन लिखवाने की शुरूआत भी दादी जी ने की। बाद में मातेश्वरी जी का मुंबई आना हुआ और मातेश्वरी जी ने दादी जी तथा सभी महारथी भाई-बहनों को बुलाकर प्रदर्शनी की सेवा विहंग मार्ग की सेवा है, यह प्रस्तावित किया।

इतने में ही ब्रह्मा बाबा को ईस्टर्न ज़ोन की सेवा के लिए अच्छे हैण्ड्स की जरूरत थी तो दादी निर्मलशान्ता ने कोलकाता जाने की ऑफर ब्रह्मा बाबा को की और ब्रह्मा बाबा ने फौरन उस बात को स्वीकार कर दादी निर्मलशान्ता को वहाँ भेजा और दादी प्रकाशमणि को गामदेवी सेन्टर (उस समय वाटरलू मेन्शन) का इंचार्ज बनाया। तब से दादी प्रकाशमणि जी के साथ हमारे लौकिक परिवार का संबंध जुटा और वह संबंध दादी के अव्यक्त होने तक इतना ही घनिष्ठ रहा।

गामदेवी सेंटर का स्थान दादी जी ने ही चुना था

वाटरलू मेन्शन में जब सेवाकेन्द्र था, तब वहाँ से उसको स्थानांतरित करने की बात चल रही थी। हम मकान ढूँढ़ रहे थे। दादी जी, मैं और ऊषा बहन कार में गामदेवी सेन्टर के पास ही खड़े थे। मैंने दादी जी को पूछा, आपको कहाँ पर मकान लेना है, कहाँ पर मकान के लिए कोशिश करें? उस समय गामदेवी का दारु-उल-मुलक भवन नया बना ही था, उसके प्रति दादी जी ने इशारा किया कि ऐसे मकान में अगर सेन्टर खुल जाये तो बहुत अच्छी ईश्वरीय सेवायें हो सकती हैं। ड्रामा प्लैन अनुसार उसी भवन में एक फ्लैट हमने बुक कराया था तो हमने अपने लौकिक परिवार से चर्चा करके दूसरे ही दिन दादी जी को वह फ्लैट ईश्वरीय सेवा में देने का ऑफर किया। दादी जी को वह फ्लैट बहुत ही पसंद आया और कहा कि हम आबू चलते हैं, बाबा से स्वीकृति लेकर इस फ्लैट में सेवा शुरू करेंगे। दो दिन पश्चात् हम आबू गये, ब्रह्मा बाबा से स्वीकृति ले वापिस आये और वाटरलू मेन्शन से सेवाकेन्द्र का स्थानांतरण गामदेवी में हो गया और उसी स्थान पर रहकर ब्रह्मा बाबा के अव्यक्त होने तक दादी जी ने सेवायें की। इस प्रकार सन् 1964 से 1968 तक अर्थात् पाँच वर्षों तक दादी जी से निरंतर पालना लेने और आगे बढ़ने का सौभाग्य हमें मिला।

मातेश्वरी जी के स्थान पर दादी जी की नियुक्ति हुई

मातेश्वरी जी 24 जून, 1965 को अव्यक्त हुए तो हम सब मधुबन आये और थोड़े दिन रहकर दादी जी के साथ वापस मुंबई गये। तब मैंने ब्रह्मा बाबा को पत्र लिखा कि बाबा अब मातेश्वरी के स्थान पर यज्ञ की मुख्य संचालिका कौन होगी, इसका निर्णय आपको करना होगा और यह निर्णय लिखित में हो तो अच्छा रहेगा। ब्रह्मा बाबा ने दिनांक 01.04.1966 की साकार मुरली के अंतिम पेज पर अपने हाथों से सिंधी अक्षरों में दादी प्रकाशमणि को मुख्य प्रशासिका तथा दीदी मनमोहिनी को अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका के रूप में नियुक्त करने का नियुक्ति-पत्र लिखा। बाबा ने मुझे इसकी एक कॉपी भेजी और कहा कि बच्चे, आज मैंने यह नियुक्ति-पत्र लिखा है

और मुरली के द्वारा सबको सूचना दे दी है। इस प्रकार 1 अप्रैल, 1966 से दादी जी की मुख्य प्रशासिका के रूप में नियुक्ति हुई और वह कार्यभार उन्होंने 25 अगस्त, 2007 तक बड़ी कुशलता से संभाला।

फिर नवंबर 1968 में मैंने ब्रह्मा बाबा को पत्र लिखा कि बाबा, आपने दादी जी को मुख्य प्रशासिका के रूप में नियुक्त तो कर दिया है परंतु कुमारका बहन तो मुंबई में हैं, उन्हें यज्ञ का कारोबार संभालने का अनुभव और आपका मार्गदर्शन कैसे मिलेगा? तब बाबा ने युक्ति से मुझे और कुमारका दादी को वर्ल्ड रिन्युअल स्प्रीच्युअल ट्रस्ट के निर्माण के संबंध में आबू बुलाया। दीदी मनमोहिनी तथा दादा आनन्द किशोर आबू में ही थे। ब्रह्मा बाबा ने ट्रस्ट के बारे में राय-सलाह करने के लिए हम चार लोगों (मैं, दादी, दीदी तथा दादा आनन्द किशोर) की कमेटी बनाई। चर्चा के अंतिम दिन प्रश्न निकला कि ट्रस्ट का मैनेजिंग ट्रस्टी कौन बने? प्रकाशमणि दादी और दीदी मनमोहिनी ने आपस में राय करके रात्रि क्लास में ब्रह्मा बाबा से मुझे मैनेजिंग ट्रस्टी के रूप में नियुक्त करने की बात की। मैं मना कर रहा था क्योंकि मुझे उसका अनुभव नहीं था तो दादी जी ने कहा, रमेश जी, आप यह कारोबार संभालो, मैं आपकी पूरी मददगार बनूँगी। दादी जी ने अपना यह वचन अंत तक निभाया और मुझे हर बात में ट्रस्ट के कारोबार में सहयोग दिया। दूसरे दिन ब्रह्मा बाबा ने मुझे तो ट्रस्ट के निर्माण का कारोबार करने के लिए मुंबई भेज दिया और दादी जी को आबू में रखा। दिसंबर 1968 से 18 जनवरी तक ब्रह्मा बाबा ने दादी जी को मुख्य प्रशासिका के रूप में कारोबार करने का गहन प्रशिक्षण देना शुरू किया। बीच में मैं भी दो बार आबू आया था और ब्रह्मा बाबा से मिली हुई शिक्षाओं का थोड़ा-सा स्वाद मुझे भी दादी जी द्वारा मिला।

सोलह जनवरी, 1969 को मैं आबू संग्रहालय का मकान खरीदने की बातचीत करने के लिए अहमदाबाद आया और 17 जनवरी, 1969 को मकान मालिक के साथ 95% बातें निश्चित कर रात को मधुबन में ब्रह्मा बाबा को फोन पर सारा समाचार दिया और पूछा कि मकान मालिक तो एक हफ्ते में आबू आकर मकान का एग्रीमेंट साइन करेगा तब तक मैं कहाँ जाऊँ, मधुबन आऊँ या बड़ौदा में जो प्रदर्शनी चल रही है, वहाँ जाऊँ? ब्रह्मा बाबा ने मुझे बड़ौदा जाने की श्रीमत दी परंतु दादी जी ने ब्रह्मा बाबा के हाथ से फोन लेकर मुझे सूचना दी कि आप मधुबन आ जाना और बड़ौदा ना जाना। मैंने 18 जनवरी को रात 11 बजे की ट्रेन से आबू पहुँचने का तय किया। बाद में ब्रह्मा बाबा के अव्यक्त होने पर दादी जी ने पहला-पहला फोन मेरे लिए ही करवाया और उन्हें मालूम चला कि रमेश आबू आने के लिए निकल गया है।

दादी जी ने मुझे बाबा के अंतिम संस्कार कार्यक्रम की ज़िम्मेवारी दी

उन्नीस जनवरी, 69 को मुझे आबू पर्वत पहुँचने पर, बस अड्डे से पांडव भवन जाने के रास्ते में ब्रह्मा बाबा के अव्यक्त होने का समाचार मिला। जब मैं पांडव भवन पहुँचा तो दादी जी, संतरी दादी और ईशू दादी मेरे इंतज़ार में ही बैठे थे। तीनों मिलकर मुझे बाबा के कमरे में ले गये और तीन मिनट हमने ब्रह्मा बाबा के पार्थिव शरीर के सामने खड़े होकर योग किया। बाद में मैंने दादी जी को कहा कि आपने ब्रह्मा बाबा के शरीर को सारी रात अच्छी रीति संभाला है, अब आगे का काम हम भाइयों का है, हमें करने की इजाजत दीजिए। दादी जी ने मुझे पूछा कि क्या आपको यह सब करने का अभ्यास है? मैंने 'हाँ' कहा और दादी जी ने मुझे अंतिम संस्कार करने की ज़िम्मेवारी दी। बाकी सब बातों का निर्णय करना तो मेरे लिए सहज था परंतु मुखाग्नि कौन करे, यह प्रश्न सामने था क्योंकि सारा ही दैवी परिवार मौजूद था। ब्रह्मा बाबा का लौकिक परिवार भी मौजूद था इसलिए मैंने अव्यक्त बापदादा से

संदेश पूछा कि मुखाग्नि कौन देगा। तो बाबा ने यही संदेश दिया कि यह सारी मानव जाति के अलौकिक पिता का अग्नि-संस्कार है और इस दैवी परिवार में तो सबसे बड़ा और मुरब्बी बच्चा दादी प्रकाशमणि ही है इसलिए दादी प्रकाशमणि ही ब्रह्मा बाबा के पार्थिव शरीर को मुखाग्नि देगी।

एक फरवरी 1969 को जब हमारे परिवार ने दादी जी से छुट्टी माँगी तब दादी जी की आँखों में पानी भर आया और उन्होंने हमारे परिवार को कहा कि क्या आप भी हमें यहाँ छोड़कर मुंबई जायेंगे? तब हम सबने दादी जी को वचन दिया कि हम सदैव हर समय, हर बात में दादी जी के पूर्ण मददगार रहेंगे। इस प्रकार दादी जी के साथ हमारे यज्ञ-सेवा के पार्ट की शुरूआत भी दादी जी के मुखारविन्द द्वारा हुई। उसके बाद का इतिहास तो सबको मालूम ही है कि कैसे दादी जी ने गैलप करके अपनी सीट की जिम्मेवारी उठाई और अपने आप को मुख्य प्रशासिका के रूप में सबके दिलों में प्रस्थापित किया।

दादी जी हमारे परिवार की अलौकिक माँ थीं

सन् 1977 में बड़ी दीदी मुंबई आयी हुई थीं, उस समय दादी प्रकाशमणि जी का विदेश यात्रा का कार्यक्रम बन रहा था। बड़ी दीदी ने मुझे कहा, रमेश, आप आबू चलो, दादी जी का विदेश यात्रा का कार्यक्रम बन रहा है, उसमें आपके मार्गदर्शन की जरूरत पड़ेगी। बड़ी दीदी के साथ मैं और ऊषा बहन आबू आये। जब अव्यक्त बापदादा से दादी जी की विदेश यात्रा के बारे में संदेश लिया गया तो अव्यक्त बापदादा ने दादी जी के साथ मुझे भी विदेश जाने का आदेश दिया। दादी जी के साथ चार मास से भी अधिक समय विदेश यात्रा पर जाने का सौभाग्य मिला। इस दौरान बहुत-सी बातें दादी जी से सीखी और दादी जी से माँ-बेटे का स्नेह और मार्गदर्शन प्राप्त किया। इस प्रकार दादी जी ने हमारे दिल में अलौकिक माता का स्थान पक्का किया।

दादी जी ने ही मुझे प्लेन में सेवा करना सिखाया

मुंबई से जब ईश्वरीय सेवा पर निकले तब दादी जी ने प्लेन में ही मुझसे पूछा, आप प्लेन में क्या करते हो। मैंने कहा, ऐसे ही बैठा रहता हूँ, बाबा को याद करता हूँ। तो दादी ने कहा, क्यों नहीं आप पत्र लिखते और सबको यात्रा का समाचार भेजते? उस समय फैक्स या ई-मेल तो थे नहीं, टेलिफोन बहुत महंगे थे। हमने पत्र लिखना शुरू किया। कैरो से हमारे साथ अमेरिका की बहुत बड़ी कंपनी का डायरेक्टर साथ में था तो दादी जी ने हमें उनकी सेवा करने के लिए कहा। मैंने उन महानुभाव से पूछा, आप परमात्मा को मानते हो? उसने 'ना' कहा। मैं सोच में पड़ गया कि नास्तिक को अपना ज्ञान कैसे सुनाऊँ? मैं दादी जी के पास मार्गदर्शन के लिए गया और पूछा। दादी जी ने कहा, नैतिकता की बातें सबको पसंद आती हैं इसलिए साकार बाबा की मुरली से सिविल आई और क्रिमिनल आई की बातें करो। मैंने उस आत्मा को ये बातें बताई और फ्रेंकफर्ट पहुँचते-पहुँचते वह नास्तिक से आस्तिक बन गया।

दादी जी का दृष्टिकोण दूरांदेशी तथा सराहनीय था

अमेरिका में हम चार दिन ही थे तभी ईश्वरीय सेवार्थ अमेरिका में संस्था को रजिस्टर्ड कराने का सोचा गया। तब मैंने दादी जी से पूछा, क्या हम अमेरिका में संस्था को रजिस्टर्ड करायें, तब दादी ने कहा, मैं भारत में बड़ी दीदी से फोन करके पूछती हूँ। मैंने दादी को कहा कि मुख्य संचालिका तो आप हैं, आप निर्णय करें। दादी ने कहा, नहीं रमेश, जो मधुबन में है, वही मुख्य संचालिका है क्योंकि मधुबन ही यज्ञ का मुख्यालय है। तो मैं मुख्य

संचालिका होते भी मुख्यालय की स्वीकृति के बिना यहाँ पर संस्था को रजिस्टर्ड कराने की स्वीकृति नहीं दे सकती। फोन पर बड़ी दीदी से स्वीकृति प्राप्त करने के बाद ही बड़ी दादी ने मुझे रजिस्ट्रेशन के लिए कागज़ बनाने को कहा। मैंने कागज बनाये और उनमें वहाँ के भाई-बहनों के नाम ट्रस्टी के रूप में लिखे तब मुझे दादी की दूरांदेशी बुद्धि का विशेष अनुभव हुआ। दादी जी ने कहा कि इसमें अपना भी नाम डायरेक्टर के रूप में लिखो। मैंने कारण पूछा तो दादी जी ने कहा, यह ट्रस्ट भले ही अमेरिका में रजिस्टर्ड है परंतु भारत के साथ इसके संबंध को कानूनी रूप देने के लिए भारत के प्रतिनिधि के रूप में ट्रस्टी मण्डल में आपका नाम होना जरूरी है। दादी जी के इस सुझाव के आधार पर मैंने अपना नाम वहाँ के ट्रस्टी मण्डल में लिखवाया। इस प्रकार विश्व सेवा प्रति भी दादी जी का दृष्टिकोण सराहनीय था। बाद में दादी जी ने मुझे जर्मनी, अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया, सिंगापुर, हांगकांग आदि स्थानों पर ईश्वरीय सेवा को कानूनी रूप देने के निमित्त बनाया।

मैं तो इन्कम टैक्स का वकील था, कानून की बातों को नहीं जानता था पर बापदादा की श्रीमत के आधार से मुझे यज्ञ सेवार्थ मकान खरीदने और अन्य संस्थाओं का निर्माण करने का सुअवसर भी दादी जी ने ही दिया।

बाद में विदेश से भारत आकर भारत के सभी मुख्य स्थानों पर भी दादी जी के साथ मेरा जाना हुआ। दादी जी ने हर जगह जाकर विदेश यात्रा के संस्मरण सुनाए।

यहाँ एक विशिष्ट अनुभव लिख रहा हूँ। जब हम दिल्ली पहुँचे तो वहाँ करीब 2,000 भाई-बहनें आये हुए थे। कार्यक्रम के अंत में टोली बाँटने का प्रसंग आया। दादी जी ने कहा, मैं बहनों को और आप भाइयों को टोली बाँटो। वहाँ करीब 1200 बहनें और 800 भाई थे। मैं तो 800 भाइयों को टोली बाँटते थक गया, हाथ दर्द करने लगा। मैंने दादी को कहा, मुझे टोली बाँटने का अभ्यास नहीं है, मेरा तो हाथ थक गया, आपका क्या हाल है? दादी ने कहा, मुझे तो कुछ नहीं हुआ, मेरा तो टोली बाँटने का अभ्यास है। देवता माना देने वाला। आपको भी देने का अभ्यास करना चाहिए।

इस प्रकार के कितने ही ईश्वरीय सेवा के अनुभव दादी जी के साथ के हैं जिनको अगर लिखें तो एक बड़ी किताब बन जाये। ईश्वरीय सेवा के कारोबार में सक्रिय भाग लेने का मुझे और मेरे परिवार को जो भी अवसर मिला, उसके लिए दादी जी का कुशल नेतृत्व और रूहानी पालना ही निमित्त है।

पच्चीस अगस्त, 2007 के दिन हम सब आबू में ही थे। हमें दादी कॉटेज से फोन आया और मैं और ऊषा बहन दादी कॉटेज पहुँचे और दादी जी को हम सबने अंतिम विदाई दी। अपने स्थूल नेत्रों से एक आत्मा को स्थूल शरीर छोड़ते देखने का यह मेरा पहला अनुभव था। इस प्रकार से दादी जी ने अंतिम श्वास तक मुझे नये-नये अनुभव कराकर अनुभवीमूर्त बनाया। दादी जी का आभार मानने के लिए मेरे और मेरे परिवार के पास कोई शब्द नहीं हैं और इसलिए ही इस पुस्तिका के अंदर इस लेख द्वारा मैं अपनी श्रद्धांजली दादी जी को अर्पित कर रहा हूँ।

✪